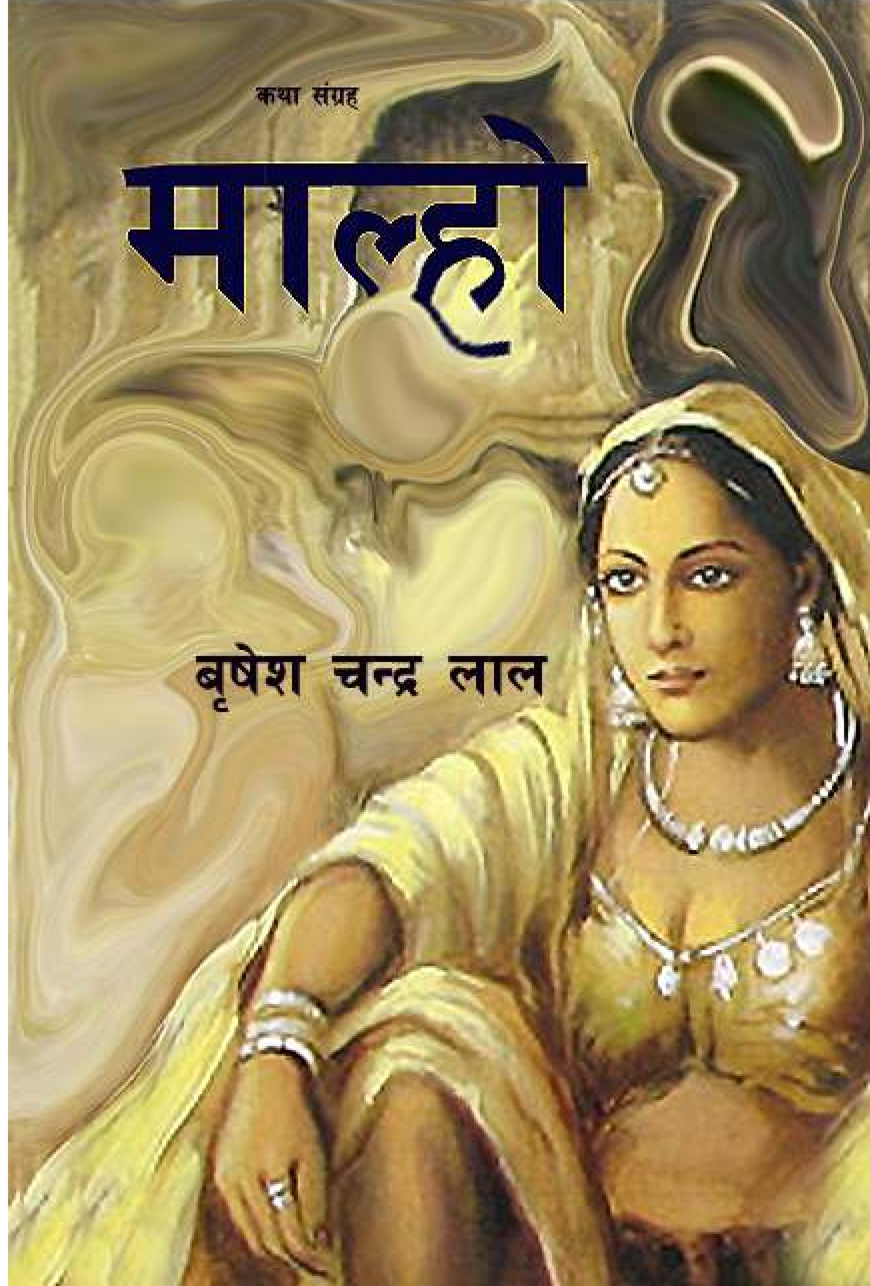


कथा संग्रह
माल्हो
बृषेश चन्द्र लाल

देपुराबाली काकी



टीवी खोलिते फीचर फिल्मबला चैनल लागि जाइत छैक । कखनो खोलू वहए चैनल पकड़ि लेत । धियापुतासभ अही चैनलकें डिफल्ट बना देने छैक । देखक मोन हएत समाचार मुदा आबय लागत मचकैत डाँड़सभक बनरखेलबला दृश्यसभ आ बेतुकक तुकबन्दीसभक कनफोड़ आवाज जकरा ईसभ अखनुकाक पपुलर गीत कहैत छैक । हमरा अहीसभलेल तामस भऽ जाइत अछि । हम डिफल्टमे न्यूज चैनल राखय चाहैत छिऐक मुदा ईसभ फेर-फेर कऽ फिल्मीये चैनल राखि दैत अछि । एकरासभपर हमर तामसक कारणेँ इएह होइत अछि । मुदा आइ हमरा तामस नहि भेल । 'तीसरी कसम' चलि रहल छलैक । हमरा बड्ड नीक लगैत अछि, वहीदा रहमान । ओकर लाल-लाल ठोर, ओकरस्नेहिल मुखाकृति हमरा सहजेँ आकर्षित कऽ लैत अछि । चुपचाप फिल्म देखय लगलहुँ । मोन भेल जे 'पान खाय सैंया हमारो .....' बला गीत देखि लैत छी तखन समाचार देखनाइ शुरु करब । .... तत्क्षण मोनमे एकगोट विचार जागल । हम टीवी बन्द कऽ देलिऐक आ कम्प्यूटर खोलि लेलहुँ । .... स्टार्ट होमय लागल छल हमर ओ पुरान कम्प्यूटर । छौंड़ासभ त कहैत अछि जे आब एकरा बदलू, नव लियऽ । जमाना कतसँ कत चलि गेलैक आब एहिसँ काज नहि चलत मुदा हमरा ई बड्ड प्रिय भऽ गेल अछि । हम एकरे अपग्रेड कऽ कऽ अहीसँ अपन काज लेबय चाहैत छी । एकरा छोड़क मनस्थिति एखनधरि नहि बनि सकल अछि । सभ एकरा बहुत स्लो कहैत अछि मुदा हमरा एखनधरि ई कहियो स्लो नहि लागल छल । .... आई ठीके स्लो बुझाइत अछि । शायद बड्ड धड़फड़ी लागि गेल अछि तैं। अगुता गेल छी ।

.... हँ, आब खुलि गेल । हम आगाँ बढ़ैत छी । फिल्मी साइट खोजि कऽ सर्च लगा दैत छिऐक । ....भेटि गेल । .... वहीदा रहमानक फोटो सेहो भेटि गेल । जेहन हम खोजैत छलहुँ तेहने । ग्रामीण परिवेशक । मोट सिन्दूर, बड़का ठोप, माथपर मोटका पाढ़िबला साड़ी, घनगर नमहर केशक उगल खोपा, आकर्षक वक्ष, लाल-लाल ठोर, गरमे पातर चानीकेर सिकड़ी, बाँहिमे बाजुबन्द आ नाकमे महीन सोनक ठोप । सभ किछु ओहने लगैत छल । हम ओकरा क्लीपमे कापी कऽ लैत छी आ फेर एडोब फोटो प्रोग्राम खोलि कऽ ओहिमे पेष्ट कऽ दैत छिऐक । .... खट्खट-खुट्खुट् कऽ कऽ मनमाफिक त नहियेँ मुदा संतोषप्रद चित्र तैयार कऽ लैत छी । ठीके संतोष जेना जागिकय भीतरसँ उठल होय, हम किछु कालधरि ओहि फोटोकेँ निहारैत रहि जाइत छी ।

.... हमर जीवनकेँ सहेजयबाली, दुलारयबाली, झाड़ि-पोछिकय पुचकारयबाली एकगोट इहो छथि । कतेक सुन्नरि रहथिन्ह ओ ! वहीदा रहमानसँ कनेक नामे रहल हयथिन्ह, तैं हमरा बुझाइत अछि वहीदोसँ कनेक बेशी आकर्षक अबस्से छलथिन्ह हएत । .... हमरा लगैत अछि जे हुनक अप्राप्य चित्र हमरा भेटि गेल अछि, तैं मोन होइत अछि एहि खुशीकेँ बाँटक चाही । कतय बाँटू, ककरा कहिऐक ? हमर भितुरका उमङ्गकेँ केओ नहि बुझि सकत ! अखन हमर हृदयमे उठैत स्मृतिक स्पन्दनकेँ के सुनि सकत ! हमर पत्नी ? ओ की जानय गेलखिन्ह ! हुनका बुझाबयलेल त पूरा खेड़हे सुनाबय पड़त । तखन कतहु कनेक बुझथिन्ह गऽ ! एनामे त हमर खुशी घटिये जायत । .... ई चित्र बुढ़ियासभकेँ देखाबय पड़तैक । ओकरोसभक स्मृति जागि उठतैक, तहियाकेर उमङ्ग, अपन समयकेर सुगन्ध कनेक काललेल अबस्से महँकि जयतैक ! हम मायकेँ सोर करैत छिऐक – " माय, माय गेऽऽऽ .... ! कतय छाँ ? .... कनेक्के एम्हर आ त ! "

" दुर्रर ! अहूँ छी कि नेऽ.... ?! " – अपनाकेँ सरिआ कऽ बैसबौंत लगेमे एनजीओक रिपोट लिखैति हमर पत्नी बड़बड़ा उठैति छथि – " मायकेँ बजोथिन्ह.... ! अपने उठिकय चलि जायब से नहि हएत ?! एक त चलय फिरयमे दिक्कति छन्हि आ तइमे जाढ़ महीना .... ! "

" देखियौ ने ! नहि अओतैक तऽ अपने जयबैक । " – हम कहलियन्हि ।

"से त अयबे करथिन्ह । दौगले .... दुनू ! " – मधु अतीव विश्वाससँ बजलीह । मायसभक स्नेह प्रायः हुनको सुसमा देने छलन्हि । ओ सोफाकेँ झारय लगलीह, मायसभक हेतु बैसयलेल जगह बनाबय लगलीह ।

" की कहलाँऽऽऽ....? बौआ ! किएक बजोलाहाँऽऽऽ...? " – माय दुआरिपर ठाढ़ि भऽ पुछलकि । हम उनटि कऽ देखैत छी त चाची आ माय दुनू ठाढ़ि अछि । मधु अपन फाइल बन्न करैति सोफा झारैति कहलखिन्ह – " अबथुन्ह ने ! बैसथुन्ह !! रातिमे एहन जाढ़मे हिनका बेटाकेँ नहि जानि कोन सुर चढ़ैत छन्हि से आब अपनेसँ पुछथुन्ह । " – ओ मुस्काइत मायसभक स्वागत कएलखिन्ह । माय आ चाची बैसि जाइति अछि । अखन ओसभ अत्यन्त प्रसन्न बुझाइति अछि । .... एहन समयमे हमसभ कि त पढ़ैत रहैत छी अथवा टीवीमे समाचार वा सिरियल देखैत रहैत छी । भिनसरे चाइये पिबिकय निकलय पड़ैत अछि । दिनमे कहियोकाल एहनेसन कहियो खायलेल अबैत हएबैक त हएबैक । प्रायः ओम्हरे खा लैत छिऐक । रातियोमे कहियो एतए त कहियो ओतय ! नहि चाहितहुँ करबद्धे जाहे पड़ैत छैक । मधुओक हाल इएह रहैत छन्हि । रहबो करैत छी त लिखय-पढ़क एतेक ने काज रहैत अछि अथवा ठेहिआयले एतेक ने रहैत छी जे टीवी देखब छोड़ि आर किछु करक मोन होइत ने रहैत छैक । आई मायसभकेँ बजोलियैक अछि ताहिसँ ओसभ निश्चिते अत्यन्त आनन्दित भेलि हएति ।

.... हम मायसभकेँ निहारय लगलहुँ । हमर मुखाकृतिपर सिनेह आ सम्मानसँ परिपूर्ण प्रसन्नताक भाव रहैक जकर तापक अनुभव ओकरोसभकेँ भऽ गेलैक तकर अनुभूति भेल । ओकरासभकेँ बुझाऽ गेलैक जे बौआ अबस्से किछु नीके बात सुनाओत – कोनो नव समाचार वा कतहुसँ आयल परिजनक कोनो नीक समाद- सन्देश कहत । हमर प्रसन्न आ अतिसय हर्षक मुद्रा ओकरासभकेँ पूर्णतया आश्वस्त कऽ देने छलैक । हर्षसँ निखरि ओहोसभ मुस्काइत टुकुर-टुकुर ताकय लागलि । हम चाचीक उत्सुकताकेँ एकबेर जोखक कोशिश कयलहुँ । ओकर आनन्दपूर्ण चमकीकेँ देखि लागल जे कनेक एहि उत्सुकताकेँ आओर बढ़ाइये देनाई नीक । .... कहयलेल ई हमर चाची अछि, मुदा एकरा बड़की माय कही त उत्तम । एकरा चाची किया कहय लगलिऐक तकर कोनो अर्थ नहि बुझाइत अछि । भऽ सकैछ जेना आजुक तथाकथित इलिट कहाबयबला लोकसभ अपन माय-बापकेँ पापा-मम्मी कहैत छथिन्ह तहिना तहिया हिन्दीक प्रभाव बेशी रहल हएतैक आ चाचीकेँ चाची कहाओल गेल हएतैक । आब बरोबरि लगैत रहैयऽ जे चाचीकेँ चाची नहि कहितिऐक । काकीयो नहि .... माय, बड़की माय वा आओर किछु कहितिऐक ! हमरासभकेँ लार-दुलार, झार-पोंछ सभ किछु एकरासँ भेटल अछि । एकर कोंख हमहीसभ छिऐक । हमर माय हमरासभकेँ जन्म सेहो देने अछि अन्यथा हमरासभमे आओर सभ किछु एकरे बेशी छैक । .... हमरा चुप्प देखि ओसभ बाजलि –" की बात छैक ? ... किछु कहैत नहि छाँ ! "

" हूँऽऽऽ , कहलियौक जे तोरासभकेँ एकगोट फोटो देखबैत छियौक । चिन्ह तऽऽ.... के छथिन्ह ! "– हम लगले प्रिन्ट कयल फोटो आगाँ बढ़ा देलिऐक ।

" रे, किया नहि चिन्हबैक ...? ई त देपुराबाली दीदी छथिन्ह ! कतय भेटलौक हुनकर फोटो ? ... ये दीदी ! देखथुन्ह तऽऽ नये बुझाइत छैक । ओ कोनो फोटो खिचोनहुँ रहथिन्ह ? हमसभ त कहियो नहि देखने रहियन्हि । " – हमर माय फोटो चाची दिसि बढ़बैति बाजलि । चाची फोटोकेँ उनटा-पुनटा कऽ देखलकि आ बाजलि – " छन्हि त देपुरेबाली दीदीक । ई त जुआनीयेक फोटो छैक । के देलकौक ? .... हुनका घरमे ककरो लग छलन्हि हएत आ ओहीसँ ई नवका बनबा लेने हएतैक । " तावत हमर पत्नी ओहि फोटोकेँ नीक जकाँ देखि नेने रहथिन्ह । ओ चिहुँकिकय बाजि उठलीह – " ईसभ कतय बौआय लगलखिन्ह ? हिनकर बेटा ...... । ई त वहीदा रहमानक फोटो छिऐक, वहीदा रहमानक ! "

" येइ सुहागिन ! ... कोन वैदा रैमानक ? " – हमर चाची पुछलकैकि ।

" हिरोइन ! फिल्मी हिरोइन !!" हमर पत्नी खिलखिलाकय हँसय लगलीह । चाची आ मायकेँ अपन भ्रमपर जेना किछु सञ्कोच भेल होइक मुदा चाची बाजलि – " हे, चाहे जकर होउक, मुदा लगैत छैक देपुरेबाली दीदीसन । सभ किछु ओहने छैक ।"

हमर पत्नी आश्चर्यमे पड़ि गेलीह । – " कोन देपुराबाली काकी ? ...एतेक सुन्नरि ?! के रहथिन्ह ? ...हम त कहियो चर्चो नहि सुनलहुँ ।"

" अहाँकोना सुनबैक ? एक त ई गामक बात, ... सेहो आहाँक बिआहसँ ३/४ बरस पहिनहि ओ मरि गेल रहथिन्ह । आहाँसभ गाम जयबो करैत छी त २/४ दिनलेल, ... गेलहुँ आ अयलहुँ । रहितथिन्ह त जरुरे देखने रहितीयन्हि । ओ त रहथिन्हे एहन जे छोड़क मोने नहि होइत .....! " – माय मधुकेँ सुनाबय लगलन्हि ।

" बेचारी ! जावत जिलखिन्ह, सभक सेवा कयलखिन्ह, केओ बाँकी नहि रहल !! " – चाची भावुक होइत बाजलि – " ककरा ओ अपन सिनेहसँ नहि सहेजखिन्ह ?! ...मुदा नारी जीवन आ सेहो भाई सनक पतिक भाग । बेचारी जीवनभरि दुखे भोगलन्हि । आ जखन सुखक बेर अयलन्हि त प्राणे निकलि गेलन्हि ! " – चाचीक आँखि नोरा गेल छलैक । मधु नारीक गप्प सुनितहिं लगमे सटिकय ठाढ़ भऽ गेलि छलीह ।

...... हँ, हमरो जेना किछु याद आबि जाय । देपुराबाली काकीक सौन्दर्यमे किछु भितरसँ कचोट सेहो नुकायल बुझाइक । नहि जानि तहिया हमरा कहियो कोनो अन्दाज भेल रहय वा नहि मुदा आब बुझाइत अछि जे वास्तवमे किछु अन्हारसन लगैक; जेना प्रज्वलित दीपे लग छाँह रहि गेल होइक । हुनकर दुख निश्चिते अत्यन्त गम्भीर प्रकृतिक रहल हयतन्हि तैं त सदैव चुप्पे जकाँ रहथिन्ह । केहनो तीत वा हलाहल कियक ने आगाँ पड़ि जाय ओ सोझे गटाक दऽ घोंटि जाथिन्ह । .... देखिऐक, हमरा दुलारय, पुचकारय, झारय-पोछय काल कतबो केओ किछुओ किआ ने केहनो कहिनी कहि दितन्हि ओ किछु नहि बजितथिन्ह । घुमिकय देखबो नहि करथिन्ह । पहिने ओ हमर चित बुझा देथि, हँसा देथि आ एहिसँ अपने आनन्दित भऽ जाथि आ तकर बाद फेर ओ पूर्ववत् निर्विकार भावेँ रोबोट जकाँ अपन काजमे मोन लगाकय जुटि जाथि । सभकेँ बुझल रहैक हमर कानक वा रुसक भनकीयो हुनका लग नहि पहुँचक चाही । .... निर्विकार गम्भीरता हुनकर मनुहारपर स्थायीत्वे पाबि नेने छल । प्राय ई हुनकर विशेषता बनि गेल छलैक । हमरा त बुझाइत अछि हुनकर सौन्दर्यकेँ ई अबस्से नव रुप प्रदान कएने हएत ।

" बेचारी, पता नहि पूर्व जन्मक कोन पाप वा श्रापक फल भोगलन्हि ! रहलखिन्ह मरय काल धरि सोहागिन, सौभाग्यशालिनी मुदा सम्पूर्ण जीवन बैधव्यपूर्ण रहलन्हि । " हमर चाची अपन भीतरक हृदयसँ उठल ममोड़ि उगलैति बाजलि ।

" ई त सभ किछुकेँ पूर्व जन्मक दोष कहि दैत छथिन्ह ! " – हमर माय देपुराबाली काकीक प्रति उठल सहानुभूतिक कारणेँ आक्रोशित भऽ खौंझाइत चाचीपर बाजलि – " ओहन सुशील आ सहनशील नारी कतहु भेटतन्हि ? घरबला होइतो विधवा जकाँ जीवन बितायब, सती सावित्री जकाँ पतिक सेवा करब ! ... मुदा भाई कहियो बजबो नहि कयलखिन्ह । पूर्व जन्मक पापक कारण रहैक ? झूट्ठे ! .... भाईकेँ पाप नहि लगलन्हि हएत ? आब अगिला जनममे भाई अपन पापक फल भोगताह । त की दीदी फेरो अगिलो जनममे अहिना असगरि रहथिन्ह ? " – माय तमतमा गेलि छलि । ओकरमुखाकृति रक्तक तीब्र प्रवाहक कारणेँ लाल भऽ गेल छलैक ।

चाची मायक तर्कसँ डेरा गेलि –" नहि ! नहि !! ... एना नहि कही ! एहि जनमक विकट तपस्या हुनका जरुरे नीक फल देतन्हि । जानकीजी अबस्से देपुराबाली दीदीकेँ देखथिन्ह, ... आ देखथुन्ह ! " ओ अपने बाल-विधवा अछि । अनिवार्य वैधव्यक शिकार नारी अछि ओ । सोहागिन रहितहुँ वैधव्य भोगनाई कतेक कठीन आ त्रासदीपूर्ण छल हएत तकर अन्दाज ओकरेटा भऽ सकैत छैक । ओ आगाँ बाजलि – " अहू जनममे त दुहू सजाय भोगलन्हि ने ! भाईयोकेँ कोनो श्राप वा पापक फल भोगक छलन्हि हएत से भोगलन्हि । नहि त देपुराबाली दीदी सन कनियाँ आ ..... ! "

" दुर्रर ... ! ओहो कोनो मनुख रहथिन्ह ? हुनका कोनो फरक पड़लन्हि ! रीगाबालीऽऽ ..... । " – ओ अपनाकेँ बीच्चेमे रोकि लेलकि ।

" तैयो छिछिआय त पड़लन्हि की ने ! " चाची कनेक धीरसँ बजैति मायकेँ शान्त करक प्रयत्न कयलकि ।

मधुक उत्सुकता बढ़ि गेलि रहन्हि – " तखन की भेलैक चाची ? ... ई रीगाबाली के रहथिन्ह ? ... माय, कहथुन्ह ने !" – हमर पत्नीक नारी सुलभ स्वभाव पराकाष्ठापर पहुँचि गेल छलन्हि । माय आ चाची हमरा लग आओर किछु बाजय नहि चाहलि तैं फोटोकेँ टेबुलपर धरैति ओसभ उठि गेलि – " बैस तोँसभ । हमरा डाँड़ दुखाइयऽ ... । पड़य जाइत छी । " – चाची स्नेहपूर्वक औपचारिकता पुड़बैति बाजलि आ दुनू उठि गेलि । मधु ओकरासभक पछोड़ धऽ लेलखिन्ह ।

× × ×

भोजनक पश्चात् अपन कक्षमे प्रवेश कयलहुँ त एक बेर फेर ओ फोटो हमर बाल स्मृतिकेँ नीकसँ झकझोड़ि देलक । देपुराबाली काकी हमरा बड्ड मानैत रहथि । आङ्गनमे प्रवेश करितहि ओ " बौआ ! बौआ !! " कऽ कऽ सोर करथि । हमरालेल हुनका हाथमे किछु ने किछु रहिते रहन्हि । कहियो तिलकोरक तरुआ त कहियो बगिया अथवा सुखल बड़ी । सभ दिन ओ भिनसरे कऽ अबथिन्ह । तहिया नहि बुझिऐक मुदा आब खूब बुझैत छिऐक – अघोषित रुपेँ ओ लगभग हमरा ओतय काज करथिन्ह । हमर दाईक अत्यन्त प्रिय रहथिन्ह आ दाई हुनका सभ दिन किछु ने किछु दैत रहन्हि । चाऊर- दालि, तीमन-तरकारी आ नहि जानि की-की ? ओ किछु अपना मोनसँ बजबो करथिन्ह त दाईये लग । रौद कनेक गरमा जाइक, सभ केओ जलखै कऽ लैक तखन ओ अपन घर घुरथिन्ह । सामान्यतया मिसरी काका बाबुअेसभ संगे जलखै करथिन्ह । कहियो-कहियो देपुराबाली काकीकेँ दाई ,चाची-माय लग भुज्जाभड़ी फँकैत देखिऐक । हुनका घुरक बेर होइते दाई एक बेर भड़ार आ भानस घरमे पैसति रहय । घुरयसँ पहिने काकीयो अबस्से दाईसँ भेँट कैये लेथिन्ह । घुरय काल ओ सदैव डेग झटकारैते बहराथिन्ह । .... दुपहरियामे ओ फेर अबथिन्ह आ मौगीसभक गप्प-सप्पमे बैसि जाथिन्ह । हुनक सहभागिता औपचारिक मात्रहि होइत छलन्हि किएक त ओ किनसाइते किछु बजथिन्ह । हमरा बुझाइत अछि हुनकर सहभागिता महज मौगीसभक संग पुरयलेल होइत छलन्हि भाग लेमयलेल नहि । .... हमरासभ धियापुतामे दलानसँ आङ्गनतकक सभ गप्प सुनिऐक । खेलैत-दौगैत कोनो-कोनो गप्प जे रुचिकर लागय तकरा ठेकानिऐक । बड्ड गुदगुदीबला कोनो गप्प उठितैक त जतय सभ खिलखिलाइत देपुराबाली काकी गहींर उछ्वास लैत मुस्का धरि देथिन्ह । .... मौगीसभमे ओ रहथिन्ह बड्ड लोकप्रिय । कहियो ककरो कोनो किसिमक औडर वा निर्देश नहि देमयबाली ओ वास्तवमे अदृश्य रुपेँ सभक नेतृ रहथिन्ह । मौगीसभ सामान्यतया लोकसभक खिझाँउसे सुनैत-सुनबैत अछि, मुदा देपुराबाली काकीक खिझाँउस कहियो नहि सुनलहुँ । हुनकासँ सम्बन्धित कोनो गप्प ओहि सङ्गोरिमे नहि होइक । कारण चाहे रहल होउक मुदा ई एकटा अघोषित परिपाटीये बनि गेल रहैक ।

हँऽऽ... एकटा बात रहैक – मिसरी काका दिनोमे आ रातियोखन कऽ रामेननक दलानमे डेरा खसोने रहथिन्ह । मिसरी काका ...... ओ नेना भुटकाकेँ खूब मिसरी बँटथिन्ह तैं हमसभ केओ हुनका मिसरी काका कहियन्हि । भिनसरे टोलक सभ नेना भुटका आँखि मिरते हुनका लग रामननक दलानपर जमा भऽ जाइक । ओ सभकेँ डाँटि कऽ जोरसँ पुछथिन्ह –"रे छौंड़ासभ ! मुँह धोइत गेलाँ ? ... नहि तोँ मुँह नहि धोएने छह ! दतमनि तोड़िकय पहिने मुँह धोएने आबह ।" हुनकर बातमे केओ जीट्ट नहि करय चुपचाप मुँह धोअय ससरि जाय । ओ ताधरि ईसभ टालमटोर करैत रहथिन्ह जाधरि हम नहि पहुँचि जइयन्हि आ दुरखाक भूरसँ देपुराकाली काकी ताकय नहि लगथिन्ह । काकी हमरा जल्दी-जल्दी मुँह-कान धो कऽ दुरखासँ ठेलि देथिन्ह आ भूर लग जाऽ कऽ निहारय लगथिन्ह । हमर पहुँचनाई आ हुनकर निहारनाई

एक्के बेर होइक । मिसरी काका तुरत मिसरी बाँटय लगथिन्ह मुदा नजरि रहैत रहन्हि दुरखाक भूरे दिसि । एम्हर ओहि आङ्गनमे रीगाबाली कचकचाय लगैक –" ई धियापुतासभ कतय ने कतयसँ भोरे आबि कऽ काँय-काँय करय लगैत अछि । ... दोसर कोनो काजो छैक कि नहि ? " ओकर ठेंठक खरखराहटि सुनिते मिसरी काका चट् अपन कार्यक्रमक समापन कऽ देथिन्ह – " जाइ जाह ! आब फेरो काल्हि अबिहह, दाँत एकदम चमकाकय ... । " – आ ओ भीतर दलानमे पैसि जाथि । रीगाबालीक ठेंठ बन्द भऽ जाइक आ देपुराबाली काकी दुरखासँ आङ्गनमे पैसि जाथिन्ह । .... हमरा मोनमे रङ्गविरङ्गक बातसभ घुमय लागल । हुनकासभक व्यवहारक कारणक किछु-किछु अन्दाज होमय लागल ।

.... हमरा दुनू बड्ड मानथि । मिसरी काकाक हमहुँ बड्ड धाख मानियन्हि । हमर माय आ कहियो काल भैयासभ डेराबथि – " हेऽऽ ... कहि देबन्हि हम मिसरी काकाकेँ ! ....कहि देबन्हि जे मिसरी नहि दियौक एकरा । " हम कानय लगिऐक । देपुराकाली काकी दौड़ले अबथिन्ह आ अपन आँचरिसँ हमर नोर पोछय लगथिन्ह । चाहे किछु भऽ जाऊक, एहि बीचमे फोरन जड़िकय सौंसे दौंक किएक ने पसरि जाऊक ओ अपन डाँड़मे हमर माथ नुका लेथिन्ह आ पीठपर हाथ फेरय लगथिन्ह । ओ साधिकार हमरा बुझबथि – " के ने देत आहाँकेँ मिसरी ! अबस्से देत, देमहि पड़तैक । " हम पूर्ण आश्वस्त भऽ जाइ । मिसरी काका कहियो-कहियो ककरो-ककरो मिसरी नहियो देथिन्ह मुदा हमरा सभ दिन भेटबे कयल । दू बेर कऽ शुरुओमे आ अन्तोमे । ईहो एकगोट अघोषित मुदा सर्वमान्य परिपाटी रहैक । सभ एकरा स्वीकारि नेने रहय – एकर विकल्प नहि छैक से बूझिकय मजबूरीमे । देपुराबाली काकी आ मिसरी काका दुनूक अतीव सिनेहक पात्र हम किएक रही ? प्रायः हमर जीवनक ई एकगोट महत्वपूर्ण प्रश्न थिक । हुनकासभकेँ धियापुता नहि रहन्हि आ ओसभ हमरा अपन नेना बुझि नेने रहथि ? ...

.....किछु गड़बड़ी रहन्हि हुनका दुनूमे । प्रायः खटपट रहन्हि । दुनूकेँ बतिआइत हम कहियो नहि देखलियन्हि । कय दिन संगहि एक्के थारीमे भोजन कयने हएब । मिसरी काका अबथिन्ह, बैसथिन्ह, आगूमे थारी अबन्हि बीच-बीचमे परसन पड़ैत रहन्हि, ओ चुपचाप खाथिन्ह खाली हमरासँ बजथिन्ह – बेशी भऽ जाइन्ह त हाथसँ रोकि देथिन्ह । गरमीक समयमे काकी निरन्तर पंखा होंकैति रहथिन्ह, पानि घटैन्हि त भरि-भरि देथिन्ह – मुदा कोनो गप्प नहि होइन्ह । भोजन समाप्त होइते काका उनटे पयरे रामननक दलानपर फिरि जाथिन्ह । ने कोनो काज ने उपक्रम । खेतो-पथारक देखरेख कमसँकम हम करैत कहियो नहि देखलियन्हि । हँऽऽऽ... घुमथिन्ह बड्ड ! ककरो कतहु किएक नहि जायक होउक, संग पुरयलेल सदैव तैयार भऽ जाथिन्ह । तीर्थ, मेला, कर-कुटमैती जतय लऽ जैयौन्ह तुरत तैयार । घुरिकय अबथिन्ह त हमरासभक लेल मिसरीक पोटरी, काकीलेल किछु आ ओहने सन किछु रीगाबाली हेतु । रीगाबाली काकाक सनेसकेँ लोककेँ जाहिसँ बुझा जाऊक तेना प्रदर्शित करय; प्रदर्शित त काकीयो करथिन्ह मुदा प्रायः एतबा देखाबयलेल जे ओ अस्वीकार नहि कयलखिन्ह अछि । रीगाकालीक प्रदर्शन हुनकर मोनकेँ खिन्न कऽ दैत रहन्हि ।

.... हमरा बुझाइत अछि हम प्रायः दुनूक सिनेहक मिलन-बिन्दु रही । मिसरी काकाक बेशी सिनेह हमरा एहि दुआरे भेटैत आयल कारण हम देपुराबाली काकीक दुलारु रही । हमरा दुलारि ओ काकीकेँ प्रसन्न करय चाहथिन्ह, अदृश्य रुपेँ काकीकेँ दुलारथिन्ह अथवा सम्मान करथिन्ह । एम्हरो भऽ सकैछ मिसरी काकाक प्रिय भातिजप्रति विशेष दुलारक कारण काकाप्रतिक हुनकर अपन राग वा संवेगक प्रदर्शन छल हएतन्हि । .... ई निष्कर्ष हमरा गौरवसँ भरि दैत अछि ।

ओहि कोठरीमे माय, चाची आ मधुक गप्प भऽ रहल छन्हि । प्रायः ओसभ देपुरबाली काकीक सन्दर्भमे बतिया रहलि छथि । मधु त आई सिरियल देखब सेहो बिसरि गेलि छथि । टीवी हमहुँ नहि खोललहुँ खोलक मोने नहि भेल । देपुराबाली काकी, मिसरी काका आ रीगाबालीक त्रिकोणात्मक परिचर्चा हमरो सुनक मोन होइत अछि । हम ओहि कोठरीमे जाय चाहैत छी मुदा नहि जाइत छी । हमरा गेलासँ परिचर्चामे बिघ्न पड़ि सकैत छैक । तैं मधुसँ पुछि लेबन्हि, सभ किछु बुझयमे आबि जायत ।

..... हुनका आबयमे देरी भेलन्हि । उत्सुकताक कारणेँ निन्न होमक सम्भावना छल नहि तैं अखबार उठाकय भितुरका पन्नाक लेखसभ पढ़यक कोशिश करय लगलहुँ मुदा मोन लागय तखन ने । देपुरबाली काकीक सुखल लाल ठोरक रहस्य जानक उत्कण्ठा हमरा छटपटा देने छल । मुदा प्रतीक्षा त करहिं पड़त । नीकसँ बुझयलेल प्रतीक्षे कयनाई नीक । .... अन्ततः ओ अयलीह । मोन खिन्न सन बुझायल । अबिते पुछलियन्हि –" की ? देपुराबाली काकी आ मिसरी काकाक सम्बन्धमे माय-चाची कीसभ बतओलकि ! "

" की बतोलन्हि ? नारीपर पुरुषक घोर अन्यायक वृत्तान्त सुनोलन्हि ! ओ त देपुरेबाली काकी रहथिन्ह जे बर्दाश्त कयलखिन्ह । .... सम्पूर्ण जीवनधरि सहिते रहि गेलखिन्ह । दोसर रहैति त ....! " – ओ आक्रोशमे छलीह । बुझल त नहि रहय मुदा काकीपर अन्याय भेल हएतन्हि तकर अन्दाज रहय तैं हम आई बहसमे नहि उतरलहुँ , नहुँएसँ पुछलियन्हि –" केहन अन्याय ? ... के कयने रहन्हि अन्याय ? "

ओ तमसाइत बजलीह –" केहन अन्याय ? .... घोर अन्याय ! पाप !! पुरुषसभ सभ दिनसँ जे करैत आयल अछि । पुंसत्वक अपन अहंकेर बलिवेदीपर स्त्रीक सिनेह आ स्निग्धताकेँ घेंट काटि चढ़बैत आयल अछि, नारीसभकेँ जड़बैत आयल अछि । सहए अन्याय ! .... आ के कयने रहथिन्ह हुनके पुरुष आहाँक मिसरी काका ! गामक लोकप्रिय भाई !! " हम सुनय चाहैत रही तैं एकदम चुप्प रहलहुँ । देपुराबाली काकीक सन्दर्भमे बहस करी से एकोरत्ती इच्छा नहि रहय । हम स्थिरसँ कहलियन्हि –" अबेर भऽ गेल । आब सुती । ओना हमरा इच्छा अछि जे हम देपुराबाली काकीक बारेमे सुनी । .... अहाँशान्तिसँ विस्तारपूर्वक सुनाबी तखन ! " ओ स्थिर भऽ गेलीह आ किछु शान्त भऽ बजलीह –" एहनो कतहु होय ! जिनगीभरि नहि बाजब, एकठाम नहि सुतब ! आओरसभ किछु सामान्य .... लोककेँ किछु कहक मौका नहि देब मुदा सभ दिन रुसले रहब । .... सभ दिन जीवनभरि ! "

हमरा शान्त आ गम्भीर देखि ओ विस्तारसँ सुनाबय लगलीह –" मिसरी काका, देपुराबाली काकी आ रीगाबालीक बारेमे आर किछु त अहाँजनिते छिऐक मुदा मायसभ जे कहलन्हि तकर सारांश सुना रहलि छी । काकाकेँ लोक भाई कहन्हि – बड्ड मिलनसार, मखोलिया, सभक काजमे सहभागी बनक सोभाव, चञ्चल, कसल देह आ मजबूत काँत-छाँट हुनक व्यक्तित्वक रेखाचित्र बुझू । सभ किछुसँ परिपूर्ण रहथिन्ह ओ तैं गामक नीक-नकि आ सुन्नरिसभकेँ सहजे आकर्षित कऽ लेथिन्ह । बहुतो हुनकापर डोर चलओलकि मुदा सफलता भेटलन्हि रीगाबालीकेँ । शुरुमे त काका कहाँदोन आलटाल कयलखिन्ह मुदा रामननक दलानक पछोरिमे रीगाबालीक आङ्गन आ ओही दलानक एक गोट सन्दूकपर काकाक बिछाओन सम्पर्कक मूल कारण बनल । रीगोबाली नाम आ नीक गढ़निकेर गोरि माउग रहथिन्ह । पति कहाँदोन भुट्ट रहथिन्ह आ आसाममे पण्डितक काज करथिन्ह । सालमे एकाध बेर दू चारि दिन वास्ते काजे-तिहारमे अबथिन्ह ।"

" हूँऽऽऽ... त मिसरी काका आ देपुराबाली काकीक बीचमे ई सम्स्या रहन्हि ! " – हम ओछाओनपर बैसैत बजलहुँ ।

" समस्ये नहि .... महासमस्या ! ई गप्प कतहु नुकायल रहय ? एक कान दू कान मैदान भऽ गेल । बाबासभ बुझि गेलखिन्ह । सभ केओ विचारि कऽ हुनकर विवाहक निर्णय लऽ लेलन्हि । तहिया काकीक उमेर १४/१५ बर्षक रहल हएतन्हि । बच्चे रहथिन्ह, किछु बुझथिन्ह नहि आ ओम्हर रीगाबाली सभ किछु बुझने । ओ काककेँ आओर नीकसँ फँसा लेलकि । अपन फाँसमे कसिआ कऽ जकड़ि धएलकि । " – मधु धाराप्रवाह कहिते छलीह कि बीचमे हम टोकि देलियन्हि – " विवाहक बाद त काका घरमे सुतय लगलखिन्ह हएत ने ! "

" से कहाँ भलैक ? से भऽ जइतैक तखन त समस्ये समाप्त भऽ जाइत ने ! .... तकर बादो काकाक आदत नहि सुधरलन्हि । सभ दिन खाऽ पीऽ कऽ ओ रामननेक दलानपर सुतैत रहि गेलखिन्ह । भीतरे-भीतर बबाल मचि गेल । मुदा मिसरी काका खाली सभक सुनि लेथिन्ह, किछु बजथिन्ह नहि आ करथिन्ह ओतबा । काकी काकाकेँ कहियो किछु नहि कहलखिन्ह मुदा एक दिन दाई कहाँदोन खूब झगड़ा कयलखिन्ह । काकाकेँ लगलन्हि जे काकीये दाई लग बाजलि रहथिन्ह । बस ओ प्रण कऽ लेलन्हि जे कहियो देपुराबालीसँ नहि

बाजब । कहियो घरमे नहि सुतब । लोक बड्ड बुझाबक कोशिश कयलकन्हि मुदा ओ सुनलखिन्ह नहि । .... इएह क्रम जीनगीभरि चलिते रहल । काकी प्रतीक्षा करिते रहि गेलखिन्ह । बादमे रीगाबालीसँ काकाक सम्बन्धो खराब भऽ गेलन्हि तथापि ई क्रम टुटल नहि । निरपराधि काकीक प्रतीक्षाक घड़ी नहि बीतल । .... पुरुषसभ होइते एहने अछि ! फुसियेक प्रणपर अँड़ल रहत । सदैव एकगोट स्त्रीक खातिर दोसरपर घोर अन्याय करत । भिष्म जकाँ अधलाह प्रतिज्ञा कऽ लेत आ तकर बाद वचनकेर ठेक कानमे ठोकि लेत । " मधुक स्वरमे आक्रोश छल ।

"फेर की भेलैक ? काकी मनाबक कोशिश जारी नहि रखलखिन्ह ? " हम नहुँअेसँ पुछलियन्हि ।

" हँऽऽऽ ... फुसिये ला रुसि रहू आ माउग लागल रहय मनाबयमे ... ! किया मनैबतथिन्ह ? हुनकर की दोष रहन्हि जे मनैबतथिन्ह ? " – मधु तमसा गेलि छलीह । हम कनेक काललेल चुप्पी साधि लेलहुँ । आगाँ पुछक हिम्मत नहि भेल, बिना सेतिये झगड़ा भऽ जाइत । ओहुना हमरा देपुराबाली काकीक दुख सुनि मोन दुखा गेल रहय । मुदा उत्सुकतो त तीब्रे छल तैं किछु कालक बाद मनौतीयेक स्वरैं पुछलियन्हि –" त अन्तमे की भेलैक ? दुनू आदमी जीद्दपर अँड़ल रहि गेलखिन्ह ?"

" मौगी एतेक कठोर भऽ सकैयऽऽऽ ...! देपुराबाली काकी अनवरत् सेवा करैति रहलखिन्ह । काका अबथिन्ह, खाथिन्ह आ फेर रामननक दलानपर चलि जाथिन्ह । कोनो काज धन्धा नहि । ने खेत-पथार कहियो देखलखिन्ह ने त कहियो अड्डे-अदालत गेलखिन्ह । शुरुमे सभ आवश्यकताक पूर्ति खेत बेचि-बेचि करथिन्ह आ बादमे वहय .... ! तैयो देपुराबाली काकी सभ किछु पुरबैति रहलखिन्ह । गामेमे सभसँ साफ नील कयल धोती-कमीज, अभावोमे लुड़िसँ बनाओल नीक निकुट भोजन काकाक हेतु तैयार रखथिन्ह । " – मधु भावुक भऽ सुनबैति चलि गेलीह – " काका कहाँदोन काकीकेँ बड्ड प्रेमो करथिन्ह । जखन काकी बिमार पड़थिन्ह त ओ भरि-भरि राति नीच्चामे चटाई बिछाकय बैसले रहि जाथिन्ह । ओना काकी जाधरि अशक्त नहि भऽ जाथिन्ह ककरो पतो नहि लागय देथिन्ह जे ओ बिमार छथि कारण हुनके श्रमसँ ने घर चलन्हि ! .... मायसभ कहैत छलखिन्ह जे काकाक इएह व्यवहार देपुराबाली काकीमे आशाक ज्योति जड़ोने रहल, हुनकर जीवनकेँ जिओने रहल । .... लगभग पचास बरखक उमेरमे आबिकय एक दिन खायक कालमे मिसरी काका अनायासे भोकासी पाड़िकय कानय लगलखिन्ह । काकी डेराकय ' की भेल ? की भेल ? ' कहैत चिचियाइत कानय लगलखिन्ह । ओहि दिन काकाकेँ पता नहि की भेल रहन्हि बड्ड कनलखिन्ह, काकीसँ माफी मँगलखिन्ह आ कहलखिन्ह जे आब ओ किन्नहु कहियो घर नहि छोड़ताह ।"

"तखन फेर की भेल ? " – हम उत्साहित होइत पुछलियन्हि ।

" काकीक खुशीक ओरेपोर नहि रहलन्हि । ओ बताहि जकाँ करय लगलखिन्ह । काकाकेँ घरमे बैसाकय की घर की आङ्गन की टोल पूरा गाममे घरेघर जाऽ जाऽ अपन खुशीक खबरि कहि अयलखिन्ह । घरघरमे हिनके सभक चर्च रहन्हि । रातिमे नीक-निकुट भानस कयलन्हि, काकाकेँ खुआ अपने खयलन्हि । मुदा ..... ! " – मधुक गर भारी भऽ गेलन्हि ।

" मुदा की ? .... की भेलैक ? " – हम अगुताकय पुछलियन्हि ।

" काकी खुशीसँ बताहि रहथिन्ह । खाऽ कऽ सुतय गेलखिन्ह त छातीमे एकहि बेर जोड़सँ कहाँदोन दर्द उठलन्हि, पसीनासँ नहा गेलखिन्ह आ काकाकेँ घरमे राखि मुस्की दैति सदाक हेतु विदा भऽ गेलखिन्ह । " – मधुकेँ कना गेलन्हि –" .... काका सेहो काकीक आज्ञाकेँ पूरा पालन कयलन्हि, तहियासँ घर पकड़नहि रहि गेलखिन्ह आ ठीक दू मासक बाद ओहो विदा भऽ गेलखिन्ह । "

हम मधुक बहैत नोर पोछय लगलहुँ । आँखिसँ नोरक धार हमरो फुटि गेल छल, बुझाइत छल जेना हृदय फाटि जायत ।



बलिदानी

कार्यक्रमक स्थलतक पहुँचयसँ पहिने ओ एक बेर दूरेसँ माथ उठाकय देखलक । कार्यक्रम शुरु भऽ गेल छलैक । एहि बीचमे राजनीतिक कार्यक्रमसभक शुरुआत आ समापन समयपर होमय लागल छैक । एक गोट खास परिवर्त्तन आबि गेल अछि । एकाएक ई परिवर्त्तन कतहुसँ जेना बलात् नियोजित रुपेँ कार्यान्वित कऽ देल गेल होइक तेना सभतरि लागू सेहो भऽ गेल अछि । सभतरि आब समयपर कार्यक्रम शुरु भऽ जाइत छैक । बेशीसँ बेशी १०/१५ मिनट आगाँ-पाछाँ । तड़क्-भडक, सर-सजावट आब न्यून रहैत अछि । बरोबेवस्थापर आब ततेक गम्भीरता नहि देल जाइत छैक । उपस्थित सहभागीसभक बैसक सामान्य व्यवस्था रहैत छन्हि आ कोनो कमी बुझाइत छन्हि त आब ओसभ अपने अपन बैसक इन्तजाम कहुना कऽ कऽ लैत छथि; व्यववस्थापन पक्षपर ओतेक टोन-टिपणि नहि कसैत छथि । कार्यक्रमहेतु ककरो विशेष प्रतीक्षा सेहो आब प्रायसः नहिये होइत छन्हि । ने केओ एकरा महत्व दैत अछि आ ने केओ आब एहि बातकेँ सहयलेल तैयार रहैत अछि । जहियासँ देशमे प्रतिगमनक दौर शुरु भेलैक अछि आयोजकलोकनि हस्तक्षेपक डरसँ त जे से मुदा सहभागीक कमीक डरसँ बेशी डेराअयल रहैत छथि । सहभागीयोसभ चट मुहँ देखाय भागयहेतु जेना बहन्नाक निरन्तर खोजीमे रहथि – कनेको देरी भेल कि उठय लगताह । उपस्थित उपस्थितियोमेसँ कहुँ आओर कम ने भऽ जाइक तैं फटाफट कार्यक्रमसभक शुरुआत कऽ देल जाइत अछि आ एकदम समयसँ किछु पहिनहिं समापनो भऽ जाइत छैक । तैं अपनाकेँ बिशिष्ट बुझयबलासभकेँ सेहो समयपर बेशीकाल समयसँ किछु पहिनहिं उपस्थित होमक आदति बनल जाऽ रहल छन्हि । .... भरि कार्यक्रम लोक सगबगाइत रहैत अछि, चकुआइत रहैत अछि आ एम्हर-ओम्हर तकैत रहैत अछि । हरेक नवागन्तुक आ प्रस्थानीपर सभक नजरि पड़ैत रहैत छन्हि जे के अयलाह आ कखन घुरि गेलाह अथवा अन्तधरि रहलाह । लोक इहो देखैत रहैत अछि जे कतहु किछु असामान्य त नहि भऽ रहल छैक । कानो हस्तक्षेपक हावा त नहि अछि !

..... ओ स्थिरसँ खाली स्थान देखि बैसि जाइत अछि । ओकर उपस्थितिसँ सभक मनुहार चमकि उठलैक अछि । इहो एहि बीचमे आयल एक गोट परिवर्त्तने थिकैक । पहिने जखन ओ कार्यक्रमसभमे पहुँचैति छल त अनायास बुझाइत छलैक जेना सम्पूर्ण कार्यक्रम स्थलक उपरसँ एक गोट कारी मेघ रौदकेँ छेकैत छाँह बना देने होइक । ओ कहियो अपन पहुँचबसँ बरिष्ठ आ खास कऽ कऽ समकक्षीसभकेँ प्रसन्न नहि पओलक । दुआ-सलामसँ लऽ कऽ बैसक जोगार होइततक औपचारिकतेक निर्बाह होइत छलैक । मुस्कीयो नाटकीय आ भीतरसँ कुढ़लसन होइत छल आ फेर तकर कनेके काल बादसँ चहलपहल शुरु भऽ जाइत छलैक – कटाकटौअलक ! आसनग्रहण, सम्बोधन आ मनतव्य कतय कोना ककरा छाटँल जाय तकर योजना-निर्माणमे आयोजक आ आयोजकक इष्टदेव जीजानसँ भिड़ि जाइत छलखिन्ह । २०४६ सालक जनआन्दोलनक सफलताक बाद कार्यक्रमसभक सफलतासँ आयोजक कम्मे मतलब रखैत छलाह; विशेष ध्यान ककरो प्रोजेक्शन अथवा डिजेक्शनेटामे संकेन्द्रित रहैत छलन्हि । तैं कार्यक्रमक समाप्तिपर उपलब्धि-अनुपलब्धिसँ बेशी ककरो मान-अपमानक चर्चा बेश होइत छल । ओकरा अखनो याद छैक, २०४६ साल चैत्र २७ गते बरबिघ्घामे विजय जुलुसक बाद विशाल आमसभाक आयोजन भेल रहैक । ओसभ सिन्धुलीसँ रिहा भऽ कऽ आयल छल । पञ्चायती शासकसभ ओकरासभकेँ मारहीलेल जलेश्वरसँ ओम्हर लऽ गेल रहैक । ओ त किशोरीजीक कृपा जे कहुना कऽ बाँचि गेल । .... लोक देखयलेल अपस्याँत रहैक मुदा आन्दोलनक स्वयंघोषित नायकमण्डली आन्दोलनक दरमिआन गुप्तचरी करयबलासभकेँ फूलमालासँ महिमा-मण्डित करैत साँझुक बन्दोबस्तीक स्थायी व्यवस्थापनमे लागि गेल छलाह । भरि आन्दोलन सम्पर्क सूत्र, प्रचार-प्रसार, आन्दोलनकारीक न्यायिक सुरक्षा आ आवश्यकता पड़लापर निर्देशनक भार ग्रहण कयनिहार तथा खर्चक ब्योंत लगोहिार सभक

प्रिय वकील साहेब, सिंहजी आ प्रोफेसर साहेबसभ तखनेसँ कतिया देल गेल छलाह । जातिवादी संकीर्णता हावी होमय लागल छलैक । ओकरा बाजय नहि देल गेलैक आ तकरबाद लगातार ई दुष्प्रयास एकटा क्रम बनि गेलैक । पार्टीक जेनुइन फोर्स अकबकाकय कातेमे ठाढ़ भेल रहि गेल आ पूरा पार्टी चैतेसभसँ कोंचा गेलैक ।

.... अखन ठाकुरजी बाजि रहल छलाह । शहीद सम्राटक अन्तिम क्षणक संगी भेलाक कारणेँ ठाकुरजीक संस्मरणपर ओ गम्भीर भऽ गेल । ठाकुरजी फाँसीसँ २/४ राति पहिनुका अवधिकेँ संस्मरणहेतु चुनने रहथि –"जेलक साथीसभ फासीसँ ३/४ दिन पहिने गोलघरक ओहि कालकोठरमि पल्दारसभक माध्यमसँ गीता आ रामायण पठा देने रहथिन्ह । अखबारसभ बन्न भऽ गेल छल । अहीसँ शहीद सम्राट दुर्गाक नन्द बुझि गेल रहथिन्ह जे आब जीनगी किछुये क्षणक रहि गेल अछि । ओ अपन सम्पूर्ण ध्यान गीता आ रामायणक पाठमे लगा देने रहथि । पूर्णतया निःशब्द भऽ निस्पृह भावेँ अपनाकेँ बलिदानहेतु प्रस्तुत कऽ देने रहथि !!" ठाकुरजीक एक-एक शब्द ओकर हृदयक कोन्ह-कोन्हमे सन्हिआइत कसाइत जाऽ रहल छलैक । कतेक यातना आ पीड़ा सहने हएताह शहीद सम्राट ! .... ओ शहीद सम्राटकेँ पकड़ायसँ लऽ कऽ फाँसी तकक तनाव आ त्रासदीक परतसभमे पैसय लागल । की एकरा सभ बुझि सकैत अछि ? पञ्चायत कालमे जखनसँ पुलिस ओकरासभकेँ पकड़ैत रहैक तखनेसँ त्रासक तनावक पीड़ादायी त्रासदी शुरु भऽ जाइत छलैक । 'मारत-पीटत की नेल ठोकत ? अथवा कतहु लऽ जाऽ कऽ नखुक ओरालोकाण्ड जकाँ फुसियेक इनकाउन्टरमे मारि त ने देत ?' ऊपरसँ केओ कतबो किया ने हँसओ भीतरे-भीतर सभक खून सुखाइत रहैत छलैक । तथापि स्वजन आ सहकर्मीसभक आगाँ हँसय पड़ैत छलैक, पुलिस अधिकारी लग तनय पड़ैत छलैक आ सामान्य पुलिससभसँ मित्रताक भाव राखि अपन बन्दोबस्तक इनतजाम करय पड़ैत छलैक । एहन कोनो राति नहि होइक जहिया ओसभ सुतैत छल हएत । छोटो छिन धमधमाहाट करेजकेँ हड़हड़ा दैत छलैक । भोर भऽ जाइक तखन जाऽ कऽ निन्नक कृपापूर्ण आगोसमे कहना घुसिआ जाइत छल आ केहनो हल्लागुल्लामे फोंफ काटि सुतल रहैत छल । लोकसभ अबैक त बजैक –"बड्ड साहसी आ जीवटसभ अछि । कनेको डेरायल बुझाइत अछि ? भरि दिन निश्चिन्तसँ फोंफ कटैत रहैत अछि ।" मुदा धोकरक मारि त धोकरे ने जनतैक !

....कोना बितओने होएताह शहीद सम्राट गिरफ्तारीसँ लऽ कऽ फाँसीतकक दुष्चिन्ता, त्रास आ जीवनक अन्धकारपूर्ण डराओन क्षणसभसँ भरल ओहि अवधिकेँ । ओकर रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत छैक, परिछा लैत छागर जकाँ ओकर देह आ चमरा सिहरिकय थर्थरा जाइत छैक । फाँसीक क्षण त शहीद सम्राट वास्ते अबस्से कठीन नहि छल हएत । लगातार २ बर्षक त्रासदी आ असह्य पीड़ाक निदान ओ ओहीमे देखने होएताह । आखिर विकल्पो त कोनो नहि छलैक, तैं ठीके फाँसीकेँ ओ निस्पृह भावेँ नेने होएताह । हुनका लगमे माय-बाप, पत्नी-सन्तानक कोनो मोह नहि रहि गेल हएत । आ तैं त कहाँदोन ओ अन्तिम भेँटमे कहने रहथिन्ह –"जाऊ ! भऽ सकत हमरा बिसरि जायब !!" .... ओकर ध्यान शहीद सम्राटक परिवारदिस खिचा जाइत छैक । .... बलिदानी शहीद सम्राट नहि, बलिदानी त हनुकर विधवा पत्नी आ एकहि सन्तानबाली माय छलखिन्ह । न्योछावर ओ नहि, हुनकर नवयौवना पत्नी अपन जीवनकेर कएने रहथिन्ह । जीवनक स्वर्णिम क्षण, संरक्षण सुख, स्नेहपूर्ण वचन आगोस, उपस्थितिक आनन्दपूर्ण तरङ्ग – सभकिछुक त्याग त ओसभ कएने छलखिन्ह । जीवनभरि बेओरक नोर, हृदयपर बढ़ैत आघातक जोर आ वेदनपूर्ण यादक तोर त ओसभ भोगने छलाह । केओ बटलकन्हि ? हिनकासभक दुखक केओ स्पर्शो करय सकल ? .... ओ तमतमा जाइत अछि । मोन उचटि जाइत छैक । अपनोकेँ दोषी महशूस करय लगैत अछि । ओ अपन मुहँकेँ दुनू हाथेँ मलय लगैत अछि । मुरी निच्चा गोंता जाइत छैक । अपने पित्ते भीतरसँ भर्रा जाइत अछि ।

.... ओ आत्ममूल्याङ्कन करय लगैत अछि। नहि ओकर दोष नहि छैक। ओकरा एहि बारह बरखमे कोनो मौका नहि भेटलैक। ओसभ कएबेर बात उठोने रहय। शहीद आ सेनानीसभक परिवारहेतु राज्यसँ विशेष व्यवस्थाक माँग कएने रहय। निश्चय प्रजातन्त्र सम्पूर्ण जनताक लेल आयल अछि। एकरा प्रजातान्त्रिक संस्कार आ संस्थागत हिसाबसँ समतावादी समाजक मूल आधारक रुपमे सञ्चालित करबाक चाही। प्रजातन्त्रपर ककरो चाहे ओ प्रजातन्त्रहेतु लड़य-मरयबला किएक ने होउक विशेषाधिकारक कोनो अर्थ नहि छैक। प्रजातन्त्रक मूल मर्म इहए थिक मुदा जे लड़ल-मरल तकरा क्षतिपूर्त्ति वा पारिश्रमिके सही भेटबाक त जरुरे चाही। तखन ने जनता आ ओकर अधिकारपर कतहुसँ खतरा आओत त केओ फेरो लड़य-मरयलेल तैयार रहत। मुदा एहि बातक गम्भीरताकेँ सत्ताक गल्लीमे डेरा खसोनिहारसभ किन्नहुँ नहि मानलथि, बुलबल्ला जकाँ उड़ा देलथि। बहुतो त त्याग आ बलिदानसँ नहि पगहा आ गरदानीसँ ओहि गल्लीमे घुसल रहथि त एकर गम्भीरताक आँकलन कोना कऽ सकितथि ? जौं करबो करितथि त नादानीयेँ होइतन्हि किएक त वहए मूल्याङ्कन हिनकासभकेँ अपन असली धरातलपर बैसा दितन्हि। तैं ई सम्भव नहि भऽ सकल। ओहिकालमे भोगयकलासभमेसँ १२ बरखमे भोगयबला कम्मे रहलाह आ हिनको सभकेँ कमीये की रहन्हि जे किछु बजितथि अथवा करितथि ? अपनालेल भेटबे कयलन्हि आ धियापुतालेल जोरिये लेलन्हि त आनक लेल प्रयोजने की रहैक ? एकटा पड़ित-कोष ठाढ़ो भेलैक त चैतेसभक तात्काल षड़यन्त्र शुरु भऽ गेल। अपन उच्च स्थानक स्थायीत्वहेतु सिफारिसक प्रक्रिया रखबा देलक आ देशभरिक चोर-डाकूसभकेँ राजनीतिक पिड़ित बनाकय घुसिआ देलक। स्थिति एहन बनि गेलैक जे कोष-सञ्चालको बदनाम भऽ गेलाह आ असली पिड़ितोसभ सञ्चालन प्रक्रियाक कारणेँ लजा गेल। भृकुटी मण्डपक अफीसमे भीड़ लगैक आ मारापिट्टी मचैक त असली पिड़ितसभ अकबका जाथि। सभ कातमे ठकुआकय ठाढ़ भऽ जाथि। ..... नहि दोषी ओ आ ओकरासनक लोकसभ नहि आगाँमे आसन ओगटने कलफदारबलासभ अछि। ओकर गाल लाल भऽ जाइत छैक। ओ सभदिस मुरी घुमाकय तकैत अछि। ओकरा बुझाइत छैक जेना ओकर गरम चेहरासँ आगाँक लोकसभ किछु सशङ्कित भऽ गेल छथि। ओ फेर दुनू हाथेँ अपन मुहँ मलय लगैत अछि आ गर्दन निच्चा झुका लैत अछि।

..... कार्यक्रम लगभग लगचिआ गेल अछि। अखन जे बाजि रहल छथि ओ चैतेक नेतृत्व-मण्डलीक प्रमुख सदस्य छथि। पिछला बारह बरखमे सभ दिन शुभेलाभमे रहलाह। आब त ओ इतिहासे बदलि दैत छथिन्ह। हाइकमाण्डक विशेष कृपापात्र छथि। जहिया लोक 'पञ्चायत मुर्दाबाद !' कहि लाठी आ गोली खाइत रहय, अपन जुआनीक अमूल्य क्षणक नोर लोहाक खोरकेँ पिअबैत रहय ई कैंचा समेटयमे लागल रहथि; मुदा आईकाल्हि जे बजैत छथि त अपन संघर्षक कथा प्राइमरीये स्कूलसँ शुरु कऽ दैत छथि। लोको ताली पिटैत रहैत छन्हि। जे बुझैत अछि से बजैत नहि अछि किएक त ओ इहो बुझैत अछि जे बाजल कि गेल, सोझे नाम कटा देतैक आ नेता लगमे अन्ट-शन्ट बात पहुँचा देतैक। आ जे नहि बुझैत अछि तकर बाते छोड़ू ! अखनो देखू ने कहाँ बलिदान दिवस मनाओल जाऽ रहल अछि आ ई एतय खाली सरकारे बनाबक बात करैत छथि। बलिदानक अर्थ, ओकर लक्ष्य अभिष्ट समाजक गप्प करब से नहि त – " ई सरकार हटाऊ आ हमरासभके आतय बैठाऊ !" भोकरैत रहैत छथि। .... ओ फेर गरमा जाइत अछि। आई त ओकरा मौका भेटबे करतैक। ओ ककरो नहि छोड़त। सभक पोल खोलि देत। धज्जी-धज्जी उड़ा देत। जनताक आजुक हालतलेल जे दोषी अछि तकरा पहिने कात

कयनाई आवश्यक अछि से ठहरा देत । ओकरा छटपटी धऽ लैत छैक । ओ एम्हर-ओम्हर ताकय लगैत अछि । तखने .... तखने ओकर नजरि लगले ठाढ़ पुलिसक भानपर पड़ैत छैक । ओकर खून खौल जाइत छैक । पञ्चायत व्यवस्थाक दिन ओकरा फेरो याद पड़ि जाइत छैक । चमचासभक बोलबाला, मण्डलेसभक अत्याचार, दिनदुखियाक भिड़ाकय गौंसँ शोषण, तानाशाही, डिट्ठादानी भ्रष्टाचार आ मनमानी व्यवहार ओकरा मोन पड़ि जाइत छैक । सभ किसिमक स्वतन्त्रताक आभाव – अपना मोनसँ ने कोनो व्यवसाय कऽ सकैत छी आ ने स्वतन्त्रतापूर्वक बाजिये सकैत छी ।.सभ किछुमे कृत्रिमता । भाषा-भेष, लोक-वेद सभपर दबाब । ..... नहि चाहे जे होऊक, पञ्चायतसँ त बूड़बकहो प्रजातन्त्र हजार गुणा नीक । बाजि त सकैत छी । गड़ियाकय भराँस त निकालि लेब । हमरा किछु नहि भेटल त की भेलैक ? मन्दे गतिसँ भेटतैक मुदा लोककेँ त किछु ने किछु भेटबे करतैक । कमसँकम पाँच बरखमे एक्को बेर सही किछुओ त विकासक गति आगाँ बढ़तैक । लोकक आत्मविश्वास त धीरे-धीरे बढ़ल जयतैक । ..... नहि प्रतिगमन त समाप्त होयबाके चाही । अखनुकाक प्रथम प्राथमिकता इहए थिक । अहीमे ओकरो जीत छैक । प्रतिगमन चलि जयतैक त ओ.हो हारि जायत । ओकर इतिहास मेटा जयतैक । समाजे नहि अपनो बेटा-पोताक नजरिमे ओ खसि जायत ओकर बेटो-पोताक स्थान समाजमेसँ निच्चा खसकि पड़तैक । २०४६ सालमे जीतल स्वाभिमान, गौरव सभ किछु पिचरा-पिचरा भऽ जयतैक । सभ किछु समाप्त भऽ जयतैक । असन्तुष्टि हमर आन्तरिक बात अछि; एहिलेल हम अपनेमे लड़ैत रहब । मुदा पहिने प्रतिगमनसँ लड़ब । ओ फेर एक बेर पुलिसक भानदिस देखैत अछि । ओकर आँखि लाल भऽ जाइत छैक ।

.... उद्घोषक अगामी वक्ताक नाममे हुनके नाम कहैत छथिन्ह । ओ ठाढ़ होइत अछि । ससरिकय आगाँ बढ़ैत अछि । आब ओकर पित्त शान्त भऽ गेल छलैक । चाहे बाजयलेल जइ पूर्वाग्रहसँ बाजओ, करयलेल कतबो बिरोध करओ मुदा सभ ओकर बौद्धिकता आ बलिदानी चरित्रकेँ जनैत छैक तैं ओकरा ककरो ध्यान खिचऽ नहि पड़ैत छैक । सामान्य औपचारिकताक निर्बाह करैत ओ शहीद सम्राटप्रति हृदयसँ श्रद्धाञ्जलि व्यक्त करैत अछि । बलिदानक अर्थक व्याख्या करैत अछि । समतामूलक समाजक निर्माणहेतु बलिदानक आओर आवश्यकताकेँ प्रमाणित करैत अछि । प्रतिगमनकारीकेँ दस हजार फैज्झति करैत अछि आ शहीद सम्राट जकाँ बलिदानी बनक प्रतिज्ञा धरैत अछि ।

****

पाथरसनक लोक .... !

आङ्गनमे पैसिते ओकरा घरक असामान्य परिस्थितिक संकेत भेटि गेल छलैक । घरनी आगि छलखिन्ह । बौआक माथमे पट्टी बान्हल छलैक । बेटीसभ कानि रहलि छलि आ ओ भनभना रहल छलीह । .... बौआ कपार फोराकय आयल अछि । पीठ, छाबा, जाङ्घ सभतरि लाठीक चोट छैक । ओ कनेक काल ठाढ़ भऽ कऽ देखलक आ फेर सोझे अपन कोठरीमे पैसि गेल । ककरो टोकब ओकरा उचित नहि बुझअयलैक । सोचलक जे कोना की भेलैक से त बादोमे जानिये जायत । एखन पुछक अर्थ अछि बिढ़नीक खोंताकेँ खोंचारब । तैं ओ चुप्पे रहल ।

बाहरमे असोरापर मधु भनभनाइते छथिन्ह – “जेहन बाप तेहने ने बेटा हएतैक ! कतबो मरि-मरिकय हम किया ने पोसियौक, राजनीतिक गन्ध एकरासभकेँ तनबे करतैक । ... कतेक निर्मम अछि ईसभ ! कनेको दया नहि छैक ‼ .... ने एकरा बापक हृदयमे कहियो ममता जगलैक ने एकरा जगतैक ! ” कनेक काल ओ अहिना भनभनाइत रहलीह आ ममताक उद्वेग जखन जोर मारलकन्हि त उठिकय बौआक पीठ सेंदैत बेटीक हाथसँ कपड़ा छिनि अपनेसँ ओकर पीठपर उखरल लाठीक दोदरासभकेँ सेदय लगलीह । बीच-बीचमे फफकिकय कनबो करथिन्ह – “किया जाइत छह ? .... की भेटतौक ? ... पूरा जिनगी त बाप उसरगि देलकौक अहीसभलेल ! अपनो ....आ संगहिं हमरोसभकेँ ! तहूँसभ त कमसँकम एहिसभसँ अलग रह । ... कोना निर्मम निर्दयी जकाँ डेंगअओने अछि ! ” मधुक गड़ भारी भऽ जाइत छन्हि । भीतर ओकरा रहल नहि गेलैक । ओ बाहर निकलिकय अपराधी जकाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि । चुपचाप बकरबकर तकैत ....! बाजक साहस नहि भेलैक ओकरा । कनेक काल ओहिना देखैत रहल । लगलैक ओकरो कना जयतैक । आ ओ फेरो अपन कोठरीमे घुसि जाइत अछि ।

बौआ राजनीतिसँ अलगे रहैत आयल अछि । जुलुस, धर्ना आदि आन्दोलनक कोनो कार्यक्रममे एखनधरि कहियो सहभागी नहि भेल छल । माय-बाप दुनूक सभ दिन एकेटा प्रयत्न रहलैक जे कहुना बौआ राजनीतिमे नहि लागओ । पति राजनीतिककर्मी भेलाक कारणेँ मधु सदैव पीड़िते रहलीह । आभाव, लोकक व्यङ्ग-वाण, अव्यवस्थित अस्तव्यस्ततासँ भरल जिनगी हुनकर नियति बनि गेलन्हि । हँसमुख, चञ्चल आ स्निग्घता भरल स्वभाव धीरे-धीरे झँपा गेलन्हि । सदिखन तिलमिलायलि आ खौंझाअलि रहय लगलीह । सन्तानसभ कमसँकम राजनीतिसँ विमुख रहय तकर निरन्तर प्रयत्न करैत रहलीह । एहिमे हुनका ओकरो हृदयसँ सहयोग भेटैत रहलन्हि अछि । ओहो नहि चाहैत अछि जे ओकर धियापुतासभ अथवा अपन अपेक्षित केओ राजनीतिमे लागओ । भलेहीं खुलिकय ओ ककरो नहि कहैत होइक मुदा आन्तरिक इच्छा ओकर इहए रहैत छैक । ओ ककरो राजनीतिमे कूदाबयहेतु प्रयत्न नहि करैत अछि । आब ओ जे राजनीतिमे अपने मने आबि जाइत अछि आ अपनाकेँ बेश सक्रिय कऽ लैत अछि तकरेटासँ सम्पर्क करक यत्न करैत अछि । हँ, ओकरा इच्छा रहैत छैक जे सभ लोकतान्त्रिक प्रणालीक विकासप्रति यथासम्भव प्रतिबद्ध रहओ । पहिने ओ लोककेँ राजनीतिदिस तानक पूरा प्रयत्न करैत छल, तानियो लैत छल । २०४६ सालसँ पहिने ओ अपन सम्पूर्ण परिवारोकेँ प्रजातन्त्रक लड़ाईहेतु तैयार कऽ नेने रहय । सभ केओ पूर्ण प्रतिबद्धतासँ एहिमे कुदि सेहो गेल छलैक । पूरे परिवार झोंका गेल रहैक । छबो भाईकेँ एहि कारणेँ जेलक यातना भोगय पड़लैक । ..... मधुसँ अही क्रममे भेँट भेल छलैक; तहिया दुनू आदमी यूनिवर्सिटीमे पढ़ैत रहय । तकरबाद हरेक डेगपर मधु मोनसँ संग देलखिन्ह । शुरु-शुरुमे अपनो सक्रिय रहलीह, गिरफ्तारीयो देलखिन्ह मुदा बादमे ‘आहाँ एहिमे लागू, हम परिवारकेँ सम्हारि लेब !’ कहि एकगोट विद्यालयमे पढ़बय लगलीह । फल:स्वरुप बिआहक बाद ओकर सक्रियता आओर बढ़ि गेलैक । मुदा २०४६ साल बाद

जखन देशमे प्रजातान्त्रिक व्यवस्था आयल आ पार्टी सत्तामे गेल हिनकासभकेँ पैसा जाति आ बुर्जुवा तिकड़म पछाड़ियेटा देलकन्हि । नीक जकाँ कतिया कऽ कात कऽ देलकन्हि । प्रारम्भ पार्टीये भीतरसँ भेल – झूठ-फूस आरोप, निलम्बन, निष्काशन सभ किछु भेलैक । अन्ततः ईसभ निर्णय लेलन्हि जे आब राजनीतिसँ चुपचाप कात भऽ पारिवारिक जिम्मेदारी वहन कयलजाय । सभ अपन-अपन पेशा चुनि लेलक । मधु सेहो शिक्षणमे अपनाकेँ लगा लेलीह । खाली वहएटा अपन धर्रा नहि बदललक । ओ सभकेँ कहलकैक जे कमसँकम ओकरा लागले रहय दौक । आब ई ओकर धर्म आ जिनगीक अभिन्न अङ्ग बनि गेल छैक तैं कहुना निर्बाह करय दौक । फल प्राप्तिक कोनो उत्कण्ठा नहि राखत, समयकेर जिम्मा अपनाकेँ लगा देत तैं पश्चातापो नहि रहतैक । .... ठीके ओ धर्मेटा निर्बाह कऽ रहल अछि । हरेक गतिविधिमे सक्रिय रहैत अछि मुदा शान्त आ गम्भीर । पहिने जकाँ आब ओ प्रफुल्ल आ अपन विचारप्रति आक्रमक अथवा उत्तेजित नहि रहैत अछि ।

मधुक तकलीफक कारण बौआक चोटेटा नहि अछि । शायद बौआक चोट कारण अछियो नहि । बड्ड साहसी आ धैर्यशालिनि छथि ओ । सभ किछु सहि सकैत छथि मुदा बेटा राजनीतिमे लागि गेलन्हि से प्रायः बर्दाश्त नहि भऽ रहल छन्हि । रहिरहिकय टीस मारैत छन्हि । अपन भविष्यक दुआरे नहि से त ओ कहुना काटिये लेतीह । दुःख काटयमे महारत हासिल भऽ गेल छन्हि । ओकरो अपन भविष्यक चिन्ता कहियो नहि रहलैक । हलाहल पिबैत रहल अछि, पिबैत रहत । केहनो कठोर परिस्थितिकेँ अन्ठा देब ओकर चरित्रे बनि गेल छैक । मुदा बौआ राजनीतिमे लागि गेल अछि । आब ओकरो ओहने जीवन व्यतीत करय पड़तैक ! बादमे पुतहु, पोता-पोती सभ कष्टमे रहतैक । नहि जानि कनियाँ केहन अओथिन्ह ? मधुक बेचैनीक कारणेँ इहएसभ थिक । ओहो अहीसभसँ बेचैन भऽ जाइत अछि ।

● ● ●

रातिमे बेटी खाय चलयहेतु बजाबय अयलैक त ओ समाचार देखैत रहय । तखन बिद्यार्थीसभपर लाठी चार्जक दृश्यसभ देखबैत रहैक । ओकर मोन आक्रोशसँ भरि गेलैक । कतेक निर्ममता छल प्रहारमे । पुलिससभ बिद्यार्थीसभकेँ तुर जकाँ धुनि देने छलैक । ओकर खून खौल गेलैक । मोन भलैक अखनेसँ एकबेर फेर पहिनहिं जकाँ निकलि जाय । आ नीकसँ प्रतिकार करय । .... बेटी फेर एकबेर ' थारी परसल अछि । ...' कहिकय टोकि दैति छैक आ ओ अपनाकेँ संयत करक प्रयत्न करैत अछि । बिद्यार्थी आन्दोलनमे आयल गतिसँ ओकरा संतोषो भेलैक – आब धीरे-धीरे आन्दोलन गति धऽ लेतैक । सरकारक दमन अन्ततः इन्धनेक काज करतैक । जनता अबस्से जीतत । मुदा तखने ओकर मोन भीतरसँ खटा जाइत छैक । तकरबाद ? फेर वहए कुटुम्बवाद .... ! जाति-धर्म आ पिछलगुआसभक चलाचल्ती आबि जएतैक । खाली सरकारक गठन प्रक्रियामे आयल परिवर्त्तनसँ कतेक सामाजिक रुपान्तरण सम्भव भऽ सकत ? समाजमे मूलभूत परिवर्त्तनक गप्प पहिनहिं जकाँ सेरा जायत । आओरसभकेँ जेना जे होऊक मुदा ओकरा सनक प्रतिबद्ध प्रजातन्त्रक सेनानीसभक छटपटीक अन्त नहि होएतैक । लोकसँ सम्मान की भेटतैक, ब्यङ्ग-वाणसँ सभ दिन छेदाइत रहत ? ओकर माथ घुमि जाइत छैक । हे भगवान ! ई केहन भूमिका खेलयलेल पठोलहुँ एहि मृत्युलोकमे हमरा ? यातनाक पीड़दायी क्रम बुझाइछ सभ दिन सटले रहत । कहियो नहि टुटत ! यातनाहेतु खैर तैयो कोनो बात नहि मुदा समाजोकेँ त किछु उपलब्धि होइतैक ? ओ अपन माथ एकबेर जोरसँ झटकैत अछि आ समाचार बन्द कऽ कऽ भानसघरमे घुसि जाइत अछि । .... बौआ धीरे-धीरे कहुनाकय खा रहल छलैक । मुँह असह्य दर्दक पीड़ासँ क्लान्त छलैक । ओकर देह सिहरि जाइत छैक । लाठीक चोट ओकरा बुझल छैक । देखलासँ सामान्य किया ने बुझाअओ मुदा दुखाइत बड्ड छैक । मोन भेलैक जे एकबेर बौआक पीठपर हाथ फेरैक । बहादुरीपर ओकर पीठ ठोकि दैक । ओ जनैत अछि एहिसँ बौआक दर्द अबस्से घटि जएतैक मुदा मधुक गम्भीर भाव देखि ओ अपनाकेँ एतहुँ संयत कऽ लैत अछि ।

ओकरा डर होइत छैक कतहु ओ बिफरि ने जाथि ! ओ बौआदिस निरीह भावें देखैत अछि, बुझाइत छैक बौआ व्यग्रतासँ ओकरे हाथक एखनधरि प्रतीक्षा करैत रहलैक अछि। ओकरा एक बेर फेर उठक मोन होइत छैक मुदा उठैत नहि अछि । चुपचाप कौर ठूसयमे लागि जाइत अछि । आइ ओकर प्रिय तरकारी च्याऊ परसल गेल छैक । मधु बेटीकेँ परसन दऽ कऽ पठबैत छथिन्ह । मुदा ओ हाथसँ अनिच्छा देखबैत बेटीकेँ रोकि दैत छैक । वातावरण आओर गम्भीर भऽ जाइत छैक । ओ चटपट भोजन समाप्त करैत उठि जाइत अछि ।

अपन कोठरीमे पैसिते ओ अखबारक भितुरका पन्नाक लेख टिपणिमे अपनाकेँ घुसियाबय चाहैत अछि मुदा रहिरहिकय धिआन बौएपर चलि जाइत छैक । छोड़ने नहि छुटैत छैक । ओ बौआसँ बतिआयलेल व्यग्र भऽ जाइत अछि । ओकरा आब बौआक दर्द धटाबयलेल मात्रहि नहि अपनो व्यग्रता समाप्त करयहेतु ओकर पीठपर हाथ फेरही पड़तैक ! ओ बौआक कोठरीदिस विदा भऽ जाइत अछि । ....बौआ ओछाओनपर पड़ल टुकुर-टुकर छतदिस देखि रहल छलैक । अकस्मात् ओकरा कोठरीमे देखि हड़बड़ाकय उठि गेलैक । ओ लगेक कुर्सीपर बैसैत कहैत अछि – "कथिलेँ उठलहुँ,... सुतु !"

"जी ! ....नहि दुखाइत छैक । ठीक छैक आब ।" – बौआ जल्दी-जल्दी कहैत छैक ।

"दुखाइत त हएबे करत । आ ठीको भैये जायत ! ... दवाई खयलहुँ ?" – ओकर शैलीमे नहि जानि कतयसँ अभिभावकत्वक गन्धक गम्भीरता आबि जाइत छैक । बौआ एक बेर माथ उठाकय देखैत छैक आ फेर जेना सफाई दैत होय, हड़बडाकय कहैत छैक – "जी, नहि ! हम नहि जैतिऐक । मुदा... ओसभ ....पुलिससभ एकटा हाईस्कूलक बच्चा बिद्यार्थीकेँ .... लहूलहूआन कऽ देने रहैक ।.... लाठीसँ पीटि-पीटिकय ! हमरा नहि रहल गेल । हम ओकरा खिचयलेल चलि गेलिऐक । खिचि त लेलिऐक मुदा हमरो बड्ड मारलक ! "

"एकदम ठीक कएलहुँ ! ओहि बच्चाकेँ फेर की भेलैक ? ... अस्पताल .... ?" – बौआक उत्तरसँ ओकर मोन आह्लादित भऽ गेल छलैक, ओ खुशीसँ चमकि गेल ।

"लोकसभ ! ... हमरा आगाँ बढ़िते बहुतो लोक आगाँ बढ़ि गेलैक । लोकेसभ ओकरो आ हमरो रिक्शापर बैसाकय अस्पताल अनलक । डाक्टरसभ दौड़िकय पट्टी बन्हलक । .... डाक्टर आ नर्ससभ घायलसभक बड्ड सेवा कएलक ।"– बौआ उत्साहित भऽ कहैत जा रहल छल आ ओ ओकर माथकेँ हँसोति रहल छलैक ।

"आहाँ शुरुएसँ जुलुसमे रहिऐक ?" – ओहो उत्सुकतासँ पुछलकैक । एहि प्रश्नसँ बौआ कनेक सेरा गेल आ स्थिरसँ उत्तर देलक –" जी, नहि ! .... हम त ओतऽ एकगोट दोकानमे कौपी किनैत रही । ताबते जुलुस आबि गेलैक ....!" अपन बात समाप्त करैत बौआ माथ उठाकय ओकरादिस देखलक आ चुप्प भऽ गेल ।

कनेक कालबाद चुप्पी तोड़ैत ओ कहलकैक –"खैर, कोनो बात नहि ! आहाँ जे कएलहुँ से करब आवश्यक छल । .... केओ कहत ! आहाँक मायो प्रायः एकरा अनुचित नहि कहतीह !" बौआ चुपचाप सुनैत रहलैक । ओ आगाँ बढ़ल –"मुदा, ... मायक दुखकेँ अनुभव करैत छिऐक ? .... राजनीतिमे नहि लागू ! ओहुना राजनीति हमरा आहाँक पहुँचक विषय नहि अछि । हम त ई गल्ती कएनहि छी, आहाँ नहि दोहराऊ ! .... राजनीति की त शमशेरे सनक धनवानक विषय थिक या त भट्टराईये सनक फकीरक । दोसरकेँ एहिसँ दुखे होइत छैक ।" ओकर नजरि देहरिपर ठाढ़ि मधुपर पड़ि जाइत छैक । ओ सोझे अपनाकेँ सिकुड़ालैत अछि । आ बौआकेँ –" आराम करु !" कहैत उठि विदा भऽ जाइत अछि ।

● ● ●

ओ ओछाओनपर पड़ल पत्रिकामे कोनो रुचिगर सामग्री तकिते छल कि मधु हाथमे पानिक मग नेने प्रवेश कयलखिन्ह । ओ नुकायले आँखिसँ देखलक त लगलैक

जेना उदासीक परत एखनधरि चढ़ले होइक । ओ मधुकेँ टोकटाक करक विचार त्यागि देलक । भऽ सकैछ टोकलासँ ओ आओर बिफरि जाथि आ घरक अशान्ति आस-पड़ोसमे चर्चाक मसल्ला बनि पसरि जाइक । .... लोक ओकरासभक वेदनाकेँ किन्नहुँ बुझय सकतैक ?! सभ कहतैक जे ' आब नेताजीकेँ बुझऽमे आयल हएतन्हि । बड्ड सभकेँ आन्दोलनमे भाग लेमक हकार दैत घुरैत छथिन्ह । .... अपन बेटाक कपार फुटलन्हि त अपने घरमे महाभारत मचि गेलन्हि !' आदि-इत्यादि । टीका-टिपणि आ मुस्की-कनखीक व्यङ्ग-वाणसँ टोला आ फेर पूरा शहर गरम भऽ जायत । .... एहि शहरोक लोकसभ अजीबे अछि, जेना खाली ओकरेपर सभक नजरि रहैक । किछुओ हएत लोक ओकरासँ जोड़ियेटा देत । केओ अपना मोनसँ बिआह करत लोक कहतैक वहए सिखा देलकैक । केओ मुड़न बिआह वा श्राद्धकर्ममे भोज-भात अथवा दान-पुण्यक बिरोध करत लोक कहतैक वहए पढ़ओने हएतैक । आ जौं ओ ई कहिदौक जे ओना त ओ एहि बातमे शामिल नहि अछि तथापि बात ठीके छैक त फेर लिय ने ऽ.... । पूरा शहर पक्ष-विपक्षमे बँटि जायत । पक्षक लोक ततेक बाजत नहि आ विपक्षीसभ चिकड़त । एक दिन भैयासंगे नीक-बेजाय बतिआइत काल अपनामे चर्चो कएने रहय त ओ कहने रहथिन्ह –"किछु होऊक, लोक अपन स्मृतिमे त रखैत अछि ...! दोसर केओ छैहे नहि त चर्चा ककर हएतैक ? नीक आचरण, नीक विचार, नीक सन्दर्भ नीके लोक बुझि सकैत अछि । मुदा नीक लोक ककरो तरफसँ पक्षदारी नहि करैत छैक । आवश्यकतेपर अपन विचार दैत छैक । तैं एकरा नीके बुझू ।" भैयाक तर्क त ठीक रहन्हि मुदा प्रायः ओ ओकरा भरोस दैलेल कहने रहथिन्ह । कनेक संतोषो भेले रहैक तैं चुपचाप रहि गेल रहय ।

ओकर ध्यान मधुदिस गेलैक । ओ अनठा कऽ सुतल रहथिन्ह । ओ मधुक आदति जनैत अछि । जहिया तमसाअलि वा विचलित रहतीह जावत ओ अपन स्नेहपूर्ण आगोसमे नहि कसतैक ओ सुति नहि सकैत छथि । ओहो एहन सभ दिन अन्तमे कहुना मधुकेँ अपन स्नेहपूर्ण आगोसमे भरबो करैत अछि । अहिना ओकरा सभमे झगड़ा आ मेल होइत आयल छैक । .... ओ उठिकय बाहर निकलैत अछि । धियापुतासभ सुति रहल छैक । सभ दिन जकाँ मूलगेट आदि नीकसँ बन्द छैक कि नहि से देखि अपन केबार बन्द करैत अछि आ ओछाओनपर कनेक काल निश्चल पड़ल रहैत अछि । कनेक कालकबाद ओ मधुक पीठपर नहुँएसँ हाथ राखि फेरैत अछि । मधु एहिकात घुमि अपन माथ ओकर छातीसँ सटा लैत छथिन्ह । गाल नोरसँ भीजल छन्हि । हिचकीक संगहि हुनकर आवाज ओकर कानमे पड़ैत छैक –"ओहो राजनीतिमे लागि गेऽऽऽल । .... आहाँक बेटा सेहो अन्ततः लागिये गेलऽऽऽ .... !" ओ अकचका जाइत अछि । लगैत छैक जेना वेदनाक अत्यन्त गहींर खाधिमे दुनू आदमी एके बेर खसि पड़ल होय । ओ अपनाकेँ कहुना कऽ समेटैत कहैत अछि –"नहि लागत । विश्वास करु, हम ओकरा कहुना समझाऽ लेब । हमर पूरा प्रयास रहल अछि आ रहत जे ओ एम्हर आकृष्ट नहि होय !" मधु अपन माथकेँ आओर जोरसँ ओकर छातीमे सटबैत कहैत छथिन्ह –".... सेऽऽऽ त हम ...जनैत छी । मुदा राजनीति खाली पैसेबला आ फकीरे नहि करैत अछि । आओरो बहुतो सेहो करैत अछि । अवसरकेँ चिन्हयबलासभ त करिते अछि, एकटा आओर समूह रहैत अछि एहिमेऽऽऽ... । आहाँसनक सोझ .... पाथरसनक लोकसभ ! .... आहाँक बेटो पाथरसन अछि । ....हम ओढ़ना तरमेक ओकर ई व्यक्तित्वकेँ देखि लेलिऐऽऽऽक । आई ओ चिन्हा गेलऽऽऽ.... । तरमे आहाँक बेटो ओहने अछि, अहींसन । .... पाथरसनक लोक ! .... हम त सहि लेब मुदा ओकर कनियाँ ? पता नहि केहन आओति ? .... आ जौं ओहो सहय लागति त हमरा देखल नहि जायऽऽऽत.... ।" ओ अवाक् भऽ जाइत अछि । अन्हारोमे ओकर आँखि खुलिकय पसरि जाइत छैक । ओ अपन हाथसँ चुपचाप मधुक माथ फेरय लगैत अछि । आखिर एतबा त ओ कऽ सकैत अछि । एहिसँ बेशी अखन ओकर पहुँचमे छैहे की ?!



माल्हो

□□□

हमर मायो आब दाइए जकाँ भेलि जा रहलि अछि। गाम अयलहुँ त ओहिना जेना पहिने दाइ ओसारापर ठाँव कऽ पीढ़ी बैसओने दुरखाक मुँहपरसँ बाट देखैति रहैति छलि – अनमन तहिना मायकेँ सेहो दुरखाक मुँहपर बैसलि टकटकी लगोने देखलहुँ। पहिने हम छुट्टी होइते साइकिल पकड़ि बाबा आ' दाइ लग गाम दौड़ि जाइत रही। तहिया गामतक पीच सड़क नहि रहैक। डगहरपर दने खुड़पैड़िया बाट लोको चलय आ' साइकिलो ओहीपर दौड़ैक। बड्ड मोन लगैक। तहिया साइकिलो चढ़नाई बड़के बात रहैक। केओ-केओ चढ़ैक। बिआह-दान होइक त नीक वरकेँ दहेजमे साइकिल आ' रेडियो देल जाइक। फन्नाकेँ साइकिल देलकन्हि से चर्चा परोपट्टाधरि पसरि जाइक। ..... स्पीडमे साइकिल डगहरपर दने सरसराकय निकालिकय हमसभ लोकमे जमओरा करैत रही। साइकिल दौड़बैत हमसभ दूरेसँ घण्टी टनटनबिऐक आ' लोक डगहर छोड़ि निच्चा उतरि जाइक। आब त कारो लेल लोक कात होबऽमे असकताइत अछि। ..... गाम पहुँचिते उँचका डगहरपरसँ अपने दुरखादिस तका जाय जे दाइ हमर बाट देखि रहल अछि कि नहि ? दूरोसँ दाइकेँ हम अन्दाजि लिऐक आ' हमर मुँहपर मुस्की पसरि जाय। बुझाय हमहुँ किछु छी ! बाबूजी आ' मायलग भलेहीं भैयेक चलौन्ह मुदा बाबा आ' दाइ हमरे छथि। एतएलेल हमहीं महत्त्वपूर्ण छी !

आइयो हम सड़केपरसँ देखलिऐक। बुझायल एकगोट आकृति बाट देखि रहल अछि। हम शिल्पाकेँ देखबैत कहलिअन्हि –"हे वाऽऽऽ ...देखिऔक ! ... माय दुरखामे बैसलि प्रतीक्षा कऽ रहलि अछि।" शिल्पा मुस्काइत बजलीह –"दुलरुआ' बेटा जे अबैत छन्हि !"

"हमरासँ बेशी त अहींके मानैत अछि।" – हम नहुअँसँ शिल्पाकेँ केहुनीसँ ठेलैत कहलिअन्हि। "से तऽ ठीके !"– शिल्पाक गाल चमकि उठल छल। प्रायः हुनको गहींर सिनेहक हिलोरि छू नेने छलन्हि।

हम अप्रत्यक्ष रुपेँ अपनाकेँ चाबास्सी दैत बजलहुँ – "अपनेसभ बरोबरि अबैत छिऐक ने तैँ !" "हमहुँसभ माय-बाबूजीक कोनो कम धिआन रखैत छिअन्हि !" – शिल्पा गर्वसँ तनैत बजलीह।

हमरा बुझायल जेना ओ माय-बाबूजीक सिनेहकेँ कृतज्ञता बुझि नेने छथिन्ह। हमरा नीक नहि लागल, कहलिअन्हि – "देखू, प्रथमतः ई हमरासभक कर्त्तव्य थिक, धर्म थिक। हमसभ कोनो कृपा नहि कऽ रहल छिअन्हि। ... हमरासभपर कोनो निर्भरतो नहिये छन्हि ! ... दोसर जे आइ हमसभ जे कऽ रहल छी सहए ने हमरोसभक धिआपुतासभ देखि आ' सिखि रहल अछि। ... आई जे देखैत अछि सहए ओसभ काल्हि करत। ... ओना गारन्टी त नहि मुदा ... विचारिऔक त ई भविष्यक लगानी अछि। ... बूढ़ारीक बीमा !"

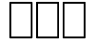
घर आबि गेल छल। हम गाड़ी रोकलहुँ। माय दुरखामे आगाँतक आबि गेलि छलि। बाबूजीक प्रसन्न चित्त ओहिना झलैक रहल छलन्हि। ओ अपन ओछाओनपर बैसल खुशीसँ मुस्काइत चारुभर घुमिघुमिकय दलानमे बैसल लोकसभकेँ देखि रहल

छलाह । प्रायः हुनक प्रयत्न सभक ध्यान हमरादिस आकर्षित करब छल । हुनकर चेहरापर पसरल गर्वक भाव लोक सहजे देखि सकैत छल । हुनकसभक स्निग्धता आ' हमरा लऽ कऽ हुनकासभमे गर्वक भाव देखि हमर अपनो मोन गद्‌गदा गेल । ..... गाड़ी रोकिते बौआसभ दौड़िकय अपन दाइ क डाँड़ पकड़ि झुलि गेल छल । शिल्पा दुरखादिस आगाँ बढ़ि गेल छलीह । हमहुँ बाबूजीकेँ गोर लगैत दलानपरक आओर लोकसभकेँ यथोचित करैत मायदिस बढ़लहुँ ।



बेरहटिया काल एकगोट छौंड़ाकेँ मायक आगाँ-पाछाँ करैत देखलिऐक । कारी मुदा चिक्कन देह । बुझायल चिन्हल-जानलमेसँ अछि । हमरा ओ जल्दीये बेस आकर्षित कऽ लेलक । माय आ- बाबूजीसँ गप्प करैत हम बीच-बीचमे ओकरा देखि-देखिकय ठेकानक कोशिश कऽ रहल छलिऐक । स्मृतिक दुआरिसभ धीरे-धीरे खुजय लागल छल; प्रायः हमर अन्दाज अपने ठीक ठाँवपर पहुँचि जाइत कि माय बाजलि – "बौआ, चिन्हलहीक ? ..." "चिन्हलिऐक त नहि मुदा बुझाइत अछि कहियो देखने होइऐक ! ... के छैक ? ... रे, कने एम्हर आ' त !"– हम साधिकार ओकरा अपनालग आबक इशारा करैत सोर कएलिऐक ।
ओ कनेक सकुचाइत, लजाइत मुदा हमर सोर करबसँ प्रफुल्लित होइत स्थिरसँ लगमे आबिकय ठाढ़ भऽ गेल । माय ओकर बाँहि पकड़िकय आओर लगमे अनैत बाजलि –"माल्होक बेटा छिऐक । ... भुल्लाक नाति । ... आइकाल्हि माल्हो सेहो आयलि अछि । १०/१५ दिनसँ एतए अछि । ... कहैति रहय जे एहि बेर ओ तोरासँ भेँट कैये कऽ जाएति । कहाँदोन ... झगड़ो करतौक !" – बजैति-बजैति माय हँसि देलकि । मायक हँस्सीमे हमरा बुझायल जेना कोनो रहस्य नुकायल होइक । ओहि हँसीमे हमरा एकगोट नारीकहेतु दोसरक सिफरिससँ बेशी समर्थन आ' आग्रहक अंशक अनुभूति भेल । हमर देह सिहरि गेल । हम अकचकाकय पुछलिऐक – "झगड़ा कथीलेँ ... किए ?" "माल्होक बेटाकेँ नोकरी नहि लगा देलहक तैँ ! ... आओर कथीलेँ ?!"– माय सिनेह आ' रहस्य मिश्रित हँसीमे साधिकार अपन आदेशकेँ घोरैति बाजलि ।
तखन हमरा बुझायल जे माल्हो कतहु लगेमे अछि । अवस्से अछि ! हम माथ उठाकय तकलिऐक । ओ ओसाराक दुरखादिसक कोनमे ठाढ़ि हमरादिस कनखिआइत तकैति अपन दहिन पएरक आङ्गुठसँ माटि कोरक प्रयत्न करैति रहय । उएह चमकैत कारी चिक्कन देह ! नमहर आ' पसरल आँखिमे ओहने पहिलुके जकाँ लजौनीसन सकुचायल समेटलि स्निग्ध मुस्कीसँ भीजल भाव । ... हमर हाथ ओकरादिस अनायासे उठि गेल छल मुदा हम अपनाकेँ सम्हारैत संयत स्वरमे पुछलिऐक –"माल्हो छेँ ! कहिया अयलेँ ...?"
"आइ बीस दिन भऽ गेल ।" – ओकर संक्षिप्त उत्तर छल ।
"बेटा बड़ीटा भऽ गेलौक ! – हम ओकर बेटाक पीठकेँ दुलासँ फेरैत कहलिऐक – "की नाम छौक ? पढ़ैत छही ?"
"जी... ! सुन्दर सहनी । .... एसएलसी पास कैलिऐक ।" – ओ सकुचाइत बाजल । ओकर बाजब हमरा बड्ड नीक लागल आ' ओ म्याट्रीक पास कऽ लेलक से जानि अतीव हर्ष सेहो भेल ।
हम चाबस्सी दैत कहलिऐक –"गुड ... ! कोन डिविजनसँ ?"

"जी, सेकेण्ड डिविजनसँ ...।"– ओकर जबाब अत्यन्त शालीन छल । ठीक ओहिना जेना हमर बेटा आनन्द बजैत अछि ।
"आब आगू की विचार ? ... पढ़ाइ जारी राख ! आजुक जमानामे म्याट्रिक त बुझ जे पढ़ाइक नेओ मात्रे ... तैं आगाँ पढ़ ! आओर नीक कर ! " हम धाराप्रवाह कहिते गेलिऐक आ' एहि बीचमे हमर हाथ अनायासे ओकर माथपर चलि गेल छल ।
माल्हो हमर प्रतिक्रियासँ शायद गद्गद् छलि ओ हुलसति बाजलि –" आ' ... पढ़ओतैक के ?" हमर मोन फेर एकबेर धक् दऽ रहि गेल । लागल जेना ओ किछु मांगि रहलि अछि । .... साधिकार ! हम चुप्प भऽ गेलहुँ । दोसर विकल्पो हमरालग कहाँ छल ?!



शिल्पा काँचे निन्नमे उठा देलन्हि । ओ की जानय गेलीह जे हम भरि राति छटपटाएल छी ! माल्होक संगक ओ किशोर दिनसभक चित्रहार हमरा भरि राति सुतय नहि देलक । ओकर चंचल चालि, स्निग्ध मधुर वाणी आ' सिनेहक सुसुमताक यादक ताप आगिक भाफ जकाँ हमरा छटपटबैत रहल । आइसँ बीस-एकैस बर्ष पहिने अहिना हम एक दिन एसएलसी परीक्षा दऽ कऽ छुट्टीमे स्वतन्त्र आ' तनावमुक्त समय लऽ कऽ गाम आयल रही । दाइ हमर बाट दुरखामेसँ तकैत रहय । ..... हमर दाइकेँ लोक सुधुआ' आ' किछु हदतक बकलेल बुझैक मुदा ओ धिआपुता आ' गरीबसभक जेना रानी मधुमाछी रहैकि; एहन सभ ओकरेसँ सटल रहैत छलैक । गामक गरीब गुरबासभक धिआपुता आ' बुढ़ियासभक भिनसरसँ साँझ दाइएलग बितैक । केओ कहाँदोन साड़ी मँगैकि त ओ अपने साड़ी दऽ दैकि । बाबा पिताथिन्ह त कहाँदोन ओ कहैकि –"आब त आहाँकेँ दोसर किनहिं पड़त ने ! ... ओना ओकरा किनि दितिऐक ?" बादमे बाबा तंग भऽ कऽ ओकर सिफारिसपर किछु बुढ़ियासभकेँ बर्षमे एक बेर नियमित रुपसँ साड़ी देबय लगलखिन्ह । बुढ़ियासभ इहो सुनबैति रहैति अछि जे हमर दाइ अपन कोशलिया तहियाक चानीक भिक्टोरिया छाप रुपैयासभ टाटक बन्हनसभमे खोंसिकय रखैकि । केओ मंगैक त ओ कहैकि –"तकियो ने एम्हरे कतहु रखने छलिऐक !" बहुतो चुपचाप चोराकय लऽ जाइक आ' दाइ तकबाक नाटक करिते रहि जाय मुदा एहन आदमीकेँ दोबारा फेर कतबो जरुरी पड़ैक त ओ मदति नहि करैकि ।
हम एसएलसी परीक्षा दैत रही त दाइ प्रत्येक दिन सहदेबाकेँ हमरा देखय पठबैकि । सहदेबा बादमे हमरा कहलक –"बुढ़िया गिरहतनी कहने रहथिन्ह जे कहियही किछु नइ । खाली देखिहे, मोन खुशी छैक कि नइ !" ई कोनो अनाड़ी आ' बकलेलक आदेश भऽ सकैत छैक ?! कतेक दुलार करैति छलि ओ हमरा ! हमर मोन भारी आ' गम्भीर भऽ जाइत अछि । ..... ओहो अहिना ठाँव कएने पीढ़ी रखने दुरखामे बैसि बाट तकैति रहैति छलि । हमर साइकिल दलानपर पहुँचिते ओकर झुर्री पड़ल गालपर खुशीक लहरि दौड़ि जाइत छलैक । हमरा पूरा याद अछि ओहि दिन एकोरत्ती भूख नहि रहय, खाऽ कऽ चलल रही; मुदा हमरा बुझल रहय जे दाइ मानति नहि आ' सभसँ बड़का बात त ई रहैक जे ओ तखनधरि अपन मुँहमे किछु नहि धएने छलि ..... तैं हम पहुँचिते हाथ-पएर धोऽ कऽ सोझे पीढ़ीपर बैसि गेल रहिऐक । हमरा आगू ओ परसल थारी रखैत कहने रहय –" एतेक अबेर किया भऽ

गेलौक ? ... तोहर बाबा बैसल-बैसल अखने खाऽ कऽ गेलखुन्ह अछि । ... ओहो अधे पेट !"

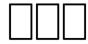
"परीक्षा खतम भऽ गेलाक बाद संगीसभ सिनेमा देखब निआरने छल । हमरो जाय पड़ल । ...तौँसभ खाऽ लिते !" – हम साधिकार कहलिऐक मुदा तत्क्षण हमरा बुझा गेल जे हमर कहब सर्वथा अनुचित छल । बाबा-दाइ क प्रेम, सिनेह आ' दुलारक आगाँ सिनेमाकेँ महत्त्व देनाइ पूर्णतः बेवकूफी रहैक । ... खैर, हमरा दाइ पर कोनो असर नहि पड़ल रहैक । कमसँकम एहिपर ओकर कोनो प्रतिक्रिया नहि अयलैक । बाबालग ओ हमर देरीक कारणक चर्चोतक नहि कएलक ।

खाऽ कऽ हम सोझे खेतमे पहुँचल रही । कटनी होइत रहैक । लोक धान काटयमे तल्लीन रहय । खेतमे जन-बनिहारक धिआपुतासभ एम्हर-ओम्हर खेलैत-कुदैत रहैक । लड़िकोरिसभ अपन बच्चाकेँ कटल पसहीपर गदेली धऽ कऽ सुतोने हबड़हबड़ धान कटैति रहय । बाबा अपन अङ्गपोछाकेँ पीठ दने आनि दुनू ठेहुनक निच्चामे बान्हि आरिपर बैसल धीरे-धीरे झुलैत लालजी आ' महेसरासंगे बतिआइत रहथि । लालजीक तरत्थीमे खैनी आ' महेसराक काँखतर सनक भीड़ी । महेसराक दोसर हाथमे ढ़ेरुआ' रहैक । सुतरी बनोनाई ओकरसभसँ प्रिय काज रहैक; जखन-तखन चलैत-बतिआइत सदिखन ओ सुतरी बनबिते रहैत छल । बाबा हमरा देखलन्हि, हुनक चेहरापर आयल चमक साफ आ' स्पष्ट छल मुदा ओ किछु बजलथि नहि । हमहुँ गोर लगलिअन्हि आ' आर्शीवाद लैत आगाँ बढ़ि गेलहुँ ।

खेतक बीचमे एकगोट डबड़ा रहैक । लोकसभ कहैत छैक जे पहिने ओहि खेतदने नदी बहैत छल । बादमे नदी अपन बाट बदलि लेलक त हमर बाबा एकगोट डबड़ा खुनाकय नदीक ओहि भागपर जाहिपर हुनक अधिकार रहन्हि भरिकय खेत बना लेलन्हि । डबड़ा कनेक नम्हर आ' गहींर रहैक । माछ खूब उबजैक । हमसभ धनकटनीक बाद ओहिमे बंशी खेलिऐक आ' पानि कम होइक त मलाहसभ उपछिकय माछ मारैक । सिंघी, बोआरीक लप्सीसभ, गैंचा , मुङ्गरी आ' दू चारिगोट बामी-अन्हइ हरेक साल भेटिये जाइक । सम्पूर्ण डबड़ाकेँ कुमुदिनी छापि नेने रहैक । बीच-बीचमे फुलायल कुमुदिनीक सोहाओन दृश्य मोनकेँ अनायासे मोहि लैक । हम जहिया कहियो ओतय जाइ बंशी खेलायसँ बेशी हमर मोन कुमुदिनीक फूलपर लागल रहैत रहय । ओहू दिन हम सोझे डबड़ेलग पहुँचल रही आ' कुमुदिनीक फुलायल फूलसभकेँ एक-एक कऽ निहारय लागल रही । माल्हो धान कटैति रहय । बीच-बीचमे ओकर नजरि हमरोदिस घुमि जाइक । ..... दू-चारि बरस पहिने हम आ' माल्हो संगहिं डबड़ादिस जाइत रही । दाइ सेहो माल्होकेँ बड्ड मानैक । हमरा अबिते माल्हो संग लागि जाय । हम बंशी खेलाइ आ' माल्हो बढ़िया बोरक खोजी करय । तहियो हमरा कुमुदिनीक फूल बड्ड नीक लागय । माल्हो चट् पानिमे पैसि जाइ आ' एकटा नीक कुमुदिनीक फूल लोढ़ि लऽ आबय । कहियो काल फूल कने गहींर आ' दूर पड़ि जाइक त ओ कहुना करची वा किछु अन्यक जोगार कऽ तानियो तुनिकय फूल घिचियेटा लैकि । ... बादमे माल्हो नमहर होइत गेलि आ' धीरे-धीरे संग देनाइ सेहो छोड़ैति गेलि । मुदा कोनो बहन्ने ओ आबयधरि जरुर । कहियो घास करयलेल खुरपी आ' छिट्टी नेने त कहियो कोनो दोसरे बहन्ने । ओ आबिकय कोनटामे ठाढ़ भऽ जाय । दलानपरसँ हम ओकरा देखऐक आ' कोनटामेसँ ओ हमरा ताकय । हमर दाइ जेना अगरजानी जेकाँ बुझि जाइक, ओकर नजरि पड़ैक त ओ माल्होकेँ बजा लैकि आ' घरेक कोनो काजमे लगा दैकि ।

ओहि दिन माल्हो हमरा एक दू-बेर देखलकि आ' मुस्कायलि । धान कटनाइ छोड़िकय ओ अपन बाऊकेर लाठी उठा लेलकि आ' किदन-कहाँदन ओहिमे बन्हैति ओ लाठी लऽ कऽ कुमुदिनीक एकगोट फूल लोढ़क प्रयत्न करय लागलि । ओकर प्रयास हमरा आनन्दित कऽ देलक । फूलकेँ ओ नहुअँ-नहुअँ घिचैति बाहर तनैति रहय कि फूल लाठीसँ छुटि पानिमे खसि पड़लैक । माल्हो छप् दऽ पानिमे कुदि गेलि आ' छताइत फूलकेँ लप् दऽ पकड़ि लेलक । एहि क्रममे एक बेर ओकर वक्ष उघार भऽ गेलैक आ' ओ धड़फड़ाकय डबड़ामे पिछड़ि गेलि । जाबत ओ अपनाकेँ सम्हारैति सभक धिआन ओकरादिस चलि गेल रहैक आ' ओ लाजे गड़ि गेल रहय । कनेक कालक बाद ओ फूलकेँ सहेजिकय आरिपर राखि देलकैकि । ओकर माय ओकर एहि क्रियाकलापपर डँटलकैकि । की कहलकैकि से त हम नहि सुनय सकलिऐक मुदा हमरा कानसँ एतबा पकड़ाएल – "ई छौंड़ी ! ... जुआन भऽ गेलैक मुदा नेनमति अखनो नइ गेलैयऽऽऽ ... । गेऽऽऽ, ... गेऽ की कहतौक लोक !" माल्हो आओर लजा गेलि आऽ सकुचाइति मुस्काइति रहलि । जखन ओहि कोलामे कटनी समाप्त भऽ गेलैक, सभ अपन-अपन बोझक संख्या गन्ती कऽ झोंटी गुहि बाबालगक बुझा देलकैक । बाबा बोझ उठाबक आज्ञा दऽ देने रहथिन्ह आ' सभ बोझक पहिल खेप उठाकय खरिहानदिस विदा भऽ गेल रहय । बाबा सेहो नहि जानि किएक किछु दूर आगू बढ़ि गेल रहथि । खेतमे माल्हो, हम आ' किछु नेनाभुटकेटा रहि गेल रही । माल्हो स्थिरसँ कुमुदिनीक फूल नेने हमरादिस आगू बढ़लि । नुआँ एखनो भीजले छलैक । भीजल नुआँ बेरिबेरि छाबा, जाँघ, डाँड़ आ' नितम्बसँ सटि जाइक । ओ कहुना-कहुना कऽ भीजल नुआँकेँ अपन अङ्गसँ अलगबैति नहुअँ हमरालग आयलि आ' फूल दैति बाजलि –"गिरहत ... ! ई आहाँकलेल ‼" एतेक कहि ओ दौड़िकय चलि गेलि रहय । हम कनेक काल त ठकुआ' गेल रही मुदा बादमे अपनाकेँ संयत कऽ नेने रही । एकराबाद माल्होसँ हमर भेँटक क्रम बढ़ि गेल रहय । गाम अबिते हम माल्होसँ भेँट करक जोगारमे लागि जाई ।

एक दिन गाम पहुँचल रही त दाइ बाजलि जे माल्होक बिआह होबय जा रहल छैक । हमरा ठकमुड़िया लागि गेल रहय मुदा हम कोनो प्रतिक्रिया नहि देलिऐक । ओहि दिन दाइ भोजन करय कालमे एकगोट छोटछिन प्रवचने दऽ देने रहय । ओकर कहब रहैक जे मौगी जातिक जीवन बाध्यता आ' मजबूरीसँ भरल रहैत छैक । जनमति, बढ़ैति आ' फुदकति अछि कतहु , प्रेम अंकुरित होइत छैक कतहु आ' फड़ धरय पड़ैत छैक कतहु । हम चुपचाप सुनैत रहलिऐक । बादमे बुझलिऐक, तखन माल्हो कोनटामे ठाढ़ रहैकि । ओ लटिकय दुबरि आ' खरही जकाँ भऽ गेल रहय । ..... साँझ जखन मुनहारि भऽ गेलैक त ओ भेटलि मुदा हाथमे एकगोट कुमुदिनीक फूल धड़बैति कहलकि –"ई एहन अन्तिम भेँट अछि । ... हम बिसरि त नइ सकब मुदा लोकधर्मक पालन त करहिं पड़त ने ! ... ई आहाँकलेल ‼ " एतेक कहैति ओ सोझे ससरि गेलि छलि । ओकर ' लोकधर्मक पालन त करहिं पड़त ने !' दाइक दिनुका प्रवचनक अंश रहैक । फूल थम्हाकय ओ सोझे चलि गेलि रहय । उत्तरक कोनो मौका ओ हमरा नहि देलकि । शायद ओकरा बुझल रहैक जे हम कहबो की करितिऐक ?!



आइ हम ओकरा भेटव । अवश्य भेटव आ' सेहो नितान्त एकसरमे .... । समयक जोगार पहिनहिं जकाँ करय पड़त । ..... बेचारी माल्हो ! हमरा मायसँ सभ किछु ज्ञात भऽ गेल अछि । कहाँदोन बिआह होइतहिं ओ बड्ड किचकिचयाहि बनि गेलि छलि । अपन मरदसँ ओकरा कहियो नहि पटलैक । कहाँ-कहाँ ने ओकरा ओकर बाप देखओलकैक मुदा कोनो असर नहि भेलैक । कहाँदोन बादमे ओकर मरद ओकरा छोड़ि देलकैक; भिन कऽ घरसँ निकालि देलकैक । ओ अपने बोनिबुता कऽ कऽ रहय लागलि आ' फेर तखन अपनआपे ठीको भऽ गेलि । ओ अपन बेटाकेँ नीक जकाँ पोसलकि । पढ़यबो कयलकि । हमर माय लगेमे ठाढ़ि शिल्पाकेँ कहैत रहैकि –"अवश्ये ओकर मरदेमे कोनो खोटखाँट छलैक हएत !" ..... आइ हम पोखरिमे नहाएब । पहिंनहिं जकाँ अबेर कऽ आ' असगरे जाएब । देखबैक जे माल्हो केहन प्रतिक्रिया जनबैति अछि ? ओ पहिंनहिं जकाँ पुरबरिया चौड़ीक पिपरक गाछतर आबिकय ठाढ़ि रहैत अछि कि नहि ? ..... हम घरमे कहि दैत छिऐक जे नास्ता भरिपोख कऽ लेलहुँ तैं आई अबेर खाएब आ' आइ पोखरिमे हेलय जायब । माय पुलकति बाजलि –"बौआकेँ पहिंनुका दिन मोन पड़ि गेलैक !" शिल्पा सेहो हमर बातकेँ स्वाभाविक आनन्दयुक्त सहजतासँ लेलीह आ' हमर बात सुनि स्नेहपूर्ण नजरिसँ देखैति हँसलीह । ..... लगभग १२ बजेतक हम छटपटाइत अबेर होबक प्रतीक्षा कयलहुँ । तकरबाद तौलिया लऽ कऽ माल्होक आङ्ननदिसक रस्ता धऽ कऽ पोखरि विदा भेलहुँ । माल्हो जेना बाट तकिते छलि, देखिते जोरसँ बाजलि – "भौजीऽऽऽ ! अबेर भऽ गेल । हम कने पोखरिमे देह धोएने अबैछी !" माल्हो हमर इशारा बुझि गेलि छलि । हम झटकारैत पोखरिदिस बढ़ि गेलहुँ । कनेक आगाँ बढ़ि पाछाँ घुमि देखलिऐक तऽ माल्हो नहुअँ-नहुअँ पोखरिदिस बढ़ैति अबैति रहय ।
हमरा पोखरिपर समय लागि गेल । पुरान ग्रामीण संगीसभ भेँटि गेल रहय । गप्प-सप्प स्वभाविके छलैक । ओहि घाटदिस तकलिऐक त माल्हो स्नान कऽ विदा भऽ गेलि छलि । हमहुँ चटपट डुबकी मारि धोती फेरि फिरि गेलहुँ । ओ पिपरक जड़िमे जल धारि रहलि छलि । हमरा देखिते बाजलि –"अखन कोनो गप नई भऽ सकत । भोरे किरिन फुटयसँ पहिंने दुधानपर आऊ !" हम यन्त्रवत् मुड़ी डोलबैत –"हँऽऽ !" कहि देलिऐक आ' ओ विदा भऽ गेलि ।

•   •   •   •

हमरा फेर भरि राति निन्न नहि भेल । छटपटाइत रहलहुँ । नहि जानि काल्हि माल्हो कोन-कोन प्रश्न करति ? ... की जबाब देबैक ?! आ' कथम्कदाचित् जौ ओ आब किछु मांगति तखन ? हमर मान, प्रतिष्ठा, एखुनकाक सामाजिक पोजीसन, देशक ब्यूरोक्रेसीमे हमर स्थान सभ किछु धधकि उठत ! सुड्डाह भऽ जायत ! कए बेर एहो मोन भेल जे मठेर दिऐक । मुदा फेर लागल ईसभ बेकारक शङ्का अछि; माल्होक बारेमे एना सोचब अन्याय हएत । ओकरा एहन किछु करक रहितैक त पहिंनहिं कएने रहैति ! नहि, ओ एहन किछुनहि करत । आ' कहुँ एहन किछु बाजति त हम स्पष्ट कहबैक –"किया चलि गेलह तौँ चुप्पे ...? एक गोट कुमुदिनी हमरा हाथमे धराकय ... ! तहिये किया ने जोर दऽ कऽ बजलह ?!" – रंगबिरंगक बात हमरा दिमागमे आबय लागल । छटपटी आओर बढि गेल । बेरि-बेरि करोट फेरैत

देखि शिल्पाकेँ किछु भय जकाँ भेलन्हि –"की कोनो कष्ट अछि ?" – ओ उठिकय बैसि गेलि छलीह । हम हुनका सुतबैत कहलिअन्हि –"नहि, किछु नहि । ओहिना नहि जानि किया निन्न नहि आबि रहल अछि । ... आईकाल्हि मर्निङ्ग वाक् सेहो छुटि गेल अछि ने ! ... आइ भोरे टहलय निकलय पड़त ।" शिल्पा आश्वस्त भऽ कऽ सुति रहल छलीह ।

हम भोरे अन्हरौखे दुधानलग पहुँचलहुँ त माल्होकेँ पहिंनहिंसँ ओतय बैसलि एकटक प्रतीक्षा करैति देखलिऐक । हमरा रस्तामे तखनतक केओ चलैत नहि भेटल छल । केओ अएबो करैत त डरे ओहि भुतहा दुधानदिस नहि जाइत । हमरा बुझल रहय जे ओ माल्हो अछि तैं नहि त हमहुँ शायदे ... ! पता नहि ओ कखनसँ ओतय बैसलि हएति ? हम अपन डेगकेँ झटकारि लेलहुँ । हमरा पहुँचिते माल्हो पक्कापरसँ उतरि निच्चा आयलि । बुझायल जेना ओकर पएरमे कादो लागल रहैक । साड़ीयो किछु भीजल सन । अन्हारमे ओतेक स्पष्टसँ त नहि देखि सकलिऐक मुदा लागल जेना ओकर चेहरापर खुशीक भाव त छैक लेकिन थाकल-ठेहिआयल सन ! जेना कोनो अभिलाषाक लेश नहि रहि गेल होइक । ओ आगाँ बढ़िकय हमरालग आयलि आ' बाजलि –" हमरा विश्वास छल, गिरहत ! ... आहाँ आयब से हमरा पूरा भरोस छल ‼ ... तइयो मोनमे कखनो-कखनो डर भऽ जाइत छल जे चाहियो कऽ नई आबि सकब की ? ... हम बहुत पछताइत रही जे बेकारे आहाँकेँ एतए बजोलहुँ । ... केओ देख लेत तखन ?"

हमरा लागल, ओ हारलजकाँ त जरुर बुझाइत अछि मुदा अखनो ओकरामे आ' ओकर चिरपरिचित वाणीमे उहए मधुरता, अनुराग तथा सम्पूर्ण समपर्णक सन्देशक भाव छैक । .....बुझायल जे माल्हो अखनो हमरे थिक ! हमसभ एखनतक दू नहि भऽ सकल छी ‼ मोन भेल ओकरा हाथ पकड़िकय अपनालग घिचि लिऐक । " त की हएतैक ... ?" – हम अपनाकेँ निफिकिर आ' निडर अभिनय करैत अनुरागपूर्वक कहलिऐक आ' अपन दुनू हाथ आगाँ बढ़ा देलिऐक ।

"नई, गिरहत नई ! आहाँक ई दुनू हाथ ... हमरा भरि जनम तड़पा देलक । ...आब दोसर जनमधरि एहि दुःखकेँ नई साँठि दिअऽ ... !" – ओ दूर हटैति आर्त्त स्वरमे बाजलि । हम सकपका गेलहुँ आ' तुरत दुनू हाथ पाछाँ घिचि लेलहुँ ।

"हम एहिलेल नहि, आहाँक सुन्दरकेँ जिम्मा लगाबयलेल आहाँकेँ एतए तक हरान कयलहुँ , गिरहत ! ..... बहुत इच्छा छल जे एकरा अहीं सन बना दी आ' तखन आहाँलग लाबी । ..... मुदा ई हमर शक्ति आ' बशक बात नहि अछि । मौगीबुते आ' तहूमे गरीब मौगीबुते ई नहि भऽ सकत । ..... हम जानकी नहि भऽ सकब । प्रयास कएलिऐक मुदा भगवतीक ओतेक आशीष नहि प्राप्त कऽ सकलहुँ । ..... हमरा आब बुझाय लागल अछि जे अपन मोनक गिरहलेल हमरा एकर भविष्यकेँ दावपर नहि लगाबक चाही । पढ़यमे बड्ड तेज अछि ई । .... गिरहत ! .... आब एकरा कतहु राखि दिऔक ! भऽ सकै त पढ़बो करय से जोगार लगा दियौ । ..... आगाँ पढ़क बड्ड इच्छा छैक । .... आहाँक सभ बात मानत । भरि जनम हम ओकरा अहींक उपमा बतओने छीऐक तैं ओ मोनसँ अहींकेँ भगवान मानैत अछि आ' मानत ! " – ओ धराप्रवाह कहैति चलि गेलि – "हमरा किछु नइ चाही ! ... आहाँक दैया हमरा बिआहसँ पहिने सभ किछु बता देने रहथिन्ह । ... बुढ़िया गिरहतनी निमनसँ समझा देने रहथिन्ह । ... हमहुँ सभ किछु खोलिकय हुनका कहने रहिअन्हि । ... हम पूरा कोशिश कयलहुँ जे आहाँक मानपर कोनो चोट नई पड़ओ ... दाग नई लागओ ! हम एकरे अपन धरम मानलहुँ । अखनो एतबे कहब

गिरहत, जे भगवान हमर धरमके रक्षा करओ ! ... सुन्दरकें हाथपर सदिखन आहाँक हाथ रहौक !! बस एतबे चाही ... हमरा !"
"माल्होऽऽ ! ... कनेक्के सुन !" – हम एक बेर फेर आगाँ बढ़क कोशिश कएलिऐक मुदा ओ बीच्चेमे अत्यन्त आर्त्त भऽ बाजि उठलि –"नइ, गिरहत ! .... आब किछु नहि !"– ओकर स्वर भर्रा गेल छलैक । हमरा ओकरासँ बहुत किछु पुछक मोन भेल रहय । एहि बीचमे कोना की भलैक ? कोना दिन बितओलकि ? आदि-इत्यादि जानक इच्छा भेल रहय । अपन विवशताक जानकारी करबैत एकबेर इहो कहक मोन भेल रहय जे यदि सम्भव होइक त ओ हमरा माफ .... ! मुदा हमरा ओकर आर्त्त आ' भर्राएल स्वरसँ डर भऽ गेल रहय जे कतहु बात ने बढ़ि जाय । तैं किछु पूछक साहस नहि भेल आ' हम अपनाकें पुनः समेटि लेलहुँ ।
ओ एक बेर फेर आगाँ बढ़लि आ' अपन डाँड़मे खोंसल खोंछिमेसँ एकगोट ताजा तुरत तोड़ल कुमुदिनीक फूल निकालि हमरा हाथमे धड़बैति बाजलि –"ई आहाँकलेल !" हम ओहि फूलकें हाथमे लऽ टकटकी लगाकय कऽ निहारय लगलहुँ आ' किछुऐ सेकेण्डकबाद माथ उठाकय तकलहुँ त माल्हो दूर झटकारैति जा रहलि छलि । ... ओकर महीन आ' स्निग्ध स्वर –"ई आहाँकलेल ! " हमरा कानमे लगातार गुँजि रहल छल ।



ढहलेल दलबदलू !

भारतसँ पहिने चन्दरक करकुटुम्बसभ अबैक तऽ कहैक – ' मोगलानसँ शरहदे नीक ! ' एकबेर ओकर पीसीक बुढ़बा ससुर आयल रहथिन्ह तऽ बाजल रहथिन्ह – अँग्रेजसभक गेलाक बाद सौंसे भारतमे अराजकता फैलल छैक। जनतामे अनुशासन नहि छैक आ भ्रष्टाचारक कारणेँ शासन अपन पकड़ जमाबयसँ असमर्थ भऽ गेल अछि। ... एहिसँ तऽ अँग्रेजे नीक छल ! ' एक्के क्षणकलेल सही, ओकर गामक लोकसभक गाल सुखसँ लाल भऽ जाइक। हँसी-ठट्ठामे सार-बहिनोईसभकेँ ओहो मोगलनियाँ कहिकय खौंझाबय आ भारतक विकृतिसभक उपमा दऽ दऽ अपन नेपालक बड़ाइ करय। मोगलनियाँसभ सहजे हरदा बाजि दैक। एक तऽ भारतक अवस्थो ओहने रहैक आ दोसर भीतरिया यथार्थ इहो जे खुट्टा तऽ ओकर ने रहैक, दोसर कतेक भोंमिअइतैक ?! ... एहन अवस्थामे सामान्यतया ओकरो तत्काल किछु गर्वक अनुभूति होइक मुदा लगले भीतरसँ हँस्सीयो उठि जाइक, सोचय लागय – ' केहन बुड़िबलेलसभ अछि ? कहुना छैक, तऽ ओतय जनताक राज छैक। धीरे-धीरे सभ ठीक भैये जएतैक आ अन्तमे नीक लैन पकड़िये लेतैक। ... कतहुँ नेपाल भारतक पड़तर करय सकत ? एहिठामक भेदभाव, निरंकुश शासन, बड़के सभकलेल आगाँ बढ़क मौका, विकराल परिणामक डरक कारणेँ बान्हल सुप्पत आ ठोरसट्टा चुप्पी, सभतरि ओकरेसभक राज, चला-चल्ती, प्राथमिकता, – ई संतापसभ की ओसभ बुझि सकत ? ... दू दिनलेल अबैत अछि, नीक-निकुत भेटैत छैक तऽ कहै छैक कि ने ... ! '

चन्दर जखन ठेठगर भेल रहय तऽ ओकर बाउ पढ़ाइ छोड़ाकय अपन गोठ*मे लगा नेने रहैक। तहिआसँ ओकर दिनचर्या गाय-महिषक थैर साफ करब, गोबर निघाँससभक ढ़ेरी लगायब, घास-भूस्सा तथा कुट्टीक ओरिआओन करब आदिसँ कोंचा गेल रहैक। साँझखन कऽ मुहँमे अन्न पड़िते आँखि झपलाय लगैक आ भोरे उठिते गर्दनपर पालो जकाँ काजसभ लदा जाइक। तैयो बाउकेँ देखिकय ओकरा लाजे होइक। अपन बाउक अधो काज ओ नहि कऽ सकय। आई लोक ओकरा कतबो मेहनती आ कमौआ कहौक ने मुदा ओकर बाउ जे रहैक से कि ओ कहिओ भऽ सकैत अछि ? आई ओ जे अछि ओकर बाउएकेर देन छैक। कोन स्कूलमे एना सिखओतैक ? हँ, बाउ मरलैक तऽ ओकरा दोब्बर भीड़ पड़ि गेलैक। आ ओकर काजक गति आवश्यकतानुसार तेजो भऽ गेलैक। ओ अपन भाई ललचनमाकेँ शुरुमे गोठमे नहि अनलक। सोचलक जे ओकरा कमसँकम पढुआ बनाबय आ तैं भिनसरसँ रातिधरि ओ गोठमे एसगरे जोताइत रहल। मुदा ललचनमा पढ़य नहि सकलकैक – लड्डू पहलमान भऽ गेलैक ! स्कूलमे मास्टरसँ लऽ कऽ बड़का जातिक स्कूलियासभ सेहो ओकरा नोकरे बुझैक। सभ फुलाकय बूड़बक बनबैक तथा नीक-अधलाह काज करबैक। चन्दर जहिआ एहि यथार्थकेँ बुझलक तहिया बेसी देरी भऽ गेल रहैक। ललचनमाकेँ स्कूलसँ निकालि गोठमे लऽ अनलक मुदा ओ लैन नहिये पकड़लकैक। चन्दरकेर दुलार आ ललचनमाक अपन आदति ओकरा पहलमाने बनाकय छोड़ि देलकैक। हँ, गोठ आ ओकर तरकारी खेतीक रखबारी नीक होइक। ललचनमा डरे छौंड़ासभ डेग नहि दैक।

चन्दरकेर बाउ ओ गोठ पहड़िया सरदारसँ किनने रहैक। देशमे कँगरेसियासभक नेतृत्त्वमे तीन सरकारक बिरोधमे क्रान्ति भेलाक बाद बहुतो पहड़िया सामन्तसभ मधेश त्यागि कऽ काठमाण्डू आ दोसर शहरदिस भागि गेल रहय। ओना क्रान्तिक बाद ओकरासभकेँ मधेशीसभ कोनो दुख देलकैक से कहियो कतहुँसँ सुनयमे नहि आयल। बैठ-बेगारीक बिरोधमे आ खड़े-बटैयाक समर्थनमे नारासभ ठीके उठय लागल रहैक। ओकरासभकेँ बुझआयल हएतैक जे आब ओ जमाना नहि रहि गेल, पहर पहिने बोरिया-

---

* *गाय-महींस पालन करए हेतु निर्मित घर-परिसर जे गामसँ फटकीमे चौड़ी-चाँचरमे होइत छैक।*

बिस्तर बान्हब ठीक ; तैं कौड़ीक मोलमे धन-सम्पत्ति बेचि चुपचाप पड़ाय लागल । चन्दरक बाउकें सेहो सस्तेमे गोठ हाथ लागि गेलैक । मेहनति तऽ खूबे करय पड़ैक मुदा गुजर बड्ड नीकसँ चलि जाइक । चारुभर चौड़ी-चाँचर, पछबारी कात बिग्घीक धार, सटले एक उखराक बहलमानी पर जंगल – हरेक सुविस्ता बूझू जेना हाथेपर । एहिसँ बेशी चाहबे की करी ? ... चन्दरक बाउ तहीसँ जिनगीभरि कँगरेसियासभक गुणगाण करिते रहल । कहियो काल गप्प चलैक तऽ सुनबैक, –" धन्य, कँगरेसियासभ जे राणासभक बिरोधमे आन्दोलन चलोलक । हथियार लऽ कऽ जान-परान आँटिकय लड़ल ! नहि तऽ कि राणा आ ओकर लगुआ-भगुआसभ ककरो जीबय दितैक ? खसी-पाठीक बाते छोड़, ककरो खेतमे तीमन-तरकारीयो तक नहि रहय दैक । लोकक सजमनि-कदीमा, खीरा-तरबूजसभ जेना ओकर आ ओकर खरुहानसभक बापेक सम्पत्ति रहैक, तेना करैक ! गामक बहु-बेटीक इज्जतक तऽ चर्चे नहि कर ‼ ... आ वहएसभ जखन राज बदललैक तऽ घेराएल नढ़िआ जकाँ सुटकल हकमय लागल । तब नेऽ अपनासभकें ओहि बुढ़बा पहड़िया सरदारक ई गोठ सस्तामे हाथ लागल ! नहि त, पैसए तऽ कहिओ देबे नहि करितौक ‼ आ भोगऽ कोना दितौक ?! पैसा रहलोपर किनक नाम लेबए तकक हिम्मत नहि भऽ सकैत !" चन्दरोपर एकर बढ़ियाँ प्रभाव पड़ल रहैक । तैं प्रजातन्त्र अयलापर ओ काँगरेस पार्टी कहिओ छोड़क सोचबो नहि कएलक ।

बीच चौड़ीमे भेलाक कारणेँ ओहि गोठमे सामान्य लोकक आबाजाही कम्मे होइक । तहिआ एखन जकाँ चोर-उचक्का सेहो फड़ल नहि रहैक । गोठक चारु कातक खेतसभ गहींर भेलाक कारणेँ केओ ओम्हर बसहुक विचार करैत सेहो सम्भव नहि रहैक । मुदा चन्दरसभकें रातियोमे रही पड़ैक । मालजालक रखबारी, भोरे उठिकय पनिपिआइ बेरतक हर जोतब आ तकरबाद थैर साफ करबसँ लऽ कऽ अन्य सभ परिचर्या करक मजबूरीक कारणेँ ओकरा ओतय रहय पड़ैक । जाबत् बाउ रहलैक बाउ आ ओ ओतय रहय । गौनाक बाद बाउ कोनो ने कोनो बहन्ने बराबर रातिमे ओकरा घर पठादैक । मोन तऽ ओकरो घरेमे सुतक होइक, मुदा बाउकें एसगरे छोड़िकए अपने घरमे सुतयमे ओकरा कोनादन लगैक ; तैं ओ आनाकानी करय । बादमे बहुत सोचि बिचारिकए ओकर बाउ एकदिन ओकरा अपन नव निर्णय सुनोलकैक आ तहिआसँ गोठपर बाउ, माइ आ ललचनमा रहय लगलैक । गामपर घरमे ओकर भन्सिआ, दैया आ रातिखन कऽ ओ रहय लागल । सभ दिन भोरे बाउलग गोठपर चलि आबय आ रातिमे किछु तरकारी आदिक जोगार सहित आङ्गन पहुँचजाय । माइयो दू दिन चारि दिनपर छुट्टी होइक तऽ दुपहरियामे आङ्गन जाइक । ललचनमा भोरे किरिन फुटिते उठय तऽ भौजीलग पड़ाजाय आ एक्केबेर अकाश रङ्गअयलेपर घुरिकय माइलग आबय । बाउक गेलाक बाद किछु दिनतक ओ आ ललचनमा गोठपर रहल मुदा बादमे ओ अपन भन्सियोकें ओतहिं आनि लेलक । घरमे दैया आ माइ रहय लगलैकि ।

ओकर गोठ बाउएकेर बेरसँ नेतासभक शरणस्थल छल । ओहिठाम ककरो रहयमे कोनो खतरा नहि रहैक । जावत चन्दर अथवा ओकर बाउ नहि बतबितैक, ककर मजाल जे केओ किछु जानि जइतैक ! तैं सतरह सालमे राजा महिन्द्रक शासन शुरु भेलाक बाद ओकर गोठ छिपल नेता आ क्रान्किारीसभक खास अड्डा बनि गेल रहैक । सभ पार्टीक नेतासभकें ओसभ ओतबे सम्मानसँ नुकाकय रखैक । बाउ रहैक तऽ अपने कँगरेसी मुदा ओकरासभकें बराबर बुझबैक जे केना सभ जनतेक लेल लड़ैत छैक । के नहि ओकरा ओतय रहल अछि ? जोशीजी, केसीजी, शर्माजी, रानजी, घिमिरेजी, लालजी, पोखरेलजी, चौधरीजी, पाण्डेजी सभ ओकर रोटी, चटनी, तीमन, दही आ माछ भरिपोख खएने छथि । कहए नहि पड़त जे सभ ओकरा खूब नीकसँ चिन्हबो करैत छथिन्ह । मुदा ०४६ सालक बाद जखन ओ बड्ड आह्लादित भऽ कऽ चिन्हल नेतासभकें भेँट करय गेल, ओकरा बुझएलैक जेना ओकर जाएब हुनका सभकें ओतेक नीक नहि लगलन्हि । प्रायः जे जाइन्ह से किछु मँगन्हि तैं ओकरो बारेमे ओसभ ओहने किछु सोचि लेलन्हि । नहि बुझि सकलखिन्ह जे ओ किछु मांगय नहि खाली भेँट करय गेल छल । पहिने ओकरा ओहिठाम अबथिन्ह तऽ ओसभ ओकरा अपन साथी कहल करथिन्ह, तैं जाइत काल ओकरा लागल छलैक जेना ओ कोनो नेता, मन्त्री अथवा शासक ओहिठाम नहि अपन साथी ओतय जाऽ रहल अछि । मुदा पहुँचलापर बुझएलैक जेना

ओ अपरझट्टमे भसिआकय पूर्व जन्मक कोनो मालिक अथवा कुलीनतासँ भरल कोनो सामन्त ओतय पहुँचि गेल होय । ओकर मोन खटा गेल रहैक । तकर बाद ओ मनेमोन निश्चित कऽ नेने रहय जे आब फेरो कहियो कोनो नेता ओतय नहि जाएत । गाममे रहत । बाउकेर बातपर चलत । कँगरेसकेँ भोट देतैक मुदा पार्टीक नामपर कोनो खटौनीमे खटय नहि जायत । खाली भोटेसँ मतलब राखत ।

लगभग सात आठ बरसधरि ओ अपन निर्णयपर अटल रहल । ओ जीवन पर्यन्त अपन एहि निर्णयसँ असली अधिकारी जकाँ सटल रहि जाइत जौं बेकसूर ललचनमा गामक चैतहा* नेतासभक जालक कारणेँ थानामे थुनाएल नहि रहीत । भेलै ई जे ललचनमा अपन सासुर बासोपट्टीसँ जनकपुर दने अबैत रहय । रामानन्द चौकपर ओकरा एकगोट छौंडा भेट गेलैक । ८/९ बरखक । कए दिनक भूखल । ललचनमा ओकरा पाउरोटी खुएलकैक । ओकर ठरठेगानसँ लऽ कऽ कोन बातक दुख भेलैक, कथिला भागल, एतएतक कोना आयल आदि-इत्यादि सभ खेसरा पुछलकैक । नहि जानि किया ओहि छौंड़ाकेँ ललचनमापर भरोस जागि गेलैक आ ओ ओकर पछोर धऽ लेलकैक । ललचनमा ओकरा अपन गोठपर लऽ अयलैक । चन्दरो सोचलक ककरो कहिकय ओकर माय-बापकेँ समाद पठा देतैक । अपने घुरा कऽ लऽ जएतैक । आ जौं नहि गेलैक तऽ माल-जालक लेल घासोभूसा कऽ कऽ तऽ सहिआरतैक । ... मुदा चैतहासभ अहूमे राजनीति खेलय लागल । अपरिचित छौंड़ाकेँ देखि गामक लोकसभ पुछय लगलैक । सोझ ललचनमा आ ओकर परिवारजन सभकेँ पूरा खेसरा सुना देलकैक । बस चैतहासभ सक्रिय भऽ गेल । चन्दर अपन लोकप्रियताक कारणेँ गाममे प्रभावकारी रहय । चैतहासभकेँ ठगठगैती आदि-इत्यादि करयमे चन्दरक कारणेँ बेश दिक्कत होइक । चैतहासभकेँ एहि भरिगर भाङ्गठकेँ ठीक करक नीक अवसर जेना हाथ लागि गेल होइक ; आननफाननमे एसपीलग उजुर पड़ि गेलैक जे ललचनमा इनडिआसँ एकगोट ८/९ बरखक बच्चाकेँ अपहरण कऽ कऽ अनलकैक अछि । एक जीप पुलिस आयल आ ओहि छौंड़ाक संगहिं ललचनमाकेँ बैसाकय लऽ गेल । लगले चन्दर एसपी अफीस पहुँचल । एसपी जेना पहिंनहिसँ सिखाओल-पढ़ाओल रहैक आँखि गुर्रैत बजलैक –“एहि बच्चाकेँ ललचनमा इनडिआसँ हाइजक कऽ कऽ अनलक अछि । बराबर इनडिआ जाइत रहैत अछि । बड़का गैंगसभक कन्टेक्टमे अछि । मुद्दा चलतैक !” चन्दर खण्डन करैत जखन अपन बातपर जोड़ देलकैक तऽ एसपी उनटे ओकरो थुनक आदेश दऽ देलकैक । भरि राति ओहो गन्धसँ भरल एक नम्बरमे पड़ल मोटका मच्छरसभक बिखाअयल डंकसभ खेपैत रहल । सुतली रातिमे ढ़नमनाइत तीनगोट पुलिस ललचनमाकेँ उपर बयान कराबय लऽ गेलेक आ एक घण्टाक बाद अधमरु बनाकय पटकि गेलैक । जिनगीमे कहिओ नहि कानल चन्दर भोकासी पाड़ि कऽ कानय लागल ।

चारि दिनक बाद चन्दर रिहा भेल । ललचनमाकेँ अड्डामे अपहरणक अभियुक्तक रुपमे पेश कएल गेलैक । एहि बीचमे चैतहासभ निरन्तर एसपी आँफिसमे दौड़ैत रहल । चन्दर सभ किछु बुझि गेल छल; मुदा ओ ओकरासभलग गिड़गिड़ायसँ नीक एक्केबेर काठमाण्डू जाएब उचित बुझलक आ ललचनमाकेँ तोक-भरोस दऽ सोझे बस पकड़ि काठमाण्डू बिदा भऽ गेल ।

▼ ▼ ▼

करीब ५ बजे भोरमे जखन चन्दर काठमाण्डूमे बससँ उतरल तऽ ओकर मोन आत्मविश्वाससँ भरल रहैक । चटपट दिसा-मैदान कऽ कऽ ओ मन्त्रीजीक डेरा बिदा भऽ भेल । संगीसभ कहने रहैक जे टैकसीमे बैसिकय मन्त्री क्वाटर कहि देलापर सोझे पहुँचा दैत छैक । ओ सहए कएने रहय । कनी पाइये ने खर्च हएतैक । ओकर भाइ तऽ नरकसँ मुक्त भऽ जएतैक ! ... मन्त्रीजी ओकर कुटुम्बो रहथिन्ह । पार्टीमे रहथि तऽ एकदम नया, मुदा पेशासँ डाक्टर आ बड़का

---

* प्रजातन्त्रक स्थापनाक तुरतबाद प्रजातटन्त्रवादी बनल लोकसभ । नेपालीक ‘चैते’क रुपान्तरण ।

नेतालग सरसनेश साँठयमे तेज होएबाक कारणेँ भाग्यशाली मानल जाइथ । जखन लोक जेलक सेलमे सोनित सुखबैत जीवनक महत्त्वपूर्ण क्षणसभकेँ निछारैत रहय ओ कैंचादिस मस्त रहथिन्ह आ आब राजनीतियोमे एहन जमा नेने छथि जे बहुतो क्रान्तिकारी हुनकर कैंचासँ त्रस्त अछि । चुनावमे टिकट हथिआबय धरि बड्ड भीड़ पड़ल रहअन्हि मुदा तकरबाद ओ ककरो कथुमे सकए नहि देलखिन्ह । .... किछु होउक, ओकरा ओहिसभसँ की मतलब ? सभ तऽ ओहने छैक । जे पछुआ गेल से पछुआ गेल । राजनीति कहाँदोन एहने होइत छैक । आब तऽ मन्त्रीजी अपन भाषणमे कहैत छथिन्ह जे ओ बाल्येकालसँ संघर्षमे लागल रहथि । नवकासभ खूब जोड़सँ थपड़ी बजबैत रहैत छैक; नहि जानि किआ बुड़बक बनाबयलेल अथवा अपन चमचत्त्व देखाबयलेल ?! ... दुर्रऽऽऽ ! ओकरा कोन काज ? जे होउक !! ओ अपन काज कराओत । बस, बेकसूर ललचनमा कहुना छुटि जाउक !

मन्त्री क्वाटरमे पहुँचलाक बाद ओकरा कोनो दिक्कत नहि भेलैक । ओतय अपन एरियाक कएगोटे भेँट भऽ गेलैक । जहिना-जहिना ओसभ करैक तहिना-तहिना ओहो करय । पीएसाहेब नाम बजाबजाकय भीतर पठबैक । किछु मुसटण्डासभ सोझे घुसि जाइक, बेरोकटोक । एहि क्रमेँ एकएक कऽ बहुतो भेँट कऽ कऽ चलि गेलैक मुदा ओकर आ किछु ओहने देहातक लोकसभक पार नहि अएलैक । पुछलापर पीए साहेब कहलखिन्ह – 'काल्हि आउ ।' ओकर मोन भीतरसँ जड़ि गेलैक । बड्ड निहोरा कएलैक, अपन मजबूरी बतओलकैक । तैयो जखन कोनो सुनवाइ नहि भेलैक तऽ ओ आक्रोशित भऽ गेल । पित्ते घोराएल मोनमे नहि जानि की की अयलैक ?! ओ बजैत चलि गेल । लोकसभ गोलिआकय सुनय लगलैक ; तखन जाऽ कऽ भीतरसँ बजाहटि भेलैक । गमछासँ घाम पोछैत चन्दर भीतर गेल ।

मन्त्रीजी आ दू गोट जिल्लेक माननीयजीसभ मिठाई खाइत रहथिन्ह । मन्त्रीजी कनेक रुखाएल मोनसँ कहलखिन्ह –"के छी, अधिकारी ? आउ, बैसू !" ओ एकगोट चकटीपर कातमे बैसि गेल । कनेक कालक चुप्पीक बाद मन्त्रीजी आगाँ कहलखिन्ह –" की बात हइ ? कैला हल्ला करै छलीअऽ ?"

" जी, जीऽऽ ... नहि, हल्ला कहाँ कइलीअ ! मन्त्रीजी हमरा बड़का समस्या पड़ल अछि । ... लोक दुखे आ बेगरते ने अबैअऽऽ ! ... हमर भाई ललचनमा ..." – ओ अपन बात पूरा करीत ताहिसँ पहिंनहिं मन्त्रीजी बिफरि उठलखिन्ह –" हँ, हम कर्जा खएने छी ? ... जे भरि दिन आहाँसभक ..... उखारैत रहू । यहए एगो धन्धा है । .... हम देशभरिके मन्त्री छी, देश भरिके ! ... आहाँ हमर जीमदार छी ? " – मन्त्रीजी आँखि गुर्रैत रसगुल्ला गटकैत कहलखिन्ह – " आहाँकेँ भेँट नहि देत तऽ हल्ला करबैक ! ... एना जे करबैक तऽ एक्के गर्दनियाँमे गेट टपा देत !!" बेचारा चन्दर सकपका गेल । निर्दोष ललचनमा थानामे नहि रहितैक तऽ ओ किन्नहुँ एहन लब्ज सहय नहि सकैत । ओ कहुना अपनाकेँ सम्हारलक । मन्त्रीजी अन्ट-सन्ट कहैत रहि गेलखिन्ह मुदा ओ कोनो उत्तर नहि देलकन्हि । जिल्लाक माननीयसभक लेखेँ जेना घनसन ! चुपचाप रसभरी घोंटैत रहलाह । जखन सभ कहिनी समाप्त भऽ गेलन्हि तऽ अन्तमे थाकिहेरि कऽ मन्त्रीजी चन्दरकेँ अपन बात कहक अनुमति देलखिन्ह । एक बेर तऽ चन्दरकेँ भेलैक जे किछु नहि कहय, चुपचाप निकलि जाय । मुदा ललचनमा खातिर ओ सहि लेलक, अपमानक विष गुम्मे कण्ठतरससारि लेलक । मन्त्रीजीकेँ सम्पूर्ण विवरण सुनोलक आ ललचनमाकेँ छोड़ा देबक अनुरोध कएलक । बजतै-बजैत ओकर आँखि नोरा गेल रहैक, मुदा मन्त्रीजी सहानुभूति देखाबक बदला चिकरलखिन्ह, –"हमरा सभ मालूम हय । शिवा फोनसँ बता देने हय । आहाँक भाई बदमाशसभक चक्करमे रहै हय । दुइये दिनपर इनडिआ जाइ हय ! ... हम एहन गलत काम नइ करैत छी ।" सटले बैसल माननीयसभ मन्त्रीजीक बातमे हँमेहँ मिलबैत कहलखिन्ह –" मन्त्रीजी, एहनमे भूलिओ कऽ नहि पड़ब ! ... ईसभ अर्न्तराष्टीय गिरोहसभसँ मिलल होएत । ... एकर भाई खूँआर हइ । बुझली !" चन्दरकेँ बकझक लागि गेलैक । ओ सफाइ देबक कोशिश कएलक मुदा मन्त्रीजी पीएकेँ बजाकय आदेश देलखिन्ह –" हटा, एकरा । ... हमरा बहुते काम हय !" आश्चर्य आ दुखसँ चन्दरक आँखि फाटि गेलैक । घेँट निहुराय कनहापर गमछा धऽ चुपचाप निकलि गेल । पीड़ा, क्षोभ आ निराशासँ मोन दहकि उठलैक ।

लजमे पहुँचिकय चन्दर धम्म दऽ बिछानपर पैड़ गेल । आँखिसँ बहैत नोर थम्हक नामेँ नहि लैक । आईतक ओकरा बाउकेर कोनो बात झूठ नहि लागल छलैक । ओकर बाउ बराबर कहैक – 'जनतालेल जान परान आँट करयबला सभ दिन जनताक काम अओतैक ।' मुदा कहाँ अएलैक काम ? तऽ की ईसभ जनताकलेल जान परान आँटयबलासभ नहि अछि ?! हे भगवान ! आब ललचनमा कोना छुटत ? .... नहि जानि कनैत-कनैत कखन चन्दरकेँ आँखि लागि गेलैक । रातुक जगरना आ थाकल निराश मोन । एक्के बेर लगभग ५ बजे साँझमे उठल । बड्ड जोर भूख महशूस भेलैक । हाथ-मुहँ धो कऽ ओ निच्चामे दू गोट समोसा आ छोला खएलक । बैचैन मोन । कतहुँ कोनो बाट नहि देखाइक । ओ सोझहिं पशुपति मन्दीरदिस बढ़ि गेल । दर्शन कऽ कऽ पूरुब मुहँ घुमि सीढ़ीपर बैसि गेल आ टकटकी बान्हि बाबाक दर्शन करैत लोकसभपर देखय लागल । मोन भेलैक, एकबेर जोड़सँ कानय आ बाबाकेँ पूछैक, इहए छह तोहर न्याय ? बेकसूर कैदक नरक भोगय आ ठगबासभ राज करय ? ... तखने ओकर देहपर केओ हाथ धएलकैक । ओ पलटिकए तकलक । पाछाँ ओकर बाउक दोस जीबछ महाजन ठाढ़ छलैक आ चन्दरसँ आश्चर्य मिश्रित स्वरमे पुछि रहल छलैक –" चन्दर, कहिआ अएलह ? ... एहिठाम एना गुमसुम किया बैसल छह ?" चन्दरकेँ गड़ाबकुर लागि गेलैक, कहुना कऽ बाजल –" काका, की ....." ओ आगाँ बाजि नहि सकल । जीबछ महाजनकेँ अन्दाज भऽ गेलैक जे चन्दर कोनो विपत्तिमे फँसल अछि । ओ चन्दरलग कातमे बैसि गेलैक आ ओकर पीठ हँसुतए लगलैक । धीरे-धीरे चन्दर जीबछ महाजनकेँ सभ किछु सुना देलकैक – ललचनमाक गिरफ्तारीसँ लऽ कऽ मन्त्रीजीक व्यवहार तकक सम्पूर्ण कथा ओ विस्तारसँ बता देलकैक । सभ किछु सुनि लेलाक बाद जीबछ महाजन चन्दरकेँ हाथ पकड़ि कऽ उठबैत कहलकैक –" चल , उठ हमरा घरे चल बौआकेँ कहबैक । जरुर ललचनमाकेँ छोड़ा देतैक ।"

" डाक्टर छैक । उ कोनो नेता छइ ?"– चन्दर आश्चर्यसँ पुछलकैक ।

"कोनो नेते खाली लोककेँ चिन्हैत छैक । ...चल, हमरा घरे ! आइजी-डीआइजी बराबर अबैत रहैत छैक । ललचनमाकेँ निश्चिते छोड़ा देतैक, हमर बौआ !"– जीबछ महाजनक विश्वाससँ भरल स्वर चन्दरमे प्राणक संचार कऽ देलकैक आ ओ ओकर पाछाँ लागि गेल ।

तखन डा. रामपसाद घरेमे रहैक । बड्ड आदरसँ बैसओलकैक । चन्दरक सभ बात बुझलाक बाद रामप्रसाद कनेक मुस्काइत बाजल –" तौँ छह कँगरेसी आ हम छी पंचक बेटा । ... कँगरेसक हाल तऽ देखिये लेलहक । कँगरेसकेँ तोरासभक जरुरी नहि छैक । ... ललचनमाकेँ हम छोड़ा देबो । ... छोड़ा तऽ देबौ, लेकिन तोराऽऽ हमर बाबुक पार्टीमे मिलय पड़तो ।" कनेक काल तऽ चन्दर असमंजसमे पड़ि गेल, राम प्रसादक एहन शर्तक ओकरा अन्दाज नहि छलैक ; तथापि ललचनमाक रिहाइकेर आश ओकरा हिला देलकैक आ ओ मुड़ी डोला देलक । रामप्रसाद तुरन्त फोन उठओलक आ नम्बर मिलाकय बाजय लागल, –" हेलो, के बजैत छी ? ... पीए साहेब ? कतए छथि साहेब ? निकलि गेलाह अखने तुरन्ते !! ... कनेक गप्प नहि भऽ सकैत अछि ? ... काज ? ... धनुषामे पकड़ाएल एक आदमीकेँ छोड़बक अछि । ... कथी कएने छैक ? ... खून ! ... नहि छुटतैक ? ... हम कहबैक तऽ छुटतैक । अच्छा ठीक छैक । कोनो खास बात नहि । ... अपहरण मुद्दा लगा देने छैक, मुदा आदमी छैक बेकसूर । कँगरेसीसभक षडयन्त्र । .... अच्छा, ठीक छैक । हम भोरे डेरामे फोन करबन्हि । ... आहाँ रातिमे कहि देने रहबैक । ... तऽ ठीक छैक । एखन रखैत छी ।"

चन्दर ओकर भाव-भंगिमासँ चकित छल । ओकरा बुझा गेलैक कँगरेसीसभ उपरे-उपरे उड़ैयऽऽ । तरे-तरे तऽ अखनो असली शासन पंचेसभक छैक । खैर, किछु होउक ?! कहुना लालचन छुटि जाय ! रामप्रसाद चन्दरकेँ भोरे आबयहेतु कहलकैक आ ओ प्रणामपाती कऽ लज लौट गेल ।

चन्दरकेँ रातिमे निन्न नहि भेलैक । भोरे अन्हरौखे उठि गेल । दिसा-मैदान कऽ कऽ सबेरे रामप्रसाद ओतय पहुँचल । राम प्रसाद जीबछ महाजनसंगे बतिआइत रहय । चन्दरकेँ देखिते फोन लगाबय लागल । सौभाग्यसँ फोन तुरन्ते लागि गेलैक –" हेलो ! आइजी साहेब ? .... हँ, हँ जी ! ... अच्छा छुटि गेलैक ! ... धन्यवाद । बेचारा निर्दोष गरीब आदमी ... अपनेकेँ रातियेमे जानकारी भेटल । ... रातियेमे एसापीकेँ कहि देलिऐक । ... अखने खबरि आयल छल ! ... धन्यवाद ! बहुत-बहुत धन्यवाद !! ...नमस्कार ।"

"लालचन छुटि गेलह । पीए रातियेमे कहि देने रहैक । आईजी साहेब तखने एसपीकेँ कहि देलकैक ।" – रामप्रसाद मुस्की छोड़ैत कहलकैक –" भोरे छोड़ि देलकैक । आइजीकेँ खबरो आबि गेलैक । ... आब जाऽ गामपर लेकिन बाबुक पार्टीमे रहिअह !"

" से तऽ एकर बाउ हमर दोस, रहयलेल कतौ रहौक सभ बेर हमरेसभकेँ भोट देलकैक । " – जीबछ महाजन चन्दरक पीठ ठोकैत कहलकैक ।

चन्दर लालचनक रिहाइक कारणेँ खुश रहय । पार्टीक बारेमे वचन दऽ देने रहैक तैँ मुकरक बात तऽ रहैक नहि तैयो कनेक सम्हारैत बाजल –" काका, हम तोरा पार्टीमे रहबो मुदा प्रजातन्त्रक बिरोधमे नइ जइबो । बाउ कहैक, प्रजातन्त्र जरुरी हइ !"

"धुर बताह, आ हमरा प्रजातन्त्र नहि चाही ? आब हमहुँसभ बुझि गेलियै जे प्रजातन्त्रमे सभक हित छैक ।" – जीबछ महाजन चन्दरप्रति दुलार दर्शबैत कहलकैक ।

" खैर, आब तोहर धर्म जानओ । हम अपन कर्त्तव्य तऽ कऽ देलियो, तोरा जे नीक लागओ से करिअह !" – रामप्रसाद हँसैत कहलकैक, –"आब जाह ! आइये गामपर चलि जइअह । ... आ नहि दोसरो कोनो काम हौ तऽ...... ।"

"नहि आब कोन काम रहत । हम तोहर गुण नहि बिसरबो, बौआ ! "– ओ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि लेलकैक । आ फेर दुनूसँ बिदा लऽ फिरती बसक टिकटलेल निकलि पड़ल ।

गामपर पहुँचल तऽ मालूम भेलै जे गामक लोककेँ पहिनेसँ सभ बात बुझल छैक । चन्दर काँगरेस छोड़ि देलक से सभतरि पसरि गेल छैक । लोक आश्चर्यमे अछि जे चन्दर दल बदलक ? चन्दर अपने सेहो आश्चर्यमे अछि जे आखिर ई सभ खेसरा लोककेँ बतओलकैक के ? जीबछ महाजन ?!

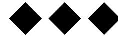
▼ ▼ ▼ ▼

धीरे-धीरे चन्दर ठीके जीबछ महाजनक पार्टीमे चलि गेल । गाममे एकर हल्ला बिहारि जकाँ पसरि गेलैक आ ओ एकर खण्डन कऽ नहि सकैत छल । ओकरा लगमे चुप्प रहक अलावा दोसर कोनो विकल्प नहि रहि गेल छलैक । चैतहासभ सेहो आओर जोरसोरसँ एहि बातक प्रचार-प्रसारमे लागल छलैक । ओसभ मुर्गो कटलक । कहाँदोन दारुमे मस्त एकटा चैतहा बजैत रहैक –"पहिने बात-बातमे बजैत छल । खाली टाङ्ग अँड़बैत रहैत छल । सार, एक्के बेरमे सन्ते भऽ गेलाह ! ... आब बाजत नहि आ बाजत तऽ पंच कहि कऽ नीमनसँ ठीक कऽ देबैक ।" चन्दरकेँ केओ किछु तऽ नहि कहलकैक मुदा लोकमे चर्चा रहैक –' केहन बकलेल अछि ?! दलबदल करबो कएलक तऽ कमनिस्टे बनि जाइत । किछु भेटक आशो रहितैक । ... बकलेल अछि ! '

शुरुमे ओकरा जीबछ महाजनक पार्टीमे दिक्कत भेलैक । कोनो बैठक वा परपंचायतमे नहि जाय चाहैक मुदा जीबछ महाजन ओकरा छौड़ैक नहि फुसलापनिआ कऽ लैये जाइक । अन्तमे ओहो अभ्यस्त भऽ गेल आ सभतरि जाय लागल । एहि क्रममे ओकरा लागय लगलैक जे ओ छोट समस्याक निदानक लेल अपन सम्पूर्ण आस्था एवं अहमियतक बलिदान कऽ देलक अछि । ओकर बाउ कतेक गहींरतक सोचैक आ बुझैक तकर बोध ओकरा सदिखन होबय लगलैक । ओ अपनाकेँ गद्दार बुझय

लागल । अपन निर्णयप्रति सभसँ बेशी क्षोभ आ पश्चाताप ओकरा तहिआ भेलैक जहिआ ओकर कानमे पड़लैक जे राजा एकबेर फेरो संविधानकेँ ताकपर राखि अपनाकेँ सर्वोच्च घोषित कऽ देलक अछि तथा देखाबयलेल प्रजातन्त्रक रट तऽ लगबैत अछि मुदा तरेतर सम्पूर्ण शासनपर अपन कब्जा जमा लेलक अछि । देशक कुञ्जी आब फेर पुरनका पंचसभक मण्डलीक हाथमे आबि गेल छैक । जनताक मुहँपर फेरो ओहने ठोरसट्टा चुप्पी लटकि गेल छैक । ... चन्दरकेर मोन औंनाय लगलैक । ओ गुमसुम रहय लागल । रेडियोमे जखन जुलुस आ जनताक प्रतिरोधक समाचार सुनय देह ओकरो फर्फरा उठैक । प्रजातन्त्र आ बिनु प्रजातन्त्रक फरक ओकरा नीक जकाँ देखएमे आबि रहल छलैक । ओकरा कए बेर एहन प्रदर्शनसभमे भाग लेबक मोन भेलैक मुदा कोना जाओ ? लोक फेरो दलबदलू कहतैक ? गाममे कहतैक जे चन्दर बेठेकानी अछि । बेठुआ कहतैक लोकसभ ओकरा ! ... आ ओ अपन इच्छाकें दबोने रहल ।

कतेक दिन दबबितैक ओ अपन हृदयक असन्तुष्टिकेँ ? बरोबरि लहरैत पश्चातापक आगिक पीड़ाकेँ ?! बाउक सीख विपरितक सम्झौताक टभकैत घावक सन्ताप नेने ओ कतेक दिन अपन छातीमे उठैत उद्वेगक लहरिकेँ रोकितैक ? अन्ततः नहियेँ रोकि सकल । ...ओहि दिन अपन भातिजकेँ लऽ कऽ जनकपुर अस्पताल गेल रहय कि बड़का जुलुस निकललैक । प्रजातन्त्रक पक्षमे नारा लगबैत जुलुस बजारदिस बढ़ैत जाऽ रहल छलैक । चन्दर बताह जकाँ ओहिमे कुदि गेल आ कसल मुट्ठी भँजैत नारा लगाबय लागल –"प्रजातन्त्र जिन्दाबाद ! जिन्दाबाद !! जिन्दाबाद !!!" "तानाशाही मुर्दाबाद ! मुर्दाबाद !! मुर्दाबाद !!!"

▼  ▼

सौंसे गाममे पसाही लागल रहैक । यत्र तत्र सर्वत्र ओकरे चर्चा – चन्दर फेरो दल बदलि लेलक । ओ गाम आयल तऽ कतेक सुना कऽ बजलैक –"चन्दर बुड़बके नहि गुड़गोबर अछि । ... जहिआ कँगरेसक राज रहैक ई पंचसभमे मिलि गेल आ एखन पंचसभक राज फिरलैक अछि तऽ कँगरेसमे भसिआ गेल । कनेको जेना बुधि नहि होइक । ढ़हलेल दलबदलू !" चन्दर तिलमिला गेल रहय । तामसो भेलैक । मुदा तात्काल ओ अपनाकेँ संयत कऽ लेलक । चाहे आब किछु होउक, लालचन वा ओ स्वयं जेलमे किया ने कोंचा जाउक – ओ प्रजातन्त्रक पक्षमे नारा लगएबे करत !

◆◆◆

करी कोब़हाम

ओहि वर्कशपमे जखन करी कोब़हाम पीयर ट्रेनिङ्गक सहजकर्त्ताक रुपमे प्रवेश कइलीह तऽ हमरा बड्ड नीक लागल । करी कोब़हाम – अफ्रिकी मूलक कारी महिला, अफ्रिकी हिसाबसँ अत्यन्त सुन्नरि अर्थात मोट ठोरबाली नीक गढ़निक मालकिन । केशक सज्जा सेहो अफ्रिकीये स्टाइलक – आकर्षक आ अपने ढ़ंगक विशिष्ट । मुदा देह बड्ड भारी ! हमरा जनिते ११० किलोसँ कमक तऽ ओ कथमपि नहि छलीह हएति ।

पहिने तऽ हुनकर अस्वाभाविक मोट शरीर देखि हमरा किछु निराशा जकाँ भेल रहय जे सम्पूर्ण वर्कशपमे एकहिटा कारी महिला आ सेहो एतेक भीमकाय ! मुदा किछुए क्षणमे ओ सभक मोन मोहि लेलन्हि, जाहिमे हमहुँ एकटा निश्चिते रही । फैसिलीटेशनक हुनकर जीवन्त आ मनोरंजक शैली सभ पार्टीसिपेन्टकें अपन फ्यान बना लेलक । जखने बुझाइक जे विषयक गम्भीरता आब सहभागीसभकें कनेक गम्भीर जकाँ बना देलक अछि, करी एहन ने प्रसङ्ग लारि देथिन्ह अथवा कोनो गीत उठा देथिन्ह जे हँसैत-हँसैत लोकक पेट फुलि जाइक । कोनो गीत उठाऽ ओ सिद्धहस्त डान्सर जकाँ नाचय लगथिन्ह । ओतेक मोट महिलाक फूर्ति आ डान्स देखि हमरासन बहुतोक जीभ आश्चर्यसँ दाँततर चलि गेल । ... आ खूबी इहो जे हरेक प्रसङ्ग फेर घुमाफिराकय विषयसँ सम्बन्धिते होइक ।

टी-टाइम भेलैक तऽ हम निश्चित कऽ लेलहुँ जे करीसँ अपन सम्बन्ध नीक बनाएब तथा एहिलेल एखनेसँ प्रयत्न शुरु कऽ देब । हिनक जीवन्तता एवं रोचक शैलीक गुड़ अपनाएब । मुदा करीक प्रतियेँ सभक आकर्षण ओतय हमरा बढ़ले देखनामे आयल तैँ डरो भेल जे कतहु सभ खूब महत्त्व दऽ देलकन्हि तऽ ओ फेर गौरवे आन्हर ने भऽ जाथि । हम एहि गुनधुनमे ओझराएले रही कि करी अपने हमरा टेबुलपर अइलीह आ स्लो डान्सक चालिमे चलैति मुस्काइति हमरा पुछलीह, –“हाय, सितेश ! ... की हम आहाँक संग दी तऽ कोनो हर्ज ?”

“हमर सौभाग्य हएत !” – हम आह्लादित होइत कहलिअन्हि, – “आहाँक संगक आनन्द के नहि लेबय चाहत ?”

“हँऽऽ, ठीके ?! ... की खाली फुलबयलेल कहैत छी ?” ओ अपन भौंहकें उपर ठेलैति बजलीह ।

“निश्चित ! एकदम निश्चित !! ... हमरा तऽ एहिमे कनेको शंका नहि अछि । ... आ जे केओ हमर अन्दाजक विपरित जाएत ओ निश्चिते बेवकूफ हएत !” करीक रेस्पोन्ससँ उत्साहित होइत हम कहलिअन्हि, –“आइये देखैत छी जे आहाँ अपन प्रस्तुतिसँ लोककें मुग्ध कऽ देने छलिऐक ।”

“आह, धन्यवाद ! आहाँक प्रशंसा हमरा उत्साहित कएलक ।” – करी मुट्ठी बान्हि अपन शैलीमे अपन सफलतापर खुशी व्यक्त करैति बजलीह, –“एहिसँ हमरा आओर उर्जा भेटत ।”

“आब आओर उर्जा कतए राखब ? ... पहिनहिंसँ आहाँ लबालब छी ।” हम अपन प्रयासकें आओर दृढ़ करैत बजलहुँ ।

“आहाँ रियली ग्रेट छी ।” ओ हाथ जोड़ि उठैति बजलीह, –“समय भऽ गेल । आब चली । ... आइ साँझमे भिलेज रिजोऽटमे पार्टी हएत । कतहु चलि ने जाएब । अवश्य आयब । ... आ आओर गप्प ओतहि करब ।”

हमहुँ साँझक पार्टीमे पहुँचक प्रतिज्ञा करैत वर्कशप-हॉलदिस डेग बढ़ा देलहुँ ।

♦ ♦ ♦
♦

वर्कशप ब्रेकफास्टक तुरत बादसँ साँझधरि लगातार होइक । बीच-बीचमे टी-टाइम आ लंचलेल एक घण्टाक ब्रेक । सभ दिन साँझखन कऽ कोनो नीक नया होटेलमे सहभागीसभकें डिनर वास्ते लऽ गेल जाइक, जकरा ओसभ पार्टी कहथिन्ह । शायद डिनरकें आओर मनोरंजनपूर्ण आ रिलैक्सिङ्ग बनाबयलेल । भरि दिनक जहद्दमी मानसिक परिश्रमक पश्चात् ओकर आवश्यकतो रहैक । ... सभ आनन्दो लेय ।

हम सभ पार्टीमे शामेल होइ । करी सेहो सभ दिन संगहिं रहथि । हमरासभमे नीक दोस्ती भऽ गेल । पार्टीमे हल्का पेय सामान्य रहैक । हम तऽ एकाध पैग ह्विस्कीये लेनाई पसिन्न करी । मुदा करी सभ दिन अपन हाथमे कोक वा ओही रंगक कोनो ठंढ़ा जकाँ नेने हमरा लग आबथि । ओहिमे पहिनहिंसँ किछु मिलायल रहैत छलैक कि नहि से नहि जानि मुदा हमरा सामनेमे ओ कहियो हार्ड ड्रिङ्क अथवा बियर नहि लेलन्हि । एक दिन हम ड्रिङ्क सर्भ करैत बैरादिस हाथ बढ़ा कऽ इशारा सेहो कएलिअन्हि मुदा ओ साफ इनकार कऽ देलीह –"महिलाकें ड्रिङ्क नहि लेबाक चाही ।" हम लज्जित भऽ गेल रही मुदा आब बुझाइत अछि ओ लैतो छलीह हएति तऽ शायद हमरा ई भान होमय नहि देबय चाहैति छलीह जे ओ लैति छथि । अथवा, भऽ सकैत अछि ओ हमरा बताबय चाहैति छलीह जे एतुका समाजक धारणा अनुसारें सम्झौता कएल जाऽ सकैत अछि ।

ओहि दिन ओ नहि जानि किया हमरा पुछि देलीह, –"आहाँ अपन बच्चासभक बारेमे नहि बतओलहुँ ?"

"तीनटा बच्चा अछि हमरा, एकटा बेटी आ दूटा बेटा ।" हम फटाफट बतबैत चलि गेलिअन्हि, –"तीनू एखन पढ़िते अछि ।"

"जेठ बेटा अछि की बेटी ?" करी अपन स्वाभाविक शैलीसँ कनेक शान्त आ ठंढ़ाएल स्वरमे पुछलीह ।

"जेठ बेटी अछि । अर्थशास्त्रमे एम.ए. कएने अछि । यूएनडीपीमे काज करैत अछि । अही साल ओकर कन्यादानो कैलिऐक अछि ।"

"अच्छा तऽ आहाँक जेठ सन्तानक विवाहो भऽ गेल अछि ?!" करी ठीके आश्चर्यित भऽ गेल छलीह ।

" आ आहाँक बच्चासभ ?" हमरा मुहँसँ निकलि गेल ।

"ओऽऽ ... ! हम अविवाहित छी ।"– ओ नाम साँस फेँकैत बजलीह । हमरा लागल, हमर ई प्रश्न ठीक नहि छल । हम अपनाकें सरिआबक कोशश करैत बजलहुँ – "एकर मतलब आब निश्चिते जल्दी विवाह करब । ... हमरासभमे तऽ जल्दी भऽ जाइत छैक । माये-बाप मिलाकय जोड़ि दैत छथिन्ह । ... अहाँसभ देखि-परिखि जीवनसाथी चुनैत छी । दूल्हा तऽ खोजनहिं हएब ?"

"हम चाहैत छी जे हमरालेल नीक दूल्हा अहीं खोजि दिअऽ । ...आइ मीन ... मिलाकय जोड़ि दिअऽ !" ओ अपन चीर-परिचित शैली लौटाबक प्रयत्नमे हँसैति बजलीह ।

"आहाँसंगे केओ जीवन बिताबयलेल लालायित रहत ।" हम करीक आत्मविश्वासकें बढ़बक चेष्टा करैत कहलिअन्हि ।

"सोचैत छी जे आब विवाह नहिये करी सएह नीक ।" करी जेना धम्म दऽ नीचा खसि पड़लि होथि ।

"नहि, विवाह करब आवश्यक थीक । विवाह जाधरि नहि होइत छैक लोक पूर्ण नहि होइत अछि " – नहि जानि किया हम प्रतिकार करय लगलिअन्हि आ बहुतोक नाम लैत कहलिअन्हि–" एहि सभक महीन अध्ययन करबैक तऽ कतहु ने कतहु किछु कमी एहन बुझना जाएत जकर कारण विवाह नहि करबे थीकै । शुरुमे लोक .... "

"एकदम ठीक कहलिऐक । तैँ तऽ हम अपूर्ण छी !" ओ पएरसँ फर्शकेँ घसैति बजलीह ।

"नहि, हमर तात्पर्य से नहि छल ... !" – हम तपाक दऽ माफी मांगक लहजामे प्रस्तुत भेलहुँ ।

"आहाँ एकदम ठीक छी ! ... वास्तवमे हमरो स्थिति एहने अछि । शुरुमे हम आलटाल करति गेलिऐक । विवाहक महत्त्व हम बुझए नहि सकलिऐक । आब बुझैत छिऐक तऽ दुल्हा भेटब कठीन अछि । ... ...फेर विवाहसँ आब कोनो फयदो नहि । " ओ निचा तकैति बजलीह –"आब तऽ जीवनधरिक लेल संगीयो भेटब कठीन अछि !"

"ई आहाँक सोचब मिथ्या थीक । पहिने आहाँ अपन मोन तऽ बना लिअ आ फेर देखिऔक जे कतेक ..... " – हम कुर्सीपर नीक जकाँ बैसैत बजलहुँ ।

"नहि, आब ई सम्भव नहि अछि । महिलासँ प्रकृति एकटा भेदभाव कएने छैक । भेदभावक शिकार जे होइत अछि सएह एकर टीसकेँ बुझि सकैत अछि । आहाँ नहि बुझि सकबैक । ... चालीस-पैंतालिसक बाद महिला बच्चा नहि जनि सकैत अछि । जौं मातृत्त्व नहि भेटत तऽ विवाहक कोन अर्थ ? ... आ फेर जे हमरा अपनाओत ओकरो तऽ सन्तान चाही ! ... मानि लिअऽ जे केओ अहूक परित्याग करय चाहत, तकरा फेर हम अपन सुखक खातिर किया हरान करिऐक ! " एतेक कहैति करी चुपचाप उठि टहलि देने छलीह । आ अकबक हम करीक ओहि महीन पीड़ामे ठेला गेल छलहुँ ।



सिकन्दर डोम

केओ सिक्कड़ि ठकठकओने रहैक । वर्माजी केबार खोललन्हि त बरण्डापर हाथ जोड़ने मुस्काइत सिकन्दर ठाढ़ छल । केबार खुजिते ओ वर्माजीक पएर छुबैत बाजल,– "परनाम, सर !"

वर्माजीक मोन भीतरसँ आह्लादित भऽ गेलन्हि, हर्षित होइत कहलखिन्ह,– "केऽऽ ? सिकन्दर ! वाह !! ... जीबू ! नीके रहू !! ...की हाल-चाल छौक रौ ? आऽ ...आऽऽ ! भीतरे आऽऽ !!" ।

"जी, सभ निमने हइ ! " – सिकन्दर भीतर प्रवेश करैत श्रद्धापूर्वक बाजल । वर्माजी ओतय अबितैं ओकरा जेना स्वर्गक आनन्द भेटय लगैत होइक । ओ भीतरसँ प्रफुल्लित भऽ जाइत अछि । इहए त ओ स्थान छैक जतए ओ सभसँ पहिने प्रवेशक योग्य मानल गेल रहय । एहिलेल वर्माजीकेँ जे कष्ट भोगय पड़ल रहअन्हि से की ओकर आत्मा कहियो बिसरि सकतैक ?! समाजसँ तिरस्कृत होमय पड़ल रहअन्हि । माता-पिता हिनका ओतय अयनाइ-गेनाइ तक छोड़ि देने रहथिन्ह । स्कूलक मास्टरसाहेबसभ हिनका महान समाज सुधारक कहि व्यङ्ग कसथिन्ह । तथाकथित बड़का लोकसभ भोजभातमे नेओत देनाइ छोड़ि देने रहन्हि । संयोगसँ वर्माजी कोनो बेटीक पिता नहि रहथि नहि त बिआह-दानमे सेहो बेश परिश्रम करहिं पड़ितन्हि आ नहि जानि कतेक मूढ़सँ अपमानित सेहो होमय पड़ितन्हि । मुदा बादमे ओ युवकसभक पसिन्नक सर बनि गेल रहथि आ हिनक चेलासभ जतए गेल ततए सामाजिक आन्दोलन, समाज सुधार आ प्रगतिशीलताक पक्षपाती बनल रहल ।

सिकन्दर वर्माजीक पकिया चेलासभमेसँ एक अछि । डोम होइतहुँ ओकर बापकेँ बुझाय ओकरा शिक्षितो त वएह बनोने रहथिन्ह । सिकन्दर हिनक प्रयासक सजीव उपमा अछि तैं एकरा देखि हिनका मोनमे संतुष्टि आ आत्म-गौरवक अनुभूति होइत छन्हि । अपन चेलासभकेँ देखिते हिनक ज्ञानक बखारी खुजि जाइत छन्हि, स्वचालित मशीन जकाँ धाराप्रवाह उझलय लगैत छथिन्ह । अपन विचारकेँ कार्यान्वयन करयबला वाहकसभकेँ पाबि ओ हड़बड़ा जाइत छथि आ कोनो बातपर साधिकार आख्यान देमय लगैत छथिन्ह । चेलोसभ विनम्रतासँ गुरुक उक्तिसभकेँ तहिआबयमे व्यस्त भऽ जाइत अछि ।

"एकदम ठीक छेँ नेऽ ? ... आ धिआपुतासभ ?"– वर्माजी बैसैत बजलाह –" सभ मस्त छौक नेऽ ?"

"जी, सभ ठीक हइ । ... अपनेक आर्शीवादसँ सभ मस्तसँ हइ ।"– सिकन्दर अपन स्वाभाविक सहजतामे आओर विनम्रता घोरि जबाब देलकन्हि ।

"पढ़बैत छिही कि नेऽ ?" – वर्माजी आगाँ पुछैत छथिन्ह ।

"जी, ... अखनु बच्चे हइ !" – सिकन्दर वर्माजीक प्रश्नपर कनेक आश्चर्य मिश्रित भावेँ उत्तर दैत अछि ।

" सैह तऽ ...देखही, हमहुँ आब कोना बिसरि जाइत छिऐक ! आब उमेरक प्रभाव स्पष्ट देखयमे आबय लागल अछि ।" – वर्माजी अपनाकेँ सम्हारैत कहलखिन्ह,–"अच्छा, ठीक छैक । ... मुदा जरुर पढ़बिअहीक !"

"जी, ... पढ़अएबै की !"– सिकन्दर तुरत अपन प्रतिबद्धता जनओलक ।

"पढ़ाइसँ लोकमे कतेक परिवर्त्तन अबैत छैक, आत्मविश्वास बढ़ि जाइत छैक, समाजमे सम्मान भेटैत छैक, आदि-आदि । ... से त आब तोरा अपनो पग-पगपर

अनुभव होइते हएतौक !"– वर्माजी शिक्षाक महत्त्व विस्तारसँ समझबैत अपन निष्कर्ष सुनोलखिन्ह,– " तैँ अपना बच्चासभकेँ जरुर पढ़बिहाँ !"

"जी, पढ़अएबै । अवश्ये पढ़अएबै !"– सिकन्दर मुड़ी डोलबैत वर्माजीकेँ आश्वस्त करैत कहलकन्हि, –"अपनेक बात कहियो कटलहुँ हँऽ ? ओहुना आब हम अपनो पढ़ाइक अर्थ बुझऽ लगलियैअऽ ! तैयो सर, ... कहिओ काल कऽ देह सिहरि जाइअ जे ....."

" जे से किछु नहि ! ... भगवान सभ किछु पार लगा देथुन्ह । जानकीजीपर भरोस राख । तोहर बाप जे कहियो अक्षर नहि चिन्हय सकल से तँ तोरा पढ़ा लेलकौक आ तोँऽऽ ... हिम्मत हारै छेँ ?" – वर्माजीकेँ लगलन्हि हुनकर शिष्य पढ़ाइक खर्चक चिन्तासँ डेरा रहल अछि । ओ हिम्मत बढ़बैत कहलखिन्ह, –"कनेक दुःख तँ काटहि पड़तौक । अपन सन्तानलेल सभ दुःख कटैत अछि । सन्तानक लालन-पालन, पढ़ाइ-लिखाइ आ बिआह-दानलेल ककरा दुःख नहि काटय पड़ैत छैक ?"

"जी, से नइ कहलीअऽ । ... हम कैला हिम्मत हारब ? कहुना पढ़ाइये लेबै !" – सिकन्दर पहिने त जोड़सँ मुड़ी हिलबैत वर्माजीकेँ आश्वस्त कएलक मुदा तकरबाद ओकर स्वर कनेक डेराएले सन रहैक, – "... डर होइअ जे कहुँ ननकिरबा ने हिम्मत हारि जाइक !"

" ओ किया हिम्मत हारतैक ? ... की कहय चाहैत छाँ तोँ ?"– वर्माजीक भौँह आश्चर्यसँ सिकुड़ि गेलन्हि ।

" कहलीअऽ ... सर, ननकिरबा सहय सकतै की नइ ? घुरि-घुरिकय मोन औंनाय लगैअ । हमरा अपने मोन पड़िते देह सिहरि जाइअ आ रोआँसभ काँट जकाँ ठाढ़ भऽ जाइअ ।"– सिकन्दर ठीके चिन्तित छल ।

"की भेलैयऽ ? ... कथी सहय नहि सकतैक ? ... की कोनो खास बात छैक ? ... फरिछा कऽ कह ने !" – वर्माजी भीतरसँ अपने डेरा गेल छलाह ।

"जी नहि, भेलैअ त किछु नहि । तैयो स्कूलक दिनक बातसभ मोन पड़ि जाइअ । ... हमरे जकाँ हमर ननकिरबोक नाम स्कूलमे लिखाबय काल सभ नाक-भौँह सिकोरतै, ओहिना बिखाइन हँस्सी हँसतै आ स्कूलमे केओ ओकर देहमे नइ भिड़तै । ओकरो कातेमे माल-जाल जकाँ असगरे बैठ पड़तै । ... कनी काल नहि, ... एक दिन दू दिन नहि ... कइअक बरख ओकरा मनुखेक बीचमे निदोखे घृणित बनि बेसुरते सजाय सहय पड़तै । ... मास्टरसाहेबसभ अलगेसँ ओकरा हाथमे कओपी पकड़ाकय सबक चेक करै जैथिन्ह आ छोटोछिन गल्तीपर ओकरापर दोसरसँ दून्ना छौंकी दगथिन्ह ।" – सिकन्दर अपन डरकेँ स्पष्ट करैत बाजल, – " ...बेजती आ अपमानक आगिसँ घोर सुखायल ठोर नेने चुपचाप ओहो कहुना दिन कटक रस्ता देखैत रहत । ... स्कूलमे छुट्टी होइते घरे भागत आ मतारीक कोँचामे मुहँ नुकाकय कानत । ... सर, ओकरा स्कूलमे पठाबक चर्चेसँ हमर घाओ जेना नोंचा जाइत होअ ? .... माथा घुमि जाइअ ।"

वर्माजी अकबका गेलाह । कनेक काल किछु नहि फुरयलन्हि । बादमे सिकन्दरकेँ संयत करैत कहलखिन्ह – "हम तोहर भावनाकेँ बुझि सकैत छी । समाज एकहिं प्रयासमे नहि बदलि जएतैक । समय लगतैक मुदा प्रयासमे निरन्तरता आवश्यक अछि । जेना-जेना समाज बदलतैक, एहन समस्यासभ अपने आप बिलाइत चलि जएतैक । ... तोँ अपन बेटाक चिन्ता जुनि कर । ओहो तोरे जकाँ अपनाकेँ सहिआरि लेत । आब ओतेक हएबो नहि करतैक ! तोरा जतेक तँ ओकरा निश्चय नहि भोगय पड़तैक । ... तोँ खाली अपन अनुभवसभ सुनासुना कऽ ओकरा तैयार करैत रह । ओकरा भीतरमे विश्वास जगबैत रह । भगवान सभ किछु सहक साहस सहेज देथिन्ह ।"

"जी !"– सिकन्दर मुड़ी डोलौलक आ नम्हर साँस खिचलक । कनेक काल दुनू चुप्पी साधि लेलन्हि । प्रायः गुरु-चेला दुनू एकदोसरक बातक गम्भीरताकेँ स्वीकारि नेने छलाह । चुप्पी कनेक कालधरि बनल रहितैक मुदा तखने वर्माजीक पत्नी चाय लऽ कऽ प्रवेश कएलखिन्ह । सिकन्दर सोझे हुनक पएरदिस झुकि गेल ।

" की समाचार .... ? बच्चासभ नीकसँ अछि नेऽ ? "– वर्माजीक पत्नी चाय दैत पुछलखिन्ह – "आइकाल्हि बड्ड व्यस्त छी की ? बहुत दिनपर अयलहुँ ?"–

"जी, अपनेसभक कृपासँ सभ ठीक छै ।"– सिकन्दर मुस्काइत बाजल,– "व्यस्त की रहबै हमसभ ? ... घरे-दुआरमे ओझराकय रहि जाइत छी ।"

"आओर सभ नीक अछि ने ऽ..." – कहैत ओ आङ्गनदिस घुमि गेलि रहथिन्ह आ गुरु-चेला चायक चुस्की लेबय लागल छलाह ।

कनेक कालक बाद सिकन्दर पुनः हिम्मत बटोरिकय बाजल –"सर, एकगोट निवेदन छलै ।"

"की कह नेऽ !"– वर्माजी अपन माथ उपर उठओलखिन्ह ।

"जी, ननकिरबाक बिआह छै परसु । ... कष्ट कऽ कऽ आयल जएतैक ।"– सिकन्दर लगभग तोतरायले रहय ।

"ननकिरबाक बिआह ?! ... एखन तऽ बच्चे छौक ?"– वर्माजी अपन हाथक चाय लगभग निच्चा पटकैत कहलखिन्ह ।

"जी, से त बच्चे छैहे । ... तैयो ओकर बिआह करही पड़तै । हमरसभमे बच्चेमे बिआह होइ छै । उन्टे लड़िकीये किनय पड़ै छै । ... उमेरगर लड़िकीक बड्ड दाम ... आ सेहो भेटब कठीन !"– सिकन्दर धड़फड़ाकय अपन स्पष्टीकरण देलक ।

" हम तऽ....." – वर्माजी किछु कहय चाहलखिन्ह मुदा सिकन्दर बीच्चेमे बाजि उठल, – "सर सभ किछु अलगे इन्तजाम कएने छिऐक । ... कुम्हार कुटीमे । ... हलुवाइ ठीक कएने छिऐक । सभ किछु उहए बनओतैक आ उहएसभ परसतैक । ... स्कूलक स्टाफसभकेँ बजोनाइयो जरुरी आ ओसभ हमरा ओतय भोजन करता नइ ! ..तैसऽ कुम्हार कुटीमे सभ वेवस्था करऽ पड़लै ।"

"स्कूलक स्टाफसभ तोरा ओहिठाम किया नहि भोजन करथुन्ह ? ... खाली साफ आ पवित्र होएबाक चाही । "– वर्माजीक आवाज शिथिल छल ।

"डोम जाति कतहुँ साफ आ पवित्र होएत ?"– सिकन्दरक स्वरमे आक्रोशक अंश रहैक, –"देखलिऐक नइ, जे डोम जातिक हम पहिल एस.एल.सी.* आ तैयो केओ हमरा मास्टर बनय देलक ! दरबन्दी रहितो मास्टर त की ... पिउनोमे हमरा बहालीलेल केओ तैयार नइ भेल जे हमरा हाथक पानि केना ... ! धन्य आहाँ, जे चौकीदारीक काज भेटल, नइ त एहि जातिमेक लोक फेर केओ पढ़क हिम्मत नइ करीत ! सभ बेमतलब बुझीत ।"

वर्माजी अवाक् आ विमूढ़ छलाह । सिकन्दर उठि गेल तथा हाथ जोड़ैत अनुनय कएलक –"सर, अपने अएबैक । जेनातेना । ... हम गोर लगै छी । समाज बदलतै । हमसभ बदलबै ... धीरे-धीरे । ... समाजेसंगे चलिकऽ । ..."

"ठीके त कहैत अछि सिकन्दर ! ... दबाइ, दबाइ जकाँ नेऽ देमक चाही । एकहिँबेर सम्पूर्ण खोराक बिख भऽ जाइत छैक !" – नहि जानि कखनसँ वर्माजीक पत्नी भीतरका देहरिपर ठाढ़ि सभ किछु सुनि रहलि छलखिन्ह । वर्माजी लाचार छलाह, किछु नहि फुरअयलन्हि आ ओ अपन माथ स्वीकृतिमे डोला देलखिन्ह ।



* मैट्रिक

आ ओ मारलि गेलि !

तखनेसँ खदकैत भातक माड़ सुखा गेलैक आ भात जड़य लगलैक । ओकर तीव्र गन्ध जखन चारुभर पसरि गेलैक तँ फुलियाक तन्द्रा टुटलैक । ओ पित्ते चुल्हिमे पानि फ्रोंकि देलकि – 'दुर्र ऽऽ... ! आब खएबे के करतैक ?! ... इहो भात त फेकएबे करतैक !' फुलिया मोनेमन पटपटाएल रहय । ठीके ... , आब किछु ओकरा कोनो खाएल जएतैक ? आब तँ एकहिटा बात हएतैक – सभक चलि गेलाक बाद ओ मोनसँ कानति आ ताधरि कानति जाधरि नोरक बासनसँ अन्तिम ठोप नहि टघरि जएतैक ।

ओकर गड़ तखनेसँ भारी छैक । आँखिसँ रहि-रहि कऽ टघरैत नोरकेँ ओ कहुना नुकबैति आबि रहलि अछि । कान्ह उचकाकए साड़ीसँ गालपर ससरैत नोरकेँ पोछैति फुलिया दोकानमे बैसलि सिपाहीसभकेँ अपनाकेँ भानसमे तल्लीन देखएबाक प्रयत्नमे लागलि अछि । मुदा आब ओकरामे आओर सामर्थ्य नहि रहि गेल छैक । अपन भोकासीकेँ रोकब मुश्किल भेल जाइत छैक । कखनो ठोह पड़ा जएतैक । एम्हर इसभ मस्तसँ पिअयमे लागल छैक । ... तुरत्ते शायदे जाएत । सभ दिन जकाँ रहि-रहि कए फुलियासँ ठिठोलियो करैत छैक । फुलिया दाँत निकालि हँसक अभिनय करैति अपनाकेँ धुआँसँ पिड़ित देखबक प्रयत्न कए रहलि अछि जे कहुना मुँहफ्रौंसासभ बुझैक नहि ।

ओ बारी जाएक बहन्ने उठि जाइति अछि आ बीच्चे बारीमे बैसि कए सिसकि-सिसकि कए कनेक काल कानि लैति अछि । समयक मारि ओकरा सभ किछु सिखा देने छैक । ओ जनैत अछि जे केओ आ खासकय ओकरे दोकानमे बैसकय पिअयबलासभ यदि ओकरा कनैति देखि लेतैक तँ ओकरोपर शंका करए लगतैक आ नहि जानि ओकरा कोन लिखलाहा भोगय पड़तैक । ... ओ फेर अपनाकेँ संयत करैति अछि आ कलपर आबि कुरुड़ कए हाथ-मुँह धोए अपन पीढ़ी पकड़ि लैति अछि जेना किछु भेले ने होइक आ आजुक घटनासँ ओकरा कोनो मतलबे ने होइक । ओ अपनाकेँ ने हर्ष ने विष्मादक सजीव अभिनय दिस लगा दैति अछि । एतेक दिनक अभिनय जे से ... कहुना काज चलैत अएलैक मुदा आजुक अभिनयपर ओकर जीवन/मरण निर्भर करैत छैक । ओना मृत्युसँ ओकरा ततेक डर नहि छैक, मुदा यातना आ क्रूरतामादेँ जे ओ सुनैति आएलि अछि तकर पीड़ाक कल्पनासँ ओ हलाल होइत छागर जकाँ सिहरि जाइत अछि । एखन आओर किछु नहि अभिनयेटा ओकरा एहि त्रासदीसँ बचा सकैत छैक । तेँ ओकरा अपन भावनाकेँ कहुना मसोड़य पड़तैक । ... ओ अपन छातीकेँ फुलाकय एकबेर नाम साँस लैति अछि आ दोकानमे पैसि जाइति अछि ।

' की भेलौअऽ फुलिया ? ... आँखि लालतेस छौक ?' – हवल्दार भूलोटन ठाकुर भ्रुमैत पुछलकैक ।

' किछो नहि !' – ओ हड़बड़ा जाइति अछि – 'धुआँ आ पिआउज हरान कएने अछि । ... तेहन जरना-काठी किना गेल जे ... । ' ओ आगाँ सफाई देबक कोशिश कएलकि ।

' हमरा तँ लागल मोन-तोन खराब छौक ! ... जे होउक, मुदा एखन गाल बड्ड नीमन लगैत छौक । ...आ आँखि ! ... एकदम लालतेस, रसाएल ... दारु पिअल जकाँ !! ' – हवल्दार जेना दागि देने होइक ।

फुलियाक एँड़ीसँ कनपट्टीधरि जेना फ्रनफ्रना गेल होइक । मोन भेलैक जे चुड़की पकड़ि कए दू थापर जमा दैकि मुदा ओ संयत रहलि, आ स्थिरसँ बाजलि – 'अहाँकेँ तँ सदिखन ... ... !'

हवल्दार भूलोटनक मोन खुशीसँ लहराए गेलैक । गालपर मुस्की पसरि गेलैक । काँस्टेबल बलराम सहनी हवल्दारकेँ प्रोत्साहित करैत कहलकैक – 'ठीके तँ कहैति अछि साहेब, सदिखन कोनो एना कएलकैअऽ ! ... टाइमपर ने करक चाही ।'

पित्ते फुलियाक देह जड़ि गेलैक । लगलैक जेना केओ गरमाएलमे खौलल पानि ढ़ाड़ि देने होइक । ... मुदा ओ करओ की ? एखन तँ सहहि पड़तैक । आई रातिमे कोनो बाट निकलतैक की ? कोनो ने कोनो उपाय तँ करही पड़तैक । बाँचब तँ इज्जतसँ ... नहि तँ मरबे नीक । ओ स्थिरसँ जबाब देलकैक – 'दुर्र, खाउ जल्दी ! ... मुँहो नइ दुखाइअऽ ? तीमन नीमन अछि कि ने ?'

बलरामकेँ जेना मौका भेटि गेलैक, हँसैत कहलकैक –' ऐंह, तीमन बड्ड नीमन छैक । जेहन फुलिया तेहन तीमन ! हमहूँसभ आदमी चिन्हिकए अबैत छी ने ? तोरहिं जकाँ तीमनो तेज छौक । '

' बेशी मिरचाई पड़ि गेलैक की ?' – ओ सरिआबक प्रयत्न कएलकि । तैयो ओकर भौंह अनजानमे सिकुड़िये गेलैक । ओकरा लगलैक, पुलिसबासभ कहूँ घुमाकए तँ बात नहि करैअऽ ?

' नइ, ठीक छैक । तीमन कनी तेजे नीक ।' – बलराम सहनी दाँत निपोड़ैत कहलकैक ।

मुदा फुलिया किछु नहि बाजलि । ओ कनेक ससरि कए दूर मोचियापर बैसि रहलि । पुलिसबासभ बडी कालधरि खाइत रहलैक । हाँ-हाँ हीं-हीं करैत रहलैक । बीच-बीचमे कनखिया कए तकितो रहलैक । ... ओकरसभक गप्प ओ आइ बुझि नहि सकलैकि । रहि-रहि कए मन व्याकुल भ' जाइक । बैचैनी कटने ने कटाइक । मोन होइक अहुँरा जाए आ खूब जोड़सँ कानए । ओ मनेमन गोसाईंकेँ गुहारलकि – ' हे भगवान ! ... केहन बिपत्ति !! ... पुलिसबासभ जएबो नहि करैत अछि !'

स्थिति आब ओकर सम्हारमे नहि छैक । ... कतहु बेहोश भ' क' ने खसि पड़ए । यदि एना भ' गेलैक तँ सभ भेद खुजि जएतैक । नहि जानि कोन-कोन यातना भोगए पड़तैक । ओ जोड़सँ दम खिचलकि आ अपनाकेँ संयमित करक प्रयत्न कएलकि । ... पुलिसबासभ बैसले रहलैक । कने-कने कालपर दारु मँगबैक आ पिबैत जाइक । कनखिया कए ताकक क्रम जारीये रहैक । ... फुलियाकेँ शंका होमए लगलैक । ओ सोचए लागलि – ' एतेक दारु तँ ई हवल्दार कहियो नहि पिबैत छल । एकरासभकेँ शंका तँ नहि भ' गेल छैक ?' ... फुलियाकेँ भेलैक जेना हाथ-पैर फुलि गेल होइक । मुदा, करो की ? दोसर कोनो उपायो तँ नहि छैक । भागत तँ मारलि जाएत । होइत-होइत कहुँ अहिना पकड़ि कए ल' गेलैक तँ क्रूर यातनामे पड़ि जाएत । नहि जानि की की भोगए पड़तैक ? ... फुलिया आँचरसँ अपन गाल पोछैति अछि । ओकरा आशाक किरण देखाइत छैक । ओकरा लगैत छैक एकरासभकेँ किछु मालूम नहि छैक । मालूम रहितैक तँ कखन ने पकड़ि कए ल' गेल रहितैक । ... ओ फेर स्थिर भ' जाइत अछि । कनेक आओर देखति । आ फुलिया औंघाएक अभिनय करए लगैत अछि ।

' फुलिया सबेरे औंघाए लगलेँ ?' – हवल्दार टोकि दैत छैक ।

'आब अबेर नइ भेलैक ?' – फुलिया दुनू हाथ माथक उपर ल' जाइत देह-हाथ झारक अभिनय करैति कहैति अछि । ... पुलिसबासभ उठि जाइत छैक । ओकरा लगैत छैक ठीके एकरासभकेँ किछु मालूम नहि छैक । कोनो शंको नहि छैक । बुझाइत छैक जेना हेराइत दम किछु पलटलैकअऽ ! ओ ठाढ भ' जाइत अछि । मनेमन हिसाब जोड़ए लगैति अछि ।

' कतेक भेलौक ?'– हवल्दार भूलोटन पुछैत छैक ।

' तीन सय बाबन । ' – फुलिया संयत होइत कहैति अछि । हवल्दार पनसहिया दैत छैक आ फुलियासँ फिर्ता लए आगाँ बढ़ि जाइत अछि । पाछाँ-पाछाँ दोसर पुलिसबासभ सेहो बढ़ि जाइत छैक । फुलिया दोकानक केबाड़सभ बन्द करैति अछि ।

केबाड़ बन्द होइते लगैत छैक जेना ओ पताकए खसि पड़ति । ओ बैसि जाइत अछि । आँखिसँ दहोबहो नोर टघरए लगैत छैक । ओ कोशिश करैति अछि जे कोनो आवाज नहि निकलैक । कनेको आवाज ओकरा बड़का संकटमे ढ़केल देतैक । ओ दुनू पएर पसारिकए टाटमे अङ्गोठि कए कानए लगैत अछि । पूरा खुलिकए स्थिर भ' गेल पसरल आँखिसँ नोरक दू धार ओकर गालपर टघरैत टप-टप खसए लगैत छैक ।

ओ सोचए लगैति अछि, ओकरापर ठीके बज्रपात भेल छैक मुदा ओहि बज्रपातक कारण के ? ओ स्वयं अथवा केओ आओर ? ओ ककरालेल कनैत अछि ? ओकरालेल अथवा स्वयं अपनालेल ? ओकरा लगैत छैक जेना ओ कोनो तेज बहावक नदीक मोइनमे फँसि गेलि होए आ पताइत-पताइत ओ मोनिमे आब समा जाएति । ओतए ओकरा बचाबएबला आ ओहिसँ उबारएबला केओ नहि छैक । शायद आब भगवानो नहि ! प्रकृतिक नियममे ओ ओझराए गेलि अछि । ... ओ अतीतमे ठेला जाइति अछि । शायद ओकरालेल काल पाछाँ घसकि गेल छैक, वर्त्तमानसँ अतीतमे ... ! फुलियाक अतीतक सम्पूर्ण परतसभ एक-एक क' खुजए लगैत छैक !!

पूर्णे आ ओकरि सम्बन्ध नेनपनेसँ छैक । पूर्णे नङ्टे डड़ाडोरि पहिरने ओकरासंगे गोली-गोली खेलैक । देहपर किछु नहि, डड़ाडोरिमे मलहाक जालक घुँघरु, बनेलक दाँत आ ललका मूँगा । फुलियोक देहपर कथु थोड़े रहैक । बस, ठेहुनसँ उपर जाँघतक ओकरि मायक फटलाहा साड़ीक टुकड़ा रहैत छलैक । डाँड़सँ उपर पूरा खालीये । हँ, गर्दनमे अवस्से करजन्नीक ललकामाला लटकैत रहैत छलैक । जखन ओ गोली फेकैति छलि घुच्चीमे तँ माला झुलि कए पाछाँ लटकि जाइत छलैक । घुच्चीमे गोली पिलतहिं यदि पूर्णे हारैत रहैत छल तँ खौंझाबए लगैत छलैक – 'फुलिया, माला पाछाँ चलि गेलौक ! ... छाती उदास भ' गेलौक ?' ओहो थोड़े छोड़ैत छलैकि – ' आ तों जखन फेकैत छाँ तखन जे तोहर डाँड़ा झुलैत छौक, ढ़उसा बेङ्गक मुँह जकाँ ... ढ़प-ढ़प !' ... तकरबाद दुनूमे झगड़ा भ' जाइक आ खेल भँड़ा जाइक । दुनू अपन गोली समेटैत कनैत बिदा भ' जाय ।

फुलिया आ पूर्णेक घनिष्टता बढ़िते गेलैक । भिनसरसँ साँझधरि दुनू संगहिं रहए । झगड़ो होइक मुदा कहियो पूर्णे इशारासँ हँसाहँसाकए मना लैक तँ कहियो ई अपने मुँह फुलाकए पुरनी पोखरिक भीड़परक पीपरतर बैसि जाय । पूर्णेकँ आबहिं पडैक । पूर्णे महीष चराबए लागल तँ ओ बकरी । संगक क्रम कहियो नहि छुटलैक ।

पूर्णे स्कूल जाए लागल तँ कने ओकरा बुझाएल रहैक । ओ अपन बाउकँ कए दिन कहलकैक जे ओहो स्कूल जाएति मुदा कोनो सुनबाई नहि भेलैक । ... बाप भरि दिन दारुमे मस्त रहैक । लोक कहैक चौधरी थारु दारुमे बर्बाद भ' गेल । ओकर बाप-दादाक दरबज्जापर चरि-चरिटा महीष रहैत छलैक । कहाँदोन, कार्कीसभ पहाड़सँ मधेशमे गाय चराबए आएल रहैक आ एतहिं बैसि गेलैक । एकर बाप कार्कीसभक संग मगरसभक दारु पिअए लागल । अपनो पिअए आ कार्कीसभकँ पिअएबो करए । बस, बर्बादी शुरु भ' गेलैक । कर्जा बढ़लैक आ खेत बिकाए लगलैक । धूर्त कार्कीसभ खेत किनएलेल बिलाई जकाँ कान थपने रहैत छलैक । ... धीरे-धीरे सभ किछु बिकाइत चलि गेलैक । कार्कीसभ धनीक भ' गेल आ चौधरी थारु हरबाह । आब ओकरेसभमे हरबाही करैत अछि !

फुलियाकँ पूरा याद छैक । ओ तखन दोसर जुक्ति निकालने रहए । मायकँ कहने रहैक जे ओ आब घास काटति । मालजालक देखभाल करत । माय बड्ड खुश भेल रहैकि । बाउकँ कहने रहैक जे बेटी आब नम्हर भ' गेलि अछि आ घरक विचार करए

लागलि अछि । जखन पूर्णेक स्कूल जाएक समय होइक फुलिया सभ दिन छिट्टी ल' कए निकलि जाय । बतिआइत जाए आ बेरियामे संगहिं घुरए । स्कूलक गप्प-सप्प ओकरा नीक लगैक । पूर्णे सभ खेसरा सुनबैक । ओकरा लगैक, कहुना ओहो स्कूलमे पढ़ैति । ओ मायसँ कए बेर कहने रहैक जे स्कूलमे कहुना नाम लिखा दौक । ओ घासो काटि कए सभ दिन अनबे करति । मुदा माय नहि मानलकैक । कहाँदोन बेटी पढ़ि कए करतैकि की ? अन्तमे ओ थाकिहेरि गेलि । आई ओ पढ़लि रहैति तँ की एना होइतैक ? ओ फफकए लागलि । लगलैक जेना करेज उनटि जएतैक ।

पूर्णेसँ फुलियाक संगत छुटलैक नहि । धरमपुरसँ जखन ओकरा माँगए अएलैक तँ फुलियाक बिआहक चर्च बढ़लैक । ओ पूर्णेसँ सलाह कएने रहए । पूर्णे कहलैक जे ओ मुक्ति अभियानमे लागल   अछि । समय अनुकूल होइते ओकरा ल' क' जएतैक आ धूमधामसँ बिआह करतैक । ओ डटलि रहए । पूर्णेक स्वर फुलियालेल गोसाईंक आदेश जकाँ होइक । ओकरा बड्ड नीक लगैक । जाहि अधिकारसँ पूर्णे फुलियाकेँ निर्देशित करैक तकर गर्मी ओकरा गद्‌गदा दैक । ... ओ डटलि रहलि । मायकेँ साफ-साफ कहि देलकैकि । पहिने तँ माय बुझओलकैकि जे ओ मगर अछि आ फुलिया थारु । कहियो मेल नहि हएतैक । माइनजन ओकरासभकेँ बाड़ि देतैक से अलगे । मुदा फुलिया पूर्णेक बातपर अड़लि रहलि । ... एक दिन ओकरा बाउ बड्ड पीटलकैक । जखन पूर्णेकेँ मालूम भेलैक तँ ओ तमतमा गेल रहए आ बाउकेँ मारए जाइत रहए । फुलिया कहुना कानिखिचि कए मनओने रहैकि । तखन तय भेलैक जे ओ घरसँ भागति । ढल्केमे चायक दोकान खोलिकए बैसति मुदा एकदम गुपचुप, जाधरि समय अनुकूल नहि भ' जएतैक । ... ओकरा लगलैक जे ओ तहिया गल्ती कएने रहए । मारि खाइयो कए घरेमे रहैति तँ एना नहि होइतैक । ओ फेर फफकए लगैति अछि ।

कहाँदोन पूर्णे जनयुद्धमे लागल रहए । महीना दू महीनापर ओकरा लग अबैक । मौका भेटैक तँ दू बात बतिआइक । फुलिया कए बेर कहैकि जे ओ कोन चीजमे लागि गेल अछि ? एहिसँ की हएतैक ? शुरु-शुरुमे तँ पूर्णे बड्ड जोशमे रहए मुदा बादमे ओकरो लागि गेल रहैक जे एहिसँ मुक्ति नहि भेटतैक । मुक्तिक लेल समाजेमे लड़ए पड़तैक । लोककेँ सम्झाबए पड़तैक । समय तँ जरुर लगतैक मुदा एक्केटा यएह उपाय छैक । मारकाटसँ किछु हएतैक नहि । फुलिया कए बेर कहलकैक जे ओ घरेमे घुरि जाएति । आब एतए ओकरा रहल नहि जाइत छैक । मुदा, पूर्णे कहैक जे जल्दीये ओहो निकलत आ ओकरा ल' कए कतहु चलि जाएत । ओ इहो कहैक जे ओ ओ फँसि गेल अछि । सोझे निकलनाइ सम्भव नहि छैक । फुलिया कनेक आओर प्रतिक्षा करौक । फुलिया ओकर संगक लोभ संवरण नहि कए सकलि । प्रतिक्षा करिते रहलि । काश, ओ घर घुरि गेल रहैति । बरु असगरे जीवन बिता दित । एहि बीच ओकर बाउ मरि गेल रहैक । मालूम भेलैक, मुदा मन मसोसिकए रहि गेल । घर नहि गेल । कहाँदोन ओकरि माय गोबर बिछिकए जीवन चला रहल छैकि । भाय अलगे कमाइखाइ छैक । ओ जाइत तँ मायोकेँ उसाँस होइतैक । कहुना रहैति ! ... फुलिया अपन माथ ठेहुनपर राखि सिसकए लगैति अछि ।

आई बेरियामे ओकरा मालूम भेलैक जे पूर्णे एतए आएल रहय । कहाँदोन बनिनियाँक कुसियारक खेतमे नुकाएल रहैक । पुलिसकेँ खबरि भेट गेल रहैक आ चारु भरसँ घेरि कए गोली बरखा देने रहैक । पूर्णे मारल गेल रहय । फुलियाकेँ लगैत छैक जेना ओ ओकरेसँ भेटए आएल रहैक । शायद एहि बेर ओ साँचे ओकरा ल' क' भागए चाहैत रहए । दूर बहुत दूर जतए कोनो भय आ त्रास नहि होइक । खाली ओकर संग आ रंगबिरंगक रंग होइक । मुदा ओ असगरे अपने चलि गेल । कहाँदोन ओकर देह लाल खूनसँ रंगा गेल रहैक । ... फुलिया अपन झोंटा नोचए लगैत अछि । आँखिसँ नोरक धार जोड-जोड़सँ टघरए लगैत छैक ।

ओकर फाटक खटाक् आवाज करैत खुलि जाइत छैक । हवल्दार भूलोटन प्रवेश करैत अछि । सकपकाएलि फुलिया ठकमका कए ठाढ़ भ' जाइति अछि । ओकरा लगैत छैक भेद खुलि गेल छैक । आब ओकरा कोई नहि बचाबए सकतैक । अवर्णनीय यातनाक दौरसँ गुजरए पड़तैक । एहिसँ मुक्तिक एकहिटा उपाय छैक जे ओ पूर्णे लग चलि जाय । मुदा कोना ? आब एकरो बेर नहि छैक । ओ परिछाइत छागर जकाँ काँपि जाइत अछि । ... भूलोटन आगाँ बढ़ैत छैक । मुँहपर हाथ धए ओकरा चुप रहक इशारा करैति फुसफुसाइत छैक – ' फुलिया, ... ई तोहर साड़ी छौक । ... बिआहक लाल जोड़ा ! ... पूर्णेक जेबीमे रहैक । हम सभसँ पहिने लाश लग पहुँचल रहिऐक । ई निकालि लेलिऐक । ... दोसर जनौक नहि जनौक, हम तँ सभ किछु जनै छिऔक । ... तौं छापामार तँ नहि मुदा पूर्णेक प्रेमिका अवस्से छह ! ... तौं एखने भागि जाह । ... नहि तँ काल्हि भोरे तोरा पकड़ि लेतौक । ... मुदा एहि सभलेल तोरा एक बेर ... खाली एक बेर ... हमरा भोगए देबए पडतौक ! ' भूलोटनक आँखिमे जेना पिशाच चढ़ल रहैक । ओ साड़ी फैलाए देलकैक । फुलियाक मन भेलैक ओ साड़ी छिनि लेअए मुदा से सम्भव नहि रहैक । ... भूलोटन मुस्काइत आगाँ बढ़ैत गेलैक । फुलिया टाटदिस घसकैति गेलि । ओकरो आँखिपर जेना देवी चढ़ि गेल होइक । मुँह सेहो बिकराल बनैत चलि गेलैक । ओ सोचि लेलकि आई मुक्ति लैये क' रहत । ओ पूर्णेलग अपन चुनल स्थानपर चलि जाएति । ... ओकर नजरि स्टूलपरक नवका छुरीपर गेलैक । ओ छुरी उठा लेलकि आ सोझे भूलोटनक पेटमे भोंकि देलकि । एक, दू, तीन, चारि ... । भूलोटन घबराए गेल । ओ साड़ी पुलिया देहपर फेक देलक । आ अपन दहिना हाथसँ पेस्तौल निकालि ताबड़तोड़ गोली दागि देलक । एक, दू, तीन, चारि ... । दुनू हहाकए खसल । ... भूलोटन मुँहे भरे आ फुलिया साड़ीमे ओझराइत !

परात भेने सभ अखबार घटनाक विविरणसँ भरल रहैक । किछुमे लिखल रहैक जे छापामार वीराङ्गना फुलिया शहादत प्राप्त कइलीह, अन्तिम धरि लड़ैत-लड़ैत । तँ दोसरसभमे लिखल रहैक महिला छापामारसँ मुठभेड़मे हवल्दार भूलोटन शहीद भेल । ... छापामार फुलिया चौधरी मारलि गेलि ।



एकदन्त हाथी आ नौलखा हार

कछमछी छुटिते नहि छैक । जखनसँ मकवानपुरक सेनगढ़ी दरबार देखिकए फिरलि अछि ओकर मस्तिष्कपर इन्द्रकुमारी छाएलि छैकि । १४ बर्षक इन्द्रकुमारी ... बाल राजकुमारी । लगैत छैक जेना ओ सभकिछु प्रत्यक्ष देखि रहलि हुअय । सोन-चानीक महीन कढ़ाईसँ युक्त चमकैत नीच्चातक सोहराइत घघरा, नितम्बतक लटकल कारी केशमे कलात्मक गुहल चोटीसँ सज्जित माथपर हीरा जड़ित मुकुट, डरकशसँ नापल गोल गिरहसनक डाँड़, बाँहिपर चमकैत बाजुबन्द, हीरा-मोती आ रंगबिरंगी रत्न जड़ित हारसँ सुशोभित कनेक्के उठल वक्ष, कानमे झुमैत झुमका आ कर्णफूल आदि-आदि । राजकुमारीक जाज्वल्य सौन्दर्यक काल्पनिक प्रतिमूर्त्ति ओकर मानसपटलपर निरन्तर बिम्बित भऽ रहल छैक । ओहि राजकुमारीक दैवी सौन्दर्यक चर्च कोना गोरखा पहुँचल हएतैक ? सभकिछुमे राजकीय सत्ता तथा शस्त्र-शक्तिक बढ़ोत्तरीक योग-ह्रास देखि निर्णय लेबएबला धूर्त्त गोरखा युवराज पृथ्वीनारायण शाह आ ओकर सशस्त्र मण्डली एहि मादेँ कोना अपन प्रतिक्रिया देखओने होएतैक ? कोना पहिने राजाक खोपीसभा* आ फेर तकरबाद भारदारीसभामे♣ मकवानपुरक राजा हेमकर्ण सेनक सुता राजकुमारी इन्द्रकुमारीसँ पृथ्वीनारायणक विवाहक प्रस्तावक योजना बनल हएतैक ? – आदि-इत्यादि प्रकरणसभक दृश्यसभ ओकरा आगाँ जेना सजीव भए एक-एक कए आबए लागल छैक !

ओ फेर करोट बदलैति अछि । ओही कोठरीमे लगले मायसंगहिं दोसर चौकीपर सुतलि आ कनेक्के काल पहिनेतक फुसुर-फुसुर बतिआइत बड़की भौजी ओकर कछमछी पकड़ि लैति छथिन्ह, – "मणिदाइ, निन्न नहि होइअ ? किछु होइअ की ?"

"नहि, किछु नहि !" – भाउजक प्रश्नसँ ओ अकचका जाइति अछि ।

" तँ ओना किआ अहुरिया कटैति छी ?"– बड़की भौजी जेना कछमछी ठेकानि नेने रहथिन्ह ।

"नहि, किछु नहि होइअ । खाली वहए मकवानपुरगढ़ीक दृश्य आगाँ चलि अबैत अछि । ... हेमकर्ण, इन्द्रकुमारी आ दिगबन्धन सेनक खिस्सा मोन पड़ि जाइत अछि !" – ओ अपनाप्रति भाउजक चिन्ताकेँ हटाबक कोशिश करैति अछि । मुदा बड़की भौजी अपन स्वाभाविक व्युत्पन्नता छोड़यबाली नहि छथिन्ह । चट् दागि दैति छथिन्ह, –" आ की केओ ओतय मोनमे उतरि गेल अछि ? ... माय, देखथुन्ह , मणिदाइक मोनमे केओ चढ़ि गेल छन्हि ! ... बेटासभकेँ शिघ्र वर खोजय कहथुन्ह । देखैं छथिन्ह, कोना करोट पर करोट फेरै छथिन्ह !" माय बुझाइअ औंघा गेलि छथिन्ह । ननदि-भाउजक गप्पमे ओ कोनो उत्तर नहि देलखिन्ह ।

मणिकेँ भौजीक एखुनका परिहास नीक नहि लगलैक । चुप्पे आंखि मुनि लेलकि । सोचय लागलि, –"खाली बिआहेटा कोनो जीवन छैक ? बिआह तँ मुदा प्रारम्भ अछि । बिआहक बादक सहयात्रा ने थिक जीवन ! की नारी सभदिन अनचिन्हारे सहयात्रीक प्रतीक्षा करैति रहति ? आ कतेको इन्द्रकुमारी अहिना जीवनक यात्राक पहिलुके पड़ाओपर अपन सहयात्रीक प्रतिक्षा करैति त्रासदीक खाढ़िमे ढ़केलि देलि जाएति । ... आ ओकर सहयात्रीसभ ओकरा अनभुआर जंगलमे एसगर ठाढ़कए भगैत रहत । संग नहि देबकलेल अनर्गल आ अनसोहाँत असम्भव शर्तसभ आगाँ बढबैत रहत ? बेटीसभ अहिना चीज-वस्तु जकाँ निर्जीव नारी बनि तील-तील कऽ जड़ैति रहति ?" आक्रोश जेना मणिकेँ भीतरसँ आओर छटपटा दैछ – ओ एकबेर फेरो करोट फेरैति अछि । बड़की भौजी प्रायः सुति रहलि छथिन्ह । राति बेशी चढ़ि गेल छैक । ओहो अपनाकेँ शून्य करक यत्न करैति अछि । निन्नहेतु मनसँ बल करैति आँखि मुनि लैति अछि ।

♦ ♦ ♦ ♦

---

* राजा, रानी, युवराजक व्यक्तिगत कोठरीकेँ पहिने नेपाली दरबारी भाषामे खोपी कहल जाइक ।

♣ दरबारक सल्लाहकारसभकेँ भारदार कहल जाइक ।

राजकुमारी इन्द्रकुमारीक कक्ष । पलंगपर बैसलि राजकुमारी । उदास मुदा आंखि आक्रोशित लालतेस ! मुहँ लड़कओने ४/५ सखीसभ चारुकात घेरने । ... ककरो पदचापक ध्वनि अबैछ । सभ साकांक्ष भऽ जाइछ । ... राजकुमार दिगबन्धन सेन प्रवेश करैत अछि । फिकिरसँ गलल मोनपर उदासी स्पष्ट छैक । ... सखीसभ स्थिरसँ बहरा जाइछ ।

दिगबन्धन – बहिन ! उदास नहि होअअ ! निर्णय भऽ गेलैक । ... हमरासभ अपन बहिनकहेतु सभ किछु न्योछावर कऽ देब । बहिनक भविष्य आ एहि क्षेत्रक मर्यादाक आगाँ एकदन्त हाथी आ नौलखा हार मूल्यहीन आ तुच्छ अछि ।

इन्द्रकुमारी – (*दौड़िकए अपन भायक छातीमे माथ सटाए कनैति*) नहि, भाई नहि । आब सेन राज्य आओर मानमर्दित नहि हएत । ... बहुत भऽ गेलैक । एकदन्त हाथी आ नौलखा हार हमरा-आहाँक नहि एहि राज्यक सम्पत्ति छैक । जनताक सम्पत्ति एकगोट राजाक बेटीकेँ दहेजमे नहि दिआ सकैत अछि । ओ सभक धरोहर छैक । एकदन्त हाथी केओ कमाएल नहि अछि , एहि क्षेत्र विशेषक हेतु प्रकृतिक विशेष आ अनुपम उपहार थिकैक । ... एहन गल्ती जुनि करब ।

दिगबन्धन – अपन जमायकेँ संतुष्ट नहि करय सकब एहि महाभारतक आगोसक सम्पूर्ण मध्यक्षेत्रक मर्यादाक विपरित हएत । ... इतिहासमे हमरासभकेँ कोसल जाएत बहिन ! ... जे सेन राजा अपन बेटीक द्विरागमन दहेजक आभावमे नहि कऽ सकल । जीवनधरि बेटी विवाहोपरान्त नैहरेमे रहि गेल । ... नहि बहिन नहि ! ... आब समय नहि छैक तैयारी मे लागलजाय ।

इन्द्रकुमारी – आ ई नहि जे सेन राजा अपन अबुझ जमायक अनर्गल माँगक आगाँ झुकि गेल ! ... जे सम्पूर्ण राज्यक सम्पत्ति सेनवंश एकगोट बुनल षड़यन्त्रक कारणेँ गोरखाक राजाकेँ विवश भऽ चढ़ाऽ देलकैक । ... हम नहि जाएब । हमहुँ अपन सम्पूर्ण जीवन न्योछावर कऽ देब ! ... दुनियाँकेँ देखा देबैक जे एहि क्षेत्रक नारी चीज नहि सृष्टिक बीज अछि । मानक माथ आ त्यागक शिर्ष अछि ।

दिगबन्धन – आह, बहिन ! एहन जीद्द जुनि करु । ... भऽ सकैछ , एहिसँ एहि राज्यक सुरक्षापर सेहो असर पड़य ।

इन्द्रकुमारी – तँ करु युद्ध ! .... राज्यक अस्मिताक लेल युद्ध करब, आवश्यक पड़लापर शहीद हएब आहाँक धर्म थिक । राज्यक सुरक्षापर कोनो असर पड़ैत अछि तँ उठाउ तरुवारि ! ... हम नारी छी । नारीक अस्मिताहेतु , अपन पवित्रताहेतु अपनाकेँ न्योछावर करब हमर धर्म थिक । ... नारी सभ किछुसँ दबि जाएत मुदा ओकर पवित्रता ओकर स्वाभिमान आ नारीत्त्व ओकर प्राणोसँ बढ़िकए थिकैक । ... हमरा उपहारक वस्तु नहि बनाउ, भाई !

दिगबन्धन कक्षक चारुकात आहत बाघ जकाँ धुमय लगैत अछि । ... धम्म दऽ बहिनक पलंगपर बैस जाइत अछि आ ओकर माथ झुकि जाइत छैक ।

इन्द्रकुमारी – आहाँ तँ अँड़ल रहिऐक भाई ! ... कोना झुकि गेलिऐक ? ... कर्त्तव्यपर बहिनक ममताक छार पड़ि गेल अछि । सेन राज्यक राजकुमारकेँ राज्यक गौरव रक्षा करब पहिल काज छैक । बहिनक ममता नहि । ... हम तहिये कहने रही । गोरखाक रितिरिवाज, राज्य प्राप्तिकहेतु किछु करक चलन, ठगी संस्कारक बारेमे सोचि लिअ । लिगलिगक चौरीमे चोरी कऽ बनल राजाक प्रस्तावमे जरुर किछु षड़यन्त्र हएत । मुदा हम तँ १४हे बर्षमे आहाँसभक बोझ बनि गेल रही । शायद कोनो त्रुटि भेल रहय तैं एहन खानदानमे हमरा फेकक निर्णय कएल गेल ।

दिगबन्धन – नहि , बहिन ! अनजानमे भेल गल्तीक कारणेँ हृदयमे आओरो प्रहार नहि करु । अपन गल्तीक आगिसँ ई अपने दग्ध आ तप्त अछि । आहाँ हमरासभक गौरव छी । हमसभ तँ उत्तरक सभसँ शक्तिशाली राज्यक रानीक रुपमे आहाँकेँ देखय चाहलहुँ ।

इन्द्रकुमारी – शक्तिये प्राप्त कएलाक कारणेँ केओ नीक नहि भऽ जाइछ, भाई । गुम्बजपर बैसल कौआ सभसँ नम्हर नहि भऽ जाइत अछि ।

दिगबन्धन – इन्द्रकुमारी , हमर सोनसन बहिन ! *(स्वरमे किंकर्त्तव्य विमूढ़ता स्पष्ट अछि ।)*

इन्द्रकुमारी – एकदन्त हाथी आ नौलखा हार दैये देलापर आहाँक बहिन खुश रहत ? निर्बाध सासुर भोगत तकर कोनो निश्चित ठेकान छैक ? काल्हि कतहुँ आओर किछु नहि माँगि लेअय ? सबसँ पहिने ओसभ विवाह होइते चतुर्थीयोसँ पहिने बरिआतीये संग बिदागरीक माँग कएने रहए । हमरासभक रितिरिवाजपर अपन चलन लादक कोशिश कएने रहए । एकरा संस्कृति आ परम्परापरक आक्रमण बुझू । आब दहेज मँगैत अछि । अड़ाकए । काल्हि फेरो कोनो नया बहन्ना खोजि लेत । ... भाई, हमरा तँ बुझाइत अछि ओ एहि औपचारिक वैवाहिक सम्बन्धक लाभ उठाए राज्यपर चढ़ाई कऽ देत । . एखन झुकक नहि तनक समय थिकैक, भावनामे नहि कर्त्तव्यमे बहक बेर छैक ई । ... बहिनसँ पहिने मातृभूमिक रक्षाक चिन्ता करु !

दिगबन्धन उठि जाइत अछि । ...ओकर गाल लाल भऽ गेल छैक । बान्हल मुठि उपर उठि जाइत छैक ।

दिगबन्धन – एकदम ठीक कहलहुँ बहिन ! आहाँक साहससँ हम गौरवान्वित आ प्रेरित छी । ... बाबूसँ एखने निवेदन करैत छिअन्हि । (तिब्र डेगेँ बहरा जाइत अछि ।)

इन्द्रकुमारीक आँखि क्रोध आ आक्रोशसँ लाल भऽ गेल छैक । बुझाइत छैक जेना बाहर निकलयलेल आरत होइक । ओ अपन कसल मुठिसँ घघरा उठाकए दाँत कटकटअबैति झारि दैति अछि ।

मणि धड़फड़ाकए उठलि । मुठि ओकरो कसल रहैक । बड़की भौजी तखने प्रवेश करैति रहथिन्ह । अपना हिसाबेँ अर्थ लगाइये लेलखिन्ह, – “मणिदाई, सपनाइत छलहुँ ? सुतलमे कसैत देह देखिते हमरा बुझा गेल छल । ... देह दुःखाइत हएत !” – फेर हँसैत कहलखिन्ह, – “बादक इन्तजाम तँ भायसभ करताह । छोटकी चाय बना नेने अछि । नेने अबैत छी ।” मणि किछु नहि बाजलि । बड़की भौजी बाहर निकलि गेलि रहथिन्ह । ओ पलंगसँ चुपचाप उतरि ब्रसमे पेष्ट लगाबए लागलि ।

